مولود حضرت امام مہدی موعود علیہ السلام

सीरत इमाम महेदी मौऊद ख़लीफ़ तुल्लाह अले०

मौलूद इमाम महेदी मौऊद अले०

लेखक
हज़रत बन्दगी मियाँ शाह अब्दुर् रहमान रज़ी०
इब्न हज़रत बन्दगी मियाँ शाह निज़ाम रज़ी०

हिन्दी रुपांत्रकर्ता
श्री शेख़ चाँद साजिद

इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइब्रेरी
अंजुमने महेदवियह बिलडिंग,
चंचलगुडा, हैदराबाद - ५०० ०२४.

प्रकाशन - 12

पुस्तक का नाम : **मौलूद इमाम महेदी मौऊद अले०**

लेखक : हज़रत बन्दगी मियाँ शाह अब्दुर् रहमान रज़ी०
इब्न हज़रत बन्दगी मियाँ शाह निज़ाम रज़ी०

अनुवादक : श्री शेख़ चाँद साजिद

संस्करण : 14 जमादीउल अव्वल 1435 हिज़्री / 16 मर्च 2014

Type setting : Rheel Graphics - 27661061

प्रकाशक : **इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइब्रेरी**
अंजुमने महेदवियह बिलडिंग,
चंचलगुडा, हैदराबाद - ५०० ०२४.
Cell : 9642441862

हदिया : **Rs. 40/-**

For more information and literature in English, Hindi and Urdu
Please visit : **www.khalifatullahmehdi.info**

प्रस्तावना

तमाम प्रशंसा अल्लाह तआला के लिये है जिसने हमारे मार्ग दर्शन के लिये अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० और ख़लीफ़तुल्लाह हज़रत सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० को भेजा और हमें उन दोनों की तस्दीक़ की नेमत प्रदान की।

अल्लाह के अंतिम रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० ने अपने बाद अल्लाह के एक ऐसे ख़लीफ़ा के आने की शुभसूचना दी जो उनकी ही संतान में से होगा, जिसका नाम भी मुंहम्मद होग, जिसका स्वभाव भी मुहम्मद सल्ला० के जैसा होगा, जो मुहम्मद सल्ला० का ताबे ताम (परिपूर्ण अनुचर) होगा, लोगौं को अल्लाह की ओर बुलाएगा, शुद्ध इसलाम धर्म का प्रचार करेगा, उम्मत को हलाकत से बचाएगा, और उनका लक़ब महेदी होगा, जिनका इनकार करना और झुटलाना कुफ़्र है। क़ुरआने मजीद में महेदी अले० और उनकी क़ौम का ज़िकर सांकेतिक रूप में किया गया है। इसके अलावा ३०० से अधिक अहादीस में भी महेदी का ज़िकर मिलता है, लेकिन महेदी की अलामतों और आगमन-काल के विषय में अनेकता पाई जाती है। इस लिये पूर्वज उलमा ने सर्वसम्मति से यह नतीजा निकाला कि महेदी फ़ातिमा रज़ी० की संतान से होंगे और अल्लाह तआला उन्हें जब चाहेगा पैदा करेगा। हज़रत सय्यद मुहम्मद जोनपूरी ने महेदी मौऊद होने का दाअवा किया और ताहयात उस पर क़ायम रहे।

यह पुस्तक हज़रत सय्यद मुहम्मद जोनपूरी महेदी मौऊद अले० की सीरत (जीननि) है जिसको हज़रत शाह निज़ाम रज़ी० के फ़र्ज़न्द हज़रत शाह अब्दुर रहमान रज़ी० ने लिखा है जिसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जारहा है। यह इदारे का बारहवाँ प्रकाशन है।

हिन्दी पढ़ने वालौं की सहूलत के लिये जनाब शेख़ चाँद साजिद साहब ने इस किताब का हिन्दी अनुवाद किया है जो इस संस्था की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है। अल्लाह तआला से दुआ है कि सत्यता की खोज करने वालों के लिये इसको मार्ग दर्शक बनाए और अनुवादक और सहयोग देने वालों को पुण्य अता फ़र्माए। *आमीन*

फ़क़ीर सैयद हुसेन मीराँ
प्रबंधक, इदारतुल - इल्म
महेदवियह इस्लामिक लाइब्रेरी

14 जमादीउल अव्वल 1435 हिज्री / 16 मर्च 2014

अनुवादक की ओर से

हज़रत सय्यद मुहम्मद जोनपूरी महेदी मौऊद अले० की सीरत पर जो क़दीम किताबें मिलती हैं वह यह हैं

बन्दगी मियाँ शाह अब्दुर रहमान रज़ी० की ''मौलूद हज़रत इमाम महेदी मौऊद अले०'' मिया मन्सूर रवाँ बुर्हानपूरी रहे० की ''जन्नतुल विलायत'' बन्दगी मियाँ सय्यद यूसुफ़ रहे० की ''मत्लऊल विलायत'' मियाँ शाह बुरहानुद्दीन रहे० की ''शवाहिदुल विलायत'' और बन्दगी मियाँ सय्यद महमूद रहे० की ''मआरिजुल विलायत''। यह सब किताबें फ़ारसी भाषा मे हैं जिनका उर्दू अनुवाद इदारा सलफ़ुस सालिहीन जमीअते महेदविया हैदराबाद ने शाये किया था। इन किताबों के अलावा उर्दू मे सियरे मसऊद, अहसनुस् सियर, अल महेदी अल मौऊद, सवानेह महेदी मौऊद और हयाते पाक वग़ैरह लिखी गयी। मैं ने हिन्दी भाषा में ''पवित्र जीवनी'' लिखी यी जो ३० साल पहले शाये हुवी थी।

ज़ेरे नज़र किताब ''मौलूद'' के लेखक बन्दगी मियाँ शाह अब्दुर रहमान रज़ी० हज़रत शाह निज़ाम रज़ी० के पुत्र है जिनका जन्म फ़राह मुबारक में हुवा। हज़र महेदी अले० ९१० हिज्री में फ़राह में आकर ठहरे थे। जब आपके जन्म की सुचना इमाम अले० को दी गयी तो आप ख़ुद शाह निज़ाम रज़ी० के घर आकर बच्चे के कान में अज़ाँ और इक़ामत अदा फ़र्माइ और बच्चे का नाम अब्दुर रहमान रखा। आपकी वालिदा माजिदा रज़ी० को फ़क्रो फ़ाक़ा के कारण दूध नही था इस लिये हज़रत शाह निज़ाम रज़ी० बच्चे को लेजाकर इमाम अले० के क़दमौं में डाल देते थे और बच्चा इमाम अले० के पैर का अंगुठा चूस कर पेट भरता था इस तरह शाह अब्दुर रहमान दूध के बजाय नूर पीते रहे। शाह अब्दुर रहमान रज़ी० ने इमाम अले० का यह मौलूद सहाबा रज़ी० के ज़माने मे लिखा था और कहा जाता है कि सब से पहला मौलूद यही है।

हिन्दी भाषा पढ़ने वालौं के लिये मैंने इस ''मौलूद'' को हिन्दी में रूपान्तरित किया है और इसमें ज़िकर किये गये बाज़ मक़ामात और शख़सियतौं पर मुख़तसर हाशिया भी लिखा है। तवारीख़ (दिनांक) लिखने में मौलवी सय्यद इफ़तेख़ार एजाज़ साहब की लिखित ''तौक़ीत'' से मदद् ली गई है। पढ़ने वालों से अनुरोध है कि मेरी सिहत और सलामती ख़ास तौर पर ईमान की सलामती के लिये दुआ करें और अल्लाह तआला से दुआ है कि मेरी इस कोशिश को क़ुबूल फ़र्माये। *आमीन*

शेख़ चाँद साजिद

सीरते हज़रत इमाम महेदी मौऊद ख़लीफ़ तुल्लाह अले०

हर तारीफ़ अल्लाह ही को ज़ेबा है जो तमाम जहाँ का पर्वरदिगार है जिसने हमको उसकी (सिराते मुस्तक़ीम की) हिदायत की और अगर हमको अल्लाह बुज़ुर्ग हिदायत न करता तो हम हिदायत पाने वाले न होते और शुरु करता हूँ सज़ावारे हम्द अल्लाह के नाम से कि उसी की बादशाहत है आसमानों और ज़मीन में और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। दुरुद नाज़िल हो अल्लाह के हबीब मुहम्मद सल्ला० पर और आप की सब आल और असहाब और औलाद और अहफ़ाद और अज़वाज पर फिर दुरुद व सलाम नाज़िल हो ताबे हुदा मुहम्मद महेदी अले० पर जो साहबे ज़मान् और वारिसे बनी रहमान इल्मुल किताब और इल्मे ईमान के आलिम, हक़ीक़त, शरीअत और ख़ुदाए तआला की ख़ुशनोदी को बयान करने वाले हुवे और आपकी आल, असहाब, औलाद, अहफ़ाद और अज़वाज पर और क़ियामत तक उन लोगों पर जो आपकी पूरी पूरी पैरवी करने वाले हैं यानि सिद्दीक़ीन शुहदा और सालिहीन और यह लोग (जन्नत में पैग़म्बरों के) अच्छे रफ़ीक़ हैं। यह अल्लाह का फ़ज़ल है बेशक अल्लाह जान्ने वाला और हिकमत वाला है। *यह है जो हम तुमको पढ़कर सुनाते हैं (ऐ मुहम्मद सल्ला०) आयतें और हिकमत भरा ज़िक्र (आले इम्रान ५८)।*

आग़ाज़े किताब : हज़रत महेदी अले० की वालिदा साहबे इफ़्फ़त (सती) इबादत गुज़ार, नेक, पाकीज़ा फ़ित्रत, परहेज़गार ख़ालिसन मुख़सिलन् अल्लाह की इबादत करने वाली अपने वक़्त की राबिआ साजिदा रोज़े रखने वाली, टेढ़े रास्ते से अलग होकर चलने वाली, साहबे करामत,

साहबे इल्म बड़े दर्जे वाली जिनका इस्मे गिरामी बीबी आमिना हमेशा रातों में इबादत करने वाली, दिन को रोज़े रखने वाली और रात भर अल्लाह के ज़िक्र में रहने वाली थीं।

एक रोज़ पिछली रात में मामला देखा कि चाँद और एक रिवायत से आफ़ताब आसमान से नीचे आकर बीबी के कुरते के गिरेबान (कंठ) में दाख़िल हुआ और आस्तीन से निकल गया। जिस क़दर बुलंद होता था तजल्ली रौशन और ज़्यादा होती थी। उसी वक़्त बेहोश और जज़्बए हक़ में मुस्तग़रक़ (तन्मय) होगयीं। यह ख़बर बीबी के भाइ को पहुंची जिनका नाम मलिक क़ियामुल् मुल्क था जो बुहत परहेज़गार मर्द साहबे इल्म व अमल शरआ के पाबंद और पारसा थे आकर कहा कि कोइ रंज नहीं है बल्कि यह जज़्बए हक़ है। थोड़ी देर के बाद जब होश में आयीं तो भाइ मलिक ने पूछा क्या हाल था जो जज़्बा और बेहोशी में थीं तो बीबी ने अपने हाल का पूरा वाक़ेआ बयान किया तो मलिक ने सुनकर कहा मालूम होता है इन्शा अल्लाह तआला आपके शिकम में ख़ातिमुल औलिया को हक़ तआला पैदा करेगा और फिर क़दमबोस होकर कहा ऐ मेरी बहन तू ने हमको और हमारी सात कुरसी बल्कि उस से ज़्यादा को सर्फ़राज़ (सर ऊंचा) किया लेकिन शर्त यह है कि अपने पराये पर ज़हिर न करें। हासिले कलाम यह कि चार महीने के बाद बीबी कभी कभी अपने शिकम से आवाज़ सुन्ती थीं कि महेदी मौऊद हक़ है और हमल (गर्भ) की मुद्दते मुएयना पर पीर के दिन हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० की हिज्रत के आठ सौ सैंतालीस (८४७) साल बाद शहर जोनपूर में कि जिसका तअल्लुक़ हिन्दुस्तान से है ख़ातिमुल वली अले० ने इस जगत मे जन्म लिया जैसा कि ख़ातिमुन नबी अले० ने पीर (सोमवर) के दिन जन्म लिया, चुनांचे नबी सल्ला० ने फ़र्माया कि मैं पीर के दिन पैदा हुआ मैं एक

दिन भूका रहने और एक दिन पेट भर खाने को दोस्त रखता हूँ और मैं दाअवा करूंगा पीर के दिन और मैं पीर ही को मरूंगा।

हज़रत मीराँ सैयद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० के जन्म के दिन बुतख़ानौं में तमाम देव और बुत ज़मीन पर औंधे गिर पड़े और फ़रिश्तए ग़ैबी ने निदा की (पुकारा) *हक़ आया और बातिल मिट गया बेशक बातिल मिटने वाला ही था) (१७:८१)*। नबी सल्ला० ने फ़र्माया है ''महेदी मुझ से है बेशक वह मेरे क़दम बक़दम चलेगा और ख़ता नहीं करेगा''। जब अफ़ज़ले ज़माँ मुर्शिदे दौराँ मियाँ शेख़ दानियाल रहे० साकिन शहर जोनपूर के कान में ''जाअल हक़'' की आवाज़ पहुंची और आप को मालूम हुवा कि बुतख़ानौं में बुत गिरपड़े तो शेख़ के रोशन दिल में यह बात आइ कि आज कोइ मर्दे अज़ीज़ इस शहर में पैदा हुवा है। पस शेख़ साहब इसी खोज में थे बाज़ लोगौं से आप को ख़बर मिली कि अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्लो करम से मीराँ सैयद अब्दुल्लाह को लड़का अता किया है तो उसके जवाब में शेख़ ने फ़र्माया कि अच्छा है दिन महेदी मौऊद अले० की विलादत का दिन और महेदी मौऊद अले० की विलादत (जन्म) अल्लाह के गुज़िश्ता ख़लीफ़ौं की गवाह है। शेख़ साहब ने मीराँ सैयद अब्दुल्लाह को तलब करके फ़र्माया कि उस बच्चे का हाल और उसकी माहियत (स्थिति) ज़ाहिर की जिये तो आप (मियाँ अब्दुल्लाह) ने फ़र्माया कि वह बच्चा जब माँ के पेट से बाहर हुआ तो ख़ून और कसाफ़त (अपवित्रता) से पाक और साफ़ था और हज़रत महेदी अले० की विलादत की रात में तमाम घरौं के चराग़ बुझ गये लोग तजल्ली[१] में दौड़ रहे थे और सुब्ह तक चराग़ रोशन नहीं हुवे क्योंकि विलायते

(१) हज़रत महेदी अले० के जन्म के समय सारे जोनपूर में एक तजल्ली नुमा रोशनी पैदा हुवी जिस से दरो दीवार शजर व हजर सब रोशन होगयो। लोग उस तजल्ली को देखकर हैरत से इधर उधर दौड़ रहे थे और चराग़ तो बुझ गये थे जो सुब्ह तक रोशन न होसके यह हज़रत महेदी अले० की विलादत का मोजिज़ा था।

मुहम्मदिया के नूर से रोशन किया हुवा तमाम औलिया और मोमिनीन का चराग़ पैदा हुवा। चुनांचे अल्लाह तआला फ़र्माता है *अल्लाह नूर है आसमानौं और ज़मीन का (अन् नूर-३५)* और उसके नूर की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़चा है उसमें चराग़ है। अल्लाह तआला फ़र्माता है *''अल्लाह ख़ास करलेता है अपनी रहमत से जिसको चाहता है'' (अल बक़रा-१०५)* यानि नबूवत और विलायत से और वह दोनों (ख़ातिमे नबूवत और ख़ातिमे विलायत) हर ज़माँ और मकाँ में तमाम अक़वाल (कथन), अफ़आल (कर्म) और अहवाल (दशा) में बराबर हैं।

हज़रत बन्दगी मियाँ शाह दिलावर रज़ी० से नक़ल है कि हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया बन्दा माँ के पेट से बाहर होते ही मुझको फ़र्माने ख़ुदा हुवा कि *वही अव्वल वही आख़र वही ज़ाहिर वही बातिन (हदीद ३)* और यह भी फ़र्माया कि उसी वक़्त बन्दे को ख़ुद हक़ तआला ने चारों किताबौं की तालीम दी। अगर बन्दा तौरेत पढ़ता तो लोग मुतहैयर (हैरान) होकर कहते कि तुझको कैसे मालूम हुवा और समझते कि फिर मूसा अले० का ज़ुहूर हुवा मगर बन्दे ने हज़म किया। अगर बन्दा इन्जील पढ़ता तो लोग कहते कि मसीह इब्ने मर्थम का दुबारा ज़ुहूर हुवा है इसी तरह अगर बन्दा ज़बूर पढ़ता तो कहते कि दाऊद अले० है। अगर बन्दा कलामुल्लाह पढ़ता तो कहते कि यह मर्दे अज़ीज़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० है कि दुबारा ज़ुहूर फ़र्माया है और लोग शक व शुबा में पड़जाते और आम व ख़ास नबूवत का इक़रार करने लगते लेकिन बन्दे ने अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से हज़म किया इस लिये कि हक़ तआला ने बन्दे को मुहम्मद सल्ला० की विलायत का बोझ उठाने के लिये पैदा किया है। नीज़ नक़ल है हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है ऐ सय्यद मुहम्मद हम ने ख़ास तेरी ज़ात को अपने हबीब की

विलायत का बार उठाने के लिये पैदा किया है इसी लिये शरीअत के जुम्ला आदाब बिल्कुलिया तुझ से पुरे अदा करते हैं, यह हमारा फ़ज़्ल व करम है। नक़ल है हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया है कि ख़ुदाए तआला ने जो कुछ मुहम्मद सल्ला० को दिया मुझ को दिया और जो कुछ मुहम्मद सल्ला० को दिया न मुहम्मद सल्ला० के पहले किसी को दिया था और न बन्दे के बाद किसी को दिया जायेगा।

हासिले कलाम सय्यद अब्दुल्लाह ने शेख़ साहब से कहा कि वह ज़ाते मुबारक जब पैदा हुवी तो दोनों हाथ अपनी शर्मगाह पर रखे हुवे थे जब जिस्म शरीफ़ पर कपड़े पहनाये गये तो शर्मगाह से अपने हाथ उठाये, जब कभी तने मुबारक (शरीर) से कपड़े निकालते हैं तो पहले की तरह अपने हाथ शर्मगाह पर रखलेते हैं। उस ज़ाते फ़ाइज़ुल बरकात का रोना बच्चौं के रोने की तरह नहीं बल्कि उस साहबे अक़्ल तिफ़्ल (बच्चे) की आवाज़ तमाम सामईन (सुन्ने वालौं) को जाज़िब (ममोभावित) बनादेती है। शेख़ुल इस्लाम ने पूछा कि उस साहबे फ़ज़्ल तिफ़्ल का नाम क्या रखे हो तो फ़र्माया कि आजकी रात मैं ने मआमला देखा कि हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० ने तश्रीफ़ लाकर फ़र्माया कि इस बच्चे का नाम मैं ने अपना नाम रखा है, पस आँहज़रत सल्ला० की उस बशारत की बिना पर इस बच्चे का नाम मीराँ सय्यद मुहम्मद रखा हूँ, चुनांचे रिसालत पनाह अले० ने फ़र्माया है कि ''महेदी मुझ से है मेरे बाद होगा उसका नाम मेरा नाम उसके बाप का नाम मेरे बाप का नाम और उसकी माँ का नाम मेरी माँ का ना होगा''। शेख़ दानियाल रहे० ने पूछा कि उस बच्चे का हुलया (शक्लो सूरत) और रंग कैसा है तो सय्यद अब्दुल्लाह ने फ़र्माया कि वह गन्दुमगूं (गेहूं का रंग) रोशन पेशानी बुलंद नाक और जुड़ी हुवी भों रखता है, चुनांचे नबी सल्ला० ने फ़र्माया कि

''महेदी मुझ से है रोशन पेशानी, ऊंची नाक और भौं वाला होगा''। शेख़ रहे० ने सय्यद अब्दुल्लाह को मुबारकबाद देकर रुख़सत फ़र्माया, लेकिन शीर ख़ारगी (दूध पीने) के ज़माने में उस ज़ात के वुजूद से इत्ने मोजिज़े ज़ाहिर हुवे कि आरिफ़ीन ने यक़ीन से कहा कि इस बच्चे में बड़ा राज़ है बल्कि बुहत से लोग उस राज़ के ज़ाहिर होने के मुन्तज़िर होगये कि बेशक यह बच्चा ख़ज़ानए ग़ैब ला रैब तक़सीम करेगा और यह बाराने रहमत तमाम मख़लूक़ की बुराइयौं को शिफ़ाए अबदी से बदल देगा, हदीस शरीफ़ ''ज़मीन को अदल व इन्साफ़ से भर देगा जिस तरह वह ज़ुल्म व जोर से भरी होगी'' का ज़ुहूर उसकी दावत से होगा बल्कि मुल्के अरब और अजम के लिये जैसा कि अम्बिया अले० का तरीक़ा था क़ुलूब (दिलौं) को खोलदेगा।

अब हज़रत महेदी अले० के हुलयए मुबारक की कैफ़ियत सुनो कि हज़रत महेदी अले० की सूरत और सीरत ख़ातिमुन् नबी सल्ला० की सूरत और सीरत के जैसी थी चुनांचे हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि अगर बन्दा और हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अले० और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० एक ज़माने में होते तो कोई शख़्स हमारे दरमियान तमीज़ नहीं कर सकता। अब हुलयए मुबारक को वाज़ेह तौर पर सुनो - चमकदार चहरा, धूंधर वाले मुतवस्सत बाल, सर बड़ा, कुशादा पेशानी, चाँद सा रोशन चहरा, बनी इसराईल की आँखौं जैसी आँखें यानि बड़ी और बुहत आबदार (चमकदार), पुत्लियाँ काली, आँखौं की सफ़ेदी बुहत रोशन किसी क़दर सुर्ख़ी मायल, पैवस्ता अबरू क़ुशादा ख़ूबी के साथ पल्कें, लांबी धनी दाढ़ी, सुर्ख़ चहरा, रोशन गाल, ऊंची नाक, मुतवस्सित (मध्यवर्ती) कान, सरे मुबारक निहायत मौज़ूँ (उचित) बाल ना लम्बे ना कोताह, गर्दन मियाना (मध्यम), बाज़ू मुबारक लम्बे लम्बे, कंधे

कुशादा, पंजा निहायत मज़्बूत, उंगलियाँ लम्बी लम्बी, सीधे रुख़सार मुबारक पर काली तिल, शाना कुशादा सीधे शाने पर मुहरे विलायत, पुष्त मुबारक मुतवस्सित, सीना मुबारक कुशादा, सुरीन गाह मुतवस्सित, पिडंली मुबारक निहायत मौज़ूँ, क़दम मुबारक फ़राख़ (कुशादा), उस्तुख़ान मुबारक नर्म, आज़ाए मुबारक पर पसीने की ख़ुशबू गुलाब की मानिदं, लुआबे दहन मुबारक मिश्क और अंबर की तरह, आज़ाए मुबारक मुअत्तर (सुगंधित) ऐसे जैसा कि किसी ने ख़ुशबू का इस्तेमाल किया हो, रोशन बश्रः (जिल्द), पेशानी मुबारक ताबाँ (नूरानी), चहरए मुबारक देखने वालौं की बलाओं को दूर करने वाला, आप की तल्अते मुबारक का मुशाहदा (मुख दर्शन) बाइसे राहते सीना, आपके मन्ज़रे मुबारक का मुतालआ बाइसे फ़र्हते दिल (हर्दिक आनंद का कारण) लेकिन बावजूद इन ख़ूबियौं के कामिल अज़मत (श्रेष्ठता) के साथ पूरा वक़ार, शीरीन् सुख़न् (मधुर कथन), नर्म आवाज़, ज़बाने मुबारक में फ़साहत ऐसी कि सुन्ने वाला जिस क़दर भी सुने दिल न भरे, चहरे पर नमक और ख़ूबसूरती, तलाफ़त (कोमलता) के साथ मुन्कसिरुल मिज़ाज (स्वभाव में नम्रता), बुहत रोने वाले कम हंसने वाले, सरापा कामिल लताफ़त लेकिन हैबत और दब्दबे (रोब दाब) के साथ, कलामे पाक में हिकमत (बोध) भरी हुवी जिसमें बुहत ज़्यादा मालूमात का ख़ज़ाना और हमेशा बुहत बुर्दबार (सहनशील), आपकी मजलिसे मुबारक दिलरुबा (मनमोहन) आपकी सुहबते मुबारक दिलकुशा (आनंद दाता), आपका मज़्हब मिन जानिब अल्लाह ईमान बख़शने वाला, अकसर मुस्कुराते, मुरव्वत (शील) हद से ज़्यादा, कामिल बहादुरी सख़ावत का पहलू ली हुवी, सूरत और क़ामत मोतदिल और नर्म लेकिन हैबत और करम के साथ जिसमें वाफ़िर (अत्यधिक) बुज़ुर्गी और बुहत आदाब सादिक़ुल अक़वाल (सच्चे), पयम्बर अफ़आल, आप का हाल क़ुरआन शरीफ़ के मुवाफ़िक़ लेकिन

मोजिज़ा यह कि तमाम खड़े और बैठे हुए ऊंचौं से ऊंचे नज़र आते, आप का शाना सब से ऊंचा मालूम होता, कम सोते और कम गुफ़्तगू फ़र्माते, कम मेल जोल रखते, आप से मिलने वाले के गुनाह धुलजाते, क़ुरआन शरीफ़ का बयान कसरत से फ़र्माते, मर्दानगी के माअदिन (खान) जवाँ मर्दी का ख़ज़ाना थे। अगर कोइ गुनाह करता तो उसको माफ़ करदेते, लोगौं की ऐबपोशी फ़र्माते, आप जहाँ तश्रीफ़ लेजाते सआदत आपके क़दमौं पर लोटती रहती, आप को ग़ुस्सा बुहत देर में आता और फिर बुहत जल्द ख़ुशनोद होजाते। माअरूज़ा (प्रार्थन) कान लगाकर सुनते और जो बात हक़ है वही फ़र्माते, दीने ख़ुदा और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्ला० की हिमायत फ़र्माते और तमाम रुसूम, आदात और बदअतौं को मिटाते बरख़िलाफ़ बाज़ औलिया के कि उन्हों ने बिदअते हसना (अच्छी) और सैइया (बुरी) मे तफ़रीक़ की बल्कि हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कोइ हसना अल्लाह तआल ने अपने महबूब से पोशीदा नहीं रखा वह कौनसा हसना है जिसको रसूले ख़ुदा सल्ला० ने ना किया। हर तालिबाने ख़ुदा के हक़ में मुश्तरी मुख़ालिफ़ाने दीन के हक़ में मिर्रीख़, आपकी ज़ाते मुबारक जवाँमर्दी के बाग़ का गुलदस्ता गुलज़ारे नबूवत के फूलौं का ग़ुंचा आपका नुत्क़ (बोली) कलामे रब्बानी आपका हुक्म हुक्मे सुब्हानी, आपका दिल असरारे क़ुरआनी का ख़ज़ाना, आपका जिस्मे मुबारक अमानते रहमानी के बोझ का उठाने वाला, आपकी गुफ़्तगू दर्दमन्दाने मुहब्बत के लिये बाइसे सिहत, आपके अलफ़ाज़ ग़मगीनाने जुदाइ के लिये बाइसे उनसत, आपकी बेसत तमाम ख़लाइक़ पर और आपकी दाअवत तर्के अलाइक़ पर, आपकी इताअत जिन और इन्सान के लिये फ़र्ज़, आपका बयान मुन्किरौं और मुतीऔं के लिये मोहकम, आपका वुजूदे मुबारक रौशन, आपका ख़िताबे मुबारक महेदी मौऊद हमसर व हमरुर्तबए मुहम्मद महमूद सल्ला० क्योंकि आप आँहज़रत

सल्ला० के तोबे ताम हैं और आपकी बेसत ख़ास और आम पर है। आपकी बात में शीरीनी (मिठास), आपकी आवाज़ में नरमी, ग़रीबों के मूनिस (दोस्त), यतीमों के ग़मख़्वार (इमदर्द), फ़क़ीरों को इज़्ज़त देने वाले, अहमक़ों से मुक़ाबला नहीं करने वाले, बीमारों की इयादत करने वाले, आपका सीना अल्लाह का ख़ज़ाना, आपका दिल अल्लाह का घर, रूहे मुबारक अल्लाह का राज़, आपका रंग अल्लाह का रंग, आपके मूए मुबारक (बाल) अल्लाह के फ़क़ीरों की कमंद, आपकी बू नसीमे सहेरी, आपका चहरा ऐन हुल्यए दिलरुबा, आपका क़द मुबारक ग़ैब के चमनों का सरवु बुलंद, आपकी पेशानी आफ़ताब से ज़ियादा रोशन् आपका महमिल बेशक *तबारकल्लाहु अहसनुल खालिक़ीन (२३:१४)* (अल्लाह बड़ी बर्कत वाला जो सब से बेहतर बनाने वाला है), आपकी दाअवत अहकमुल हाकिमीन (सब से बड़ा हाकिम), आपकी तबीअत अर्हमुर राहिमीन (सब मेहरबानों से ज़ियादा मेहरबान), सुब्ह आपके चहरे के नूर से ख़न्दाँ (प्रसन्न), मुश्को अम्बर आपकी बूए मुबारक से फ़ैज़ लेने वाले, दुनिया के बादशाह आपकी गली के गदा (फ़क़ीर), पूरब और पश्चिम आपके एक तारे मू से बंधे हुवे, बातिन के तमाम ताजदार सदाक़त के साथ आपकी तरफ़ आते हैं।

फ़सौफ़ याती अल्लाहु बिक़ौमिन (अलमाइदा-५४) (क़रीब में लायेगा अल्लाह एक क़ौम को) आपके गुरोह की तारीफ़, *अफ़मन् कान अला बैइनतिम् मिर रब्बिही (हूद-१७)* (पस जो शख़्स अपने रब की तरफ़ से बैइना पर हो) - आपके गुलदस्ते का एक ख़ुश नुमा फूल, *क़ुल हाज़िही सबीली (यूसुफ़-१०८)* (कहदो ऐ मुहम्मद यह मेरी राह है बुलाता हूँ मख़लूक को ख़ुदा की तरफ़ बसीरत पर मैं और मेरा क़ायम मुक़ाम) आप से वाबस्ता है, *हस्बुकल्लाहु व मनित्तबअक (अल अन्फ़ाल-६४)* (ऐ

मुहम्मद काफ़ी है तेरे लिये ख़ुदा और उसके लिये जो तेरा ताबे ताम है) आपके लिये बशारत है और ऊलुल अल्बाब आपके गुरोह की तरफ़ इशारा है। तमाम नुक़बा और शुरफ़ा आपके ख़िर्मन (खलयान) के ख़ोशाचीं हैं। क़ुतुब और ग़ौस आपके मोअतमदीन हैं, अब्दाल और औताद सब आपके मोअतक़दीन हैं और तमाम औलिया अल्लाह आपकी विलायत से फ़ैज़ के ख़ाहाँ (इच्छुक) हैं जो मुहम्मद सल्ला० की तमाम विलायत है। फ़र्माने रसूल सल्ला० ''मैं अल्लाह के नूर से हूँ'' उसका क़िवाम है। आपकी दाअवत तमाम मख़लूक़ पर ज़िक्रे दवाम की है और आपकी सख़ावत हमेशा तमाम म्खलूक़ पर है और आपकी सवीयत फ़क़ीरों में ख़ास व आम है। ख़ातिमुल अम्बिया सल्ला० की पैरवी आप ही में पूरी पूरी है, महेदी मौऊद अले० आपका नाम है और आपके मुन्किर के लिये नाक घिसनी (ज़िल्लत) है। ऐ अल्लाह मुझे इस जमाअते महेदविया में जिला और इसी जमाअत में मार और क़ियामत के दिन इसी जमाअत में मेरा इशर कर कलिमए तय्यबा और तस्दीक़ की हुर्मत से।

हासिले कलाम जब हज़रत इमाम अले० के बात करने का ज़माना आया तो पहली बात जो आपकी ज़बाने मुबारक पर आइ यही थी कि महेदी मौऊद आया कभी कभी यही फ़र्माते। एक रोज़ शेख़ दानियाल रहे० ने मीराँ सय्यद अब्दुल्लाह से पूछा कि मीराँ सय्यद मुहम्मद ख़ुशहाल हैं तो कहा हाँ, फिर पूछा कि मीराँ सय्यद मुहम्मद की चाल चलन कैसी है तो सय्यदुस् सादात ने फ़र्माया कि मीराँ सय्यद मुहम्मद के अक़वाल और अफ़आल मुस्तफ़ा सल्ला० की शरीअत के मुवाफ़िक़ नज़र आते हैं। इस बच्चे की दाअवत इस बात पर है कि उसका हाल ज़बान पर नहीं आसकता और इस ज़ात में अजीबो ग़रीब सिफ़तें दिखाइ देती हैं कि उसकी पुष्ते मुबारक पर कभी मुहर के मानिंद नज़र आता

है और हम इस बालक का पेशाब और पाख़ाना बिल्कुल नहीं पाते अगरचे कि देखने का क़स्द (इच्छा) बुहत कुछ करते हैं लेकिन नहीं देखते हैं। पस शेख़ दानियाल रहे० के दिल में आया कि यह ज़माना महेदी के ज़ुहूर (प्रकटन) का है यक़ीनन् यह बच्चा महेदी मौऊद है, पस सय्यद अब्दुल्लाह को बारकल्लाह और मर्हबा फ़र्मा कर रुख़सत किया।

शहर जोनपूर में शेख़ साहब की ख़ानक़ाह में मद्रसा (पाठशाला) था और हज़रत महेदी अले० के बड़े भाइ मीराँ सय्यद अहमद भी तहसीले इल्म के लिये शेख़ के हुज़ूर में जाते थे। उन से एक रोज़ शेख़ साहब ने फ़र्माया कि तुम अपने भाइ को जिनका नामे मुबारक मीराँ सय्यद मुहम्मद है अपने साथ लाओ, पस उन्हों ने हज़रत अले० को अपने साथ लिया और शेख़ की तरफ़ रवाना हुवे, जब क़रीब पहुंचे तो शाह दानियाल की नज़र शहिंशाहे गेती (जगत) पनाह पर पड़ते ही वह अपने सज्जादा (गद्दी) से उठकर चंद क़दम इस्तिक़बाल (स्वागत) करके बुहत ताज़ीमो तकरीम (सम्मान) के साथ हज़रत को अपने सज्जादा पर बिठाये और ख़ुद सज्जादा के नीचे बैठकर आँहज़रत अले० की बुहत तवाज़ो (आवभगत) फ़र्माइ। जब हज़रत महेदी अले० ने रुख़सत की तरफ़ तवज्जह फ़र्माइ तो शेख़ ने बहज़ार तवाज़ो और अख़लाक़ चंद क़दम ज़मीन पर बरहना (नंगे) पाँव जाकर रुख़सत दी और शेख़ इस क़दर ख़ुश हुवे गोया कि ज़ाते अनवर (ख़ुदा) के दीदार को पहुंचे।

जब हज़रत महेदी अले० के लिये मद्रसे में बैठने का वक़्त आगया और आपकी उम्रे मुबारक (आयु) चार साल चार महीने और चार दिन की हुवी तो मीराँ सय्यद अब्दुल्लाह ने ज़ियाफ़त का एहतिमाम करके मियाँ शाह दानियाल रहे० को कहला भेजा कि आज मीराँ सय्यद मुहम्मद की तस्मिया ख़्वानी है लिहाज़ा आप आकर अपनी ज़बाने मुबारक से

बिस्मिल्लाह पढ़ायें। शेख़ साहब ने उसी वक़्त सय्यद अब्दुल्लाह के घर आकर हज़रत महेदी अले० को बड़े तख़्त पर बिठाया और ख़ुद तख़्त के नीचे खड़े होगये, इसके अलावा अकसर लोग यानि उलमा, फ़ुक़हा, सुलहा, अत्क़िया, उरफ़ा, वुज़रा, असाकर (सैनिक) तख़्त के अत्राफ़ खड़े होगये। उसी वक़्त हज़रत ख़िज़र अले० भी तश्रीफ़ लाये लेकिन उस जमाअत में किसी ने ख़िज़र अले० को नहीं पहचाना मगर हज़रत महेदी अले० ने खड़े होकर ख़िज़र अले० को ताज़ीम दी। तमाम ख़ास व आम को बुहत तअज्जुब हुवा कि कमसिन महबूब ने किस को ताज़ीम दी, उस वक़्त शाह दानियाल ने मुराक़बा से सर उठा कर देखा कि तमाम आम लोगौं की जमाअत में ख़िज़र अले० खड़े हुवे हैं उसके बाद (नज़्दीक आने के लिये) हज़रत ख़ाजा ख़िज़र अले० से आजिज़ी से इल्तेमास किया। ख़ाजा ख़िज़र अले० और शाह दानियाल रहे० दोनों हज़रत महेदी अले० को तख़्त पर बिठाये और ख़ुद तख़्त के नीचे बैठे और ख़ाजा इल्यास, हज़रत ईसा अले० और हज़रत इदरीस अले० भी अल्लाह के हुक्म से हाज़िर होगये थे। जब बिस्मिल्लाह पढ़ाने का वक़्त आया तो शाह दनियाल ने ख़ाजा ख़िज़र अले० से अर्ज़ किया कि आप अपनी ज़बाने मुबारक से हज़रत को बिस्मिल्लाह पढ़ायें तो ख़ाज़ा ख़िज़र अले० ने जवाब दिया कि आप बिस्मिल्लाह पढ़ाइये क्योंकि अल्लाह तआला ने मुझको ख़ास इस काम के लिये भेजा है कि आज मेरा हबीब बिस्मिल्लाह पढ़ता है तू जा और आमीन कह लिहाज़ा शाह दानियाल ने बिस्मिल्लाह पढ़ाइ और हज़रत ख़िज़र अले० ने बुलंद आवाज़ से आमीन कहा।

उसके बाद हज़रत महेदी अले० को शाह दानियाल रहे० के पास जो आलिम बिल्लाह, उस्तादे शरीअत और पीरे तरीक़त थे मद्रसे में बिठाये। जिस वक़्त कि हज़रत महेदी अले० तहसीले इल्मे ज़ाहिरी के

लिये मद्रसे में आते शाह दानियाल उन्हें बुहत सम्मान के साथ अपने पास बिठाते और दूसरौं को भी हज़रत की ताज़ीम की हिदायत फ़र्माते। हज़रत के बड़े भाइ सय्यद अहमद कुछ रश्क करने लगे कि कभी मेरी ताज़ीम ऐसी नहीं करते यहाँ तक कि एक रोज़ ख़ाजा ख़िज़र अले० शाह दानियाल रहे० की मुलाक़ात के लिये आये, ख़िज़र अले० के जाने के बाद शाह साहब ने इम्तेहान के लिये सय्यद अहमद से पूछा कि यह कौन साहब थे, जवाब दिया कि मैं नहीं जानता, उसके बाद हज़रत महेदी अले० से पूछा तो हज़रत ने फ़र्माया कि ख़ाजा ख़िज़र थे। शाह दानियाल रहे० ने सय्यद अहमद को तसल्ली देकर फ़र्माया कि तुम्हारा भाइ मर्दे अज़ीम है और अल्लाह की जानिब से जो कुछ शर्फ़ (प्रतिष्ठा) रखता है उस से तुम आगाह (सूचित) नहीं हो इन्शाअल्लाहु तआला उस से आगाह हो जावगे। उस रोज़ सय्यद अहमद पर हज़रत का शर्फ़ ज़ाहिर हुवा और रोज़ बरोज़ तवाज़ो अदब और ख़िदमत ज़्यादा करने लगे।

जब शाह दानियाल रहे० क़ुरआन शरीफ़ के एक रुकू की तालीम देते तो हज़रत महेदी अले० तालीम से पहले ख़ुद एक जुज़्व (भाग) पढ़ देते यहाँ तक कि सात साल की उम्र में तमाम क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ फ़र्मालिया। उसके बाद शाह साहब किसी किताब के एक जुज़्व की तालीम देते तो हज़रत महेदी अले० तमाम किताब के सवालो जवाब उसकी मुराद और माहीयत के साथ वाज़ेह फ़र्मादेते यहाँ तक कि आप की उम्र शरीफ़ बारा साल की हुवी। जब कभी हज़रत महेदी अले० के सामने किसी मुश्किल या किसी नुकते के हल (समाधान) की ज़रुरत होती तो मद्रसे के तमाम उलमा अपने हल नहोने वाले नुकतौं को हज़रत से हल करते। नक़ल है कि दो आलिम मुसलसल छे महीने इल्मी नुक्तौं को हल करने में गिरफ़तार थे लेकिन मुश्किल मसअले हल नहोसके और न किसी आलिम ने हल किया। एक रोज़ हज़रत महेदी अले० ने

उन से पूछा कि तुम किस लिये मुतफ़क्किर (चिंतित) हो तो उन दोनों आलिमौं ने कहा कि मीराँजी बुहत अरसे से हम बुहत चाहते हैं और जुस्तजू करते हैं लेकिन हमारे मुश्किलात किसी आलिम से हल नहीं होते। उन्हों ने अपने मुश्किल नुकतौं को हज़रत महेदी अले० के हुक्म से पढ़ा उसी वक़्त वह मुश्किल मसअले हल होगये और वह अपनी मुराद को पहुंचे, बल्कि शेख़ दानियाल रहे० भी अपने मुशिकलात को आँहज़रत से हल करते थे। इस बिना पर तमाम उलमा ने बिलइत्तिफ़ाक़ (सर्वसम्मती से) हज़रत महेदी अले० को ''असदुल उलमा'' कहा। हासिल यह कि जिस दिन हज़रत महेदी अले० को मद्रसा में बिठाये उस दिन से ख़िज़र अले० हमेशा जुमेरात के दिन बिला इफ़रातो तफ़रीत मद्रसे में आते और इम्तिहान के तौर पर चंद सवालात करते जब शाह दानियाल रहे० जवाब देने से आजिज़ होते उस वक़्त ख़िज़र अले० हज़रत महेदी अले० से अर्ज़ करते और आप ख़िज़र अले० के तमाम सवालात को एक जवाब में हल करदेते थे।

जब हज़रत महेदी अले० की उम्र शरीफ़ बारा साल हुवी तो मुनासिब हाल पाकर ख़िज़र अले० ने चाहा कि हक़दार को हक़ पहुंचे इसी लिये मियाँ शाह दानियाल रहे० से कहा कि जो मस्जिद जंगल में वाक़े है मक़ाम अच्छा और नदी जारी है जन्नत के बाग़ की तरह रियाज़त करने वालौं को शराबे मुहब्बत पिलाने वाली और रोशन दिलौं को शिफ़ा देने वाली जिसका लक़ब रवोकरी मस्जिद है हज़रत महेदी अले० और आप वहाँ आवो। जब शेख़ दानियाल रहे० हज़रत महेदी अले० को और आपके बड़े भाइ मीराँ सय्यद अहमद को साथ लेकर हज़रत महेदी अले० का कमाल दिखाने के लिये वादे के मक़ाम पर पहुंचे तो ख़िज़र अले० ने खोकरी मस्जिद के पास भी मियाँ शाह दानियाल रहे० से चंद सवालात किये उन्हों ने कोइ जवाब नहीं दिया फिर हज़रत

महेदी अले० से अर्ज़ किये तो हज़रत ने तमाम सवालात को एक जवाब में हल फ़र्मादिया, उसके बाद ख़ाजा ख़िज़र अले० हज़रत महेदी अले० के साथ ख़लवत (तन्हाई) में बैठकर हज़रत महेदी अले० के जद्दे अमजद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० का जो कुछ बारे अमानत था हज़रत महेदी मौऊद अले० को पहुंचा दिया और कहा कि यह बारे अमानत की अता है। अल्लाह तआला फ़र्माता है *''हमने पेश किया अमानत को आसमानौं और ज़मीन और पहाड़ौं पर तो उन्हों ने उसके उठाने से इन्कार किया और उस से डर गये और इन्सान ने उसको उठा लिया बेशक वह बड़ा बेबाक नादान था'' (अल अहज़ाब-७२)।* आपको तमाम दिया गया है। फिर ख़ाजा ख़िज़र अले० ने आजिज़ी से अर्ज़ किया कि अल्लाह का हुक्म है कि आप अपने जद् मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० की इस अमानत से लोगौं को तल्क़ीन करें यह ज़िक्रे ख़फ़ी का बार है। हमारे पास अमानत था आप को पहुंचा दिया यह बार उठाकर लाने वाले को भी कुछ अता हो। उसके बाद हज़रत महेदी अले० ने ख़ाजा ख़िज़र अले० को ज़िक्रे ख़फ़ी की तल्क़ीन फ़र्माइ, पस खिज़र अले० ने ख़लवत से बाहर आकर शाह दानियाल रहे० से कहा कि यह ज़ात महेदी मौऊद है मैं ने तस्दीक़ की और तर्बियत भी हुआ तुम भी तस्दीक़ करो और तर्बियत होजाव। उसक बाद मियाँ शाह दानियाल रहे० हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में मुरीद हुवे और मियाँ सय्यद अहमद भी तर्बियत हुवे।

जिस वक़्त हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० ने अपनी विलायत की अमानत का बार ख़िज़र अले० के हवाले किया उस वक़्त एक खजूर अपने लुआबे मुबारक से तर करके ख़िज़र अले० को देकर फ़र्माया कि यह खजूर इमाम आख़रुज़् ज़माँ को पहुंचादो। नक़ल करते हैं कि ख़ाज़ा खिज़र अले० ने हज़रत महेदी अले० को ख़लवत में लेजाकर अमानत हवाले करने के बाद वह खजूर जो अपने सर पर महफ़ूज़ रखते थे

निकालकर हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में पेश किया और कहा कि यह नबी अले० का पसख़ुर्दा है इसको आप लीजिये तो इमाम अले० ने फ़र्माया कि हाँ। ख़िज़र अले० ने कहा कि आप को अल्लाह तआला का फ़र्मान इस तरह हुवा है कि जौ शख़्स मुरीद होने की आरज़ू और ख़्वाहिश से आपकी दर्गाह शरीफ़ में हाज़िर हो उसको ज़िक्रे ख़फ़ी की तल्क़ीन फ़र्मायें।

उसके बाद हज़रत महेदी अले० के लिये आपके चचा मियाँ सय्यद जलालुद्दीन की साहेबज़ादी मुसम्मात हज़रता बीबी अलाहदती रज़ी० से ज़ौजियत की निस्बत क़रार पाइ, उस माअसूमा का अक़्द हज़रत महेदी अले० के साथ हुवा। उस ज़माने में मियाँ शाह दानियाल रहे० हज़रत महेदी अले० को सय्यदुल औलिया फ़र्माते थे और दिन बदिन हज़रत महेदी अले० की विलायत की शुहरत होने लगी। हासिल यह कि एक अरसे के बाद जोनपूर का बादशाह सुल्तान हुसेन शरक़ी जो वलीए कामिल और अमीर आदिल के मर्तबे में था और हज़रत महेदी अले० से बुहत इख़लास और इख़तिलात (मिश्रण) रखता था यहाँतक कि उसकी क़ुव्वत और हयात आँहज़रत सय्यदुल औलिया की मुलाक़ात के बग़ैर दुश्वार थी और उस ज़ाते आली दरजात से तर्बियत भी हुआ था और सुल्तान हज़रत महेदी अले० के बग़ैर कभी कुफ़्फ़ार से जंग नहीं करता था बल्कि अर्वाहे रसूल सल्ला० से मालूमात के बग़ैर जंग नहीं करता था उसी तरह सात बार जंग किया था। पहले हज़रत महेदी अले० को आँहज़रत सल्ला० की अर्वाह से मालूम होता उसके बाद सुल्तान हुसेन को भी आगाही होती। एक रोज़ सुल्तान नसीहत और वाज़ सुन्ने के लिये आया तो हज़रत महेदी अले० ने दीनी नसीहत शुरू फ़र्माइ और उसी वाज़ में फ़र्माया कि इस्लाम के मुतीअ (अधीन) होना जाइज़ है काफ़िर के मुतीअ होना जाइज़ नहीं। इस नसीहत से सुल्तान रंजीदा हुवा क्योंकि वह

काफ़िर बादशाह का मालगुज़ार था, अर्ज़ किया कि हज़रत ने जो कुछ फ़र्माया हक़ है लेकिन हम माज़ूर हैं कि वह बादशाह अपनी शौकत और क़ुव्वत के ग़ल्बे से तमाम मुसलमानों को तबाह करदेता है, अब अगर हज़रत हमारी मदद् फ़र्मायें तो मैं काफ़िर बादशाह का हरगिज़ मुतीअ नहूंगा। हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि हक़ तआला अपने दीन की मदद् फ़र्मायेगा। सुल्तान ने दीन की नुसरत की उम्मीद पर चंद लाख तिन्कए ज़र ग़ाज़ियौं की इस्तेदाद के लयि हज़रत के हुज़ूर में पेश किये और कहा कि रसूल सल्ला० ने भी ग़ाज़ियौं के इस्तेदाद के लिये क़ुबूल फ़र्माया है और सुल्तान ने चंद सालेह मरदौं को आँहज़र अले० की ख़िदमत के लिये मुक़र्रर किया कि वह हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर रहें।

एक रोज़ हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० की रुहे मुक़द्दस से हज़रत महेदी अले० को मालूम हुवा कि हमने तुमको इक़लीमे (मुल्क) गौड़ दिया है और सुल्तान को भी मालूम हुवा कि गौड़ की फ़त्ह है। उसी वक़्त हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मैं ने हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० को मुआमले में देखा फ़र्माते हैं कि तुझको गौड़ की फ़त्ह दी गयी है और हज़त महेदी अले० ने भी फ़र्माया कि हमको भी मालूम हुवा है कि गौड़ की फ़त्ह है। उसके बाद हज़रत महेदी अले० और सुल्तान गौड़ की तरफ़ रवाना हुवे वहाँ नापाक और सख़्त काफ़िर जिसका नाम दलपत राय था अपने मक़ाम से सत्तर कोस के फ़ास्ले पर आकर मुकाबला किया और तीन लाख तज्रबा कार जंगी सवार और जान पर खेलने वालौं हमेशा फ़त्ह पाने वालौं के साथ जंग करने में ऐसी कोशिश की कि इस्लाम के लश्कर को शिकस्त हुवी, मगर हज़रत महेदी अले० तीन सौ तेरा अशख़ास के साथ अपने मुक़ाम पर डटे रहे। उस दौरान सुल्तान ने चंद बार अपने आदमियों के

ज़रीए कहला भेजा कि हमको शिकस्त हुवी हज़रत भी तश्रीफ़ लायें। महेदी अले० ने फ़र्माया कि इन्शाअल्लाहु तआला आज हमारी फ़त्ह है थोड़ी देर सुकूत करो (ख़ामोश रहो)। जब दलपत राय का झडां हज़रत महेदी अले० के सामने क़रीब पहुंचा तो ज़बाने मुबारक से *नसरुम् मिनल्लाहि फ़त्हुन् क़रीब* पढ़कर धोड़ौं को दौड़ाये, जब घोड़े आगे बढ़े तो एक हाथी संकली सफ़ेद बुहत बड़ा और दिलेर सोने की बुहत बड़ी वज़्नी ज़ंजीर सूंढ में लिया हुआ दुश्मनौं की जमइयत को शिकिस्त देरहा था, चुनांचे हज़रत महेदी अले० के सामने आकर हमला किया तो हज़रत ने बिस्मिल्ला कहकर तीर चलाया जो हाथी के सर में घुस गया, तीर का दहन नज़र आरहा था पस हाथी मुंह फेरकर गिरा और मर गया और हज़रत महेदी अले० आशिक़ाने हक़ वासिलाने ज़ाते मुत्लक़, क़ातिलाने कुफ़्फ़ार मरदाने ख़ुदा के साथ इस आयत *''अकसर थोड़ी सी जमाअत ख़ुदा के हुक्म से बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आगई है'' (अल बक़रह-२४९)* के मुवाफ़िक़ कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब आगये और कहने लगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हमको साबित क़दम रख और काफ़िरौं के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़र्मा पस उन्हों ने ख़ुदा के हुक्म से उनको शिकस्त दी (अल बक़रह - २५०) और हज़रत महेदी अले० ने सख़्त काफ़िरौं को क़त्ल किया और मुतवज्जह नहीं हुवे उनमें के बाज़ बाज़ की तरफ़ और न मुतवज्ज हुआ छोटा बड़े की तरफ़ और न बड़ा छोटे की तरफ़ मगर दलपत राये जो क़िले के क़रीब पहुंच चुका था पलट कर हज़रत महेदी अले० के मुक़ाबिल होकर शमशीर चलाया जो हज़रत के घोड़े की गर्दन पर आइ और नहीं काटी उसके बाद हज़रत ने म्यान से तल्वार खींच कर उसके मोंढे पर मारी वह दो तुकड़े होकर इस तरह गिरा कि उसका दिल बाहर आगया था और वह भी तुकड़े होगया था, जैसाकि अल्लाह तआला का क़ौल हैं *फिर जड़ कट गयी ज़ालिम लौगौं की और*

हर तारीफ़ अल्लाह ही को सज़ावार है। बुत का तमाम नक़्श जिस की वह प्रस्तिश करता था उसका असर उसके दिल पर पैदा होगया था और उसकी जान से उस बुत के नाम से आवाज़ निकली। जब वह नक़श हज़रत महेदी अले० को दिखाइ दिया और वह आवाज़ आप ने सुनी तो इब्रत और दक़ीक़ा कुशाइ का दर्वाज़ा आपके बातिन की सफ़ाइ से जो हज़रत समदियत के क़ुर्ब की जिला से रोशन था ख़ुल गया। उस वक़्त आप पर ऐसी हालत तारी हुवी कि काफ़िर के दिल पर झूट का ऐसा असर हुवा तो जो नक़्श कि हक़ है उसका मोमिन के दिल पर किस क़दर असर होगा। अल्लाह तआला का फ़र्मान पहुंचा कि ऐ सय्यद मुहम्मद हम ने तुझको इस लिये नहीं पैदा किया है कि तू घोड़ों पर सवार हो और दुनिया के कर्रोफ़र (शान शौकत) में रहे बल्कि हम ने तुझको ख़ालिस अपनी ज़ात के लिये पैदा किया है, जैसा कि अल्लाह तआला का फ़र्मान है *और मैं ने तुम को अपने काम के लिये बनाया है (ताहा - ४१)।*

हासिले कलाम हज़रत महेदी अले० जो घोड़े पर सवार थे नीचे आगये। जब सुल्तान को यह ख़बर पहुंची कि हज़रत महेदी अले० जज़्बे के असर से बेहोश होगये हैं तो ख़ुद आकर देखा कि आप ने ज़मीन पर क़रार फ़र्माया है उस वक़्त पाँचों ऊलुलअज़्म (आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा अलैहिमुस सलाम) हज़रत महेदी अले० को खड़े किये और बज़ाहिर सुल्तान ने हज़रत को अपनी पालकी में बिठाकर शाही अलम (झंडा) हज़रत के सामने रखा और कहा कि यह फ़त्ह हज़रत महेदी अले० की है। उस वक़्त आँहज़रत अले० पर ऐसा हाल ग़ालिब था कि आप इस आलम से बेख़बर थे चुनांचे सात साल तक यही हाल रहा मगर नमाज़ रोज़ा का फ़र्ज़ अदा फ़र्माते और फ़र्ज़ के सिवाय सुन्नत और वाजिब की भी आगाही नहीं रखते थे लेकिन चंद लाख तिन्कए ज़र जो ग़ाज़ियौं के सामान के लिये आये थे हज़रत ने वापस फ़र्मादिया और

फ़र्माया कि अब इस पूंजी की कोइ ज़रुरत नहीं। बयान करते हैं कि सुल्तान ने हज़रत की ख़िदमत और निगेहबानी के लिये पन्द्रह सौ सवार मुतऐयन किया था कि उनका नाम साढ़े सात सौ मेरी उम्मत के और साढ़े सात सौ मेरी उम्मत के है। इसी तरह हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० की हदीस में आया है लेकिन एक दूसरी रिवायत में है कि आँहज़रत अले० के साथ तीन सौ तेरह सिपाही थे उनमें से हर एक के हाथ में दो दो शमशीरें थीं और सुल्तान के दिल में ख़याल आया कि जो रक़म ग़ाज़ियौं के सामान के लिये आपकी ख़िदमत में रवाना की गयी है वह हज़रत के लायक़ नहीं इस लिये सात क़स्बे बड़े और आबाद वज़ीफ़े के तौर पर लिखकर क़ाज़ी अली मुहम्मद के हाथ से हज़रत के पास भेजा, आप ने ख़फ़ा होकर वापस फ़र्मादिया। क़ाज़ी पलट गया और सुल्तान से अर्ज़ किया कि हज़रत महेदी अले० ने हमारी तरफ़ बिलकुल तवज्जह नहीं फ़र्माइ शायद इस लिये रंजीदा हुवे हैं कि आप ख़ुद नहीं गये। सुल्तान उसी वक़्त उठा और हज़रत की ख़िदमत में इस इरादे से गया कि अगर हज़रत बादशाही तसर्रुफ़ क़ुबूल करते हैं तो जल्द पेश करदूँ मगर हज़रत को देखा तो आपके वुजूदे मसऊद से किसी दुनियवी चीज़ का मक़सूद न पाया बल्की हाल और ही पाया उस वक़्त सुल्तान ने यह रुबाई पढ़ी-

जो शख़्स तुझको पाया जान को क्या करे
औरत बच्चे और सामान को क्या करे
अपना दीवाना बनाकर दोनों जहाँ अता करता है
तेरा दीवीना दोनों जहाँ को (लेकर) क्या करे।

उसके बाद महीने दो महीने के अर्से में एक घंटा या उस से कम कुछ होश में आते और फिर बेहोश होजाते। अरसए दराज़ के बाद एक

रोज़ होश में आये तो आपकी बीबी हज़रता बीबी अलाहदती रज़ी० ने उस वक़्त अर्ज़ किया मीराँजी कइ साल गुज़रे कोइ ग़िज़ा आपके जिस्मे मुबारक को नहीं पहुंची क्या हाल होगा? हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया जो ग़िज़ा अर्वाह की है वही ग़िज़ा जिसम की होगयी, यह फ़र्माकर पहले के जैसे बेहोश होगये फिर अरसए दराज़ के बाद होश में आये। उस वक़्त भी बीबी रज़ी० ने अर्ज़ किया यह कैसा हाल है जो इस आलम से बेहोश रहते हैं और बर्दाश्त नहीं करसकते तो हज़रत महेदी अले० ने जवाब में फ़र्माया कि ख़ुदाए तआला की ज़ात की तजल्ली पैदरपै (निरंतर) ऐसी होती है कि बहरे अमीक़ (गहरा समुद्र) है और उस समुद्र से एक क़त्रा वलीए कामिल या नबीए मुर्सल को दिया जाये तो उनको तमाम उम्र कुछ होश न रहे और हक़ तआला का फ़र्मान होता है कि ऐ सय्यद मुहम्मद इस सबब् से कि हमने तुझको मुहम्मद सल्ला० की विलायत का ख़ातिम किया है फ़र्ज़ नमाज़ अदा करते हैं यह हमारा फ़ज़ल और एहसान है, यह फ़र्माकर उसी तरह बेहोश होगये।

सात साल की मुद्दत के बाद इशा के वक़्त आप ने पानी चाहा, बीबी रज़ी० बुहत ख़ुशी से पानी लायीं हज़रत को बेहोश पाइं और बीबी रज़ी० सुब्ह के वक़्त तक उसी तरह (पानी का प्याला हाथ में लिये हुए) खड़ी थीं हज़रत ने सुब्ह को होशियार होकर फ़र्माया कि अब पानी लाइ हो तो अर्ज़ कीं मीराँजी इशा के वक़्त से पानी लाकर खड़ी हूँ पस फ़र्माया कि पानी लावो उसी वक़्त बीबी रज़ी० वुज़ू के लिये पानी लायीं। हासिल यह कि उस से पहले हमेशा बीबी रज़ी० हज़रत महेदी अले० को वुज़ू कर्वाती थीं मगर उस रोज़ हज़रत ने ख़ुद अपनी दानिश से वुज़ू फ़र्माया और दुगानए शुक्राना अदा करके अल्लाह तआला की दर्गाह में बीबी रज़ी० के हक़ में दुआ फ़र्माइ कि या अल्लाह जिस तरह इस औरत ने मख़सूस मुझ

को ख़िदमत से आराम पहुंचाया उसी तरह तू उसको अपनी बार्गाहे मुक़द्दस में आसूदा (संतुष्ट) और मख़सूस कर फिर फ़र्माया कि हमारी आन से बीबी रज़ी० के लिये तीन हिस्से हैं। सात साल के बाद आँहज़रत अले० का हाल सहव (सचेत) और सुक्र से मिला हुआ था। सह्व वह है कि अल्लाह तआला की इताअत और बन्दगी में मश्ग़ूल रहे और सुक्र वह है कि अपनी ज़ात और अज़ीज़ौं से बेख़बर रहे। पाँच साल के दरमियान आँहज़रत अले० की ग़िज़ा का हिसाब किये तो अनाज, घी, गोश्त और दूसरी चीज़ें मिलाकर जुम्ला सत्रह सेर हुवे। बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० से मन्क़ूल है कि किसी ने इमाम अले० से कहा कि हज़रत मुस्तफ़ा सल्ला० की दाअवत की तेईस साल की मुद्दत में आपकी ग़िज़ा की मिक़दार बीस सेर हुवी है तो फ़र्माया कि उस ख़ुंदकार (आँहज़रत सल्ला० की ग़िज़ा) से हमारे लिये कुछ कम होना चाहिये।

नक़ल है कि बन्दगी मियाँ दिलावर रज़ी० दलपत के भाँजे थे, जंग की शिकस्त के वक़्त सुल्तान के सिपाहियौं के ज़रीए पहुंचे और सुल्तान ने अपनी बहन को ख़िदमत करने के लिये मुक़र्रर किया था। सुल्तान की बहेन सलीम ख़ातून अपने बच्चे की तरह पर्वरिश करने लगीं। हज़रत शाह दिलावर रज़ी० जज़्बे के हाल में मुस्तग़रक़ (तन्मय) थे और वह जज़्बा इस सबब् से था कि मैदाने जंग में हज़रत शाह दिलावर रज़ी० की नज़र हज़रत महेदी अले० पर पड़ी थी, उस पाक और रौशन नज़र के सबब् से हक़ के जज़्बे के नशे में मुस्तग़रक़ हो गये। जब सलीमा ख़ातून ने हज़रत शाह दिलावर रज़ी० में ज़ाहेरी दानाइ न पाइ तो बक्रियाँ उनके हवाले की थीं क़िस्सा तवील है लेकिन आँख से देखी हुवी चीज़ बयान की मुहताज नहीं इसके बावजूद ज़रुरी बयान यह है कि बन्दगी मियाँ दिलावर रज़ी० को साहबुज़् ज़माँ यानि इमाम अले० के

हुज़ूर में भेजकर कहलाया कि ख़ुदाए तआला ने भेजा है क़ुबूल फ़र्मायें क्यों कि ख़ातून मज़्कूरा बुहत लायक़ और आरिफ़ुल वुजूद थीं और हज़रत से तरबियत भी होचुकी थी इसलिये जान गयीं कि यह मर्द हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत के लायक़ है। उस वक़्त हज़रत महेदी अले० नमाज़े ज़ुहर के लिये वुज़ू फ़र्माते थे और सर के मस्ह तक पहुंच चुके थे, मियाँ दिलावर रज़ी० आये तो फ़र्माया दिलावर नहीं बल्कि शाह दिलावर है हम ने क़ुबूल किया और ख़ुदाए तआला ने भी इनको मक़बूल (स्वीकृत) बनादिया है। इमाम अले० ने दुगाना तहीयतुल वुज़ू अदा करके बन्दगी मियाँ शाह दिलावर को नज़्दीक बुलाकर ज़िक्रे ख़फ़ी की तल्क़ीन फ़र्माइ और सीधा हाथ पकड़ कर तीन बार फ़र्माया कि अल्लाह के मुरीद बनो और फ़र्माया ला इलाह हूँ नहीं और फिर हाथ ऊपर करके तीन बार मुकर्रर फ़र्माया कि अल्लाह की मुराद बनो और फ़र्माया इल्लल्लाह तूं है। हज़रत महेदी अले० के हर दो दमे मुबारक से हथेली में राइ के दाने की तरह अर्श से तहतुस् सरा (पाताल) तक हज़रत शाह दिलावर रज़ी० पर रौशन होगये और उसी वक़्त हक़ के जज़्बे में मुस्तग़रक़ होगये चुनांचे आँहज़रत अले० ने ख़ुद उनको अपने हाथौं से उठाकर हुज्रे में बिठाये।

अल्लाह तआला का फ़र्मान पहुंचा कि ऐ सय्यद मुहम्मद हमारे लिये हिज्रत कर और काअबे के हज् के लिये जा, वहीं (काअब तुल्लाह में) तेरी दाअवत ज़ाहिर होगी लिहाज़ा हज़रत महेदी अले० ने हिज्रत फ़र्माइ। उस वक़्त सुल्तान ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि यह तमाम मुमलिकत (राज्य) और सल्तनत हज़रत की मिलकियत है चाहिये कि इसी जगह बन्दे के सर पर रहें, उस वक़्त हज़रत महेदी अले० ने यह बैतें पढ़ीं (अनुवाद) -

या अल्लाह दिल किसी जगह बंधा रहे
तो इस दिल बस्तगी से जान नजात पाये
ऐसा न हो कि दिल किसी जगह बंधा रहे
कि इस दिल बस्तगी (बन्धन) से जान तबाह होजाये

फिर सुल्तान ने अर्ज़ किया कि मैं भी साथ चलता हूँ ताकि सग़ीरा गुनाहों से बख़शा आऊँ। हज़रत महेदी अले० ने सुल्तान को ईमान की ख़ुशख़बरी देकर फ़र्माया कि तेरे आने से फिर कुफ़्फ़ार इस्लाम पर ग़ल्बा करेंगे और अहले इस्लाम में बुहत तफ़रक़ा पैदा होगा। यह नसीहत फ़र्माकर ख़ुद इमाम अले० रवाना हुवे, क़ाजी अली मुहम्मद, मियाँ अबूबक्र दामादे हज़रत इमाम अले०, मियाँ सय्यद करीमुल्लाह, मियाँ सय्यद सलामुल्लाह, मियाँ सय्यद ग़नी, बन्दगी मियाँ दिलावर रज़ी०, मियाँ जमाल, मियाँ क़ुतुब, मियाँ लाड पेश इमाम नमाज़, मियाँ हाजी मुहम्मद, मियाँ शेख़ भीक, मियाँ ताहेर और मियाँ भील रज़ी अल्लाहु अन्हुम यह तमाम मुहाजिरीन जो अल्लाह के तालिब और अल्लाह की ज़ात में वासिल थे इमाम अले० के साथ होगये और हर मन्ज़िल पर हज़रत इमाम अले० के हुज़ूर पुर नूर में लोग बकसरत हाज़िर होकर मुरीद होते और दुनिया की थोड़ी पूंजी तर्क करके अल्लाह के दीदार के तालिब होकर आँहज़रत अले० के साथ रवाना होते थे।

जब इमाम अले० दानापूर पहुंचे उस मक़ाम में बीबी अलहदती रज़ी० ने मआमला देखा और ग़ैब की आवाज़ सुनी कि तेरा शौहर जो सय्यद मुहम्मद है उसको हमने महेदी मौऊद और मुहम्मद सल्ला० की विलायत का बार उठाने वाला और नबी सल्ला० की विलायत का ख़ातिम किया है वह साहबे ज़माँ और हमारा ख़लीफ़ा है उसकी तस्दीक़ कर उसका इन्कार मेरा इन्कार है और मेरा इन्कार उसका इन्कार

है और उसकी तस्दीक़ तमाम आलमीन पर फ़र्ज़ है और उसकी ज़ात रहमतुल लिलआलमीन है। उसके बाद बीबी रज़ी० ने जो देखा था और सुना था हज़रत इमाम अले० से अर्ज़ किया। हज़रत ने वाक़िआ के तमाम अहवाल को साबित और दुरुस्त रखकर फ़र्माया कि बन्दे को तमाम औक़ात में ख़ुदा का फ़र्मान होता है कि हम ने तुझको महेदी मौऊद किया है उसका इज़्हार वक़्त पहुंचने से मुतअल्लिक़ है जब वक़्त आयेगा ज़ाहिर होजायेगा। उसके बाद बीबी रज़ी० ने हज़रत अले० की क़दमबोसी करके अर्ज़ किया मीराँजी इस से पहले आप की ख़िदमत में मुझ से जोकुछ क़ुसूर हुवा है मआफ़ फ़र्मायें और गवाह रहें कि अब मैं आपके हुज़ूर में आपकी तस्दीक़ करती हूँ जिस वक़्त आपके दाअवे (के इज़्हार) का वक़्त आयेगा ज़ाहिर होजायेगा। वाज़ेह हो कि जिस तरह बीबी अलहदती रज़ी० ने सब से पहले हज़रत महेदी अले० की तस्दीक़ की उसी तरह ख़दीजतुल कुब्रा रज़ी० ने सब से पहले हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० की नबूवत की तस्दीक़ की थी।

हासिले कलाम तमाम मज़्कूरा मुहाजिरीन रज़ी० को अल्लाह की जानिब से मालूम हुआ कि तुम्हारा मुर्शिद जो सय्यद मुहम्मद है हम ने उसको महेदी मौऊद किया है उसकी तस्दीक़ करो। चुनांचे एक एक दो दो मुहाजिर हज़रत अले० के हुज़ूर में आकर अर्ज़ करते थे कि मीराँजी अल्लाह की जानिब से ऐसा मालूम होता है हज़रत अले० सुनकर फ़र्माते थे कि हाँ ऐसा ही है और ऐसा ही होगा लेकिन यह बात वक़्त पहुंचने से मुतअल्लक़ है तुम अपने काम में (ज़िक्रे ख़ुदा में) मश्ग़ूल रहो और हज़रत ने यह बैत पढ़ी

काम वक़्त पर मौक़ूफ़ (निर्भर) है जल्दी से नहीं होता
जब यकायक वक़्त आजाता है तो बंद अनार खुल जाता है

यह तमाम मुआमला जो बीबी रज़ी० ने हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में अर्ज़ करके इमाम अले० की तस्दीक़ कीं इमाम महेदी मौऊद अले० के फ़र्ज़न्दे मसऊद मीराँ सय्यद महमूद जो दोनों जहाँ में मम्दूह (प्रशंसित) और महेमूद हैं हज़रत महेदी अले० के विसाले मुबारक के बाद तमाम मुहाजरीन रज़ी० ने विलइजमाअ (एकत्रित होकर) और ख़ुसूसन् मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० आप को सानीए महेदी कहते थे इस मक़सद से कि अल्लाह तआला फ़र्माता है *वह दो में से दूसरा जब दोनों गार में थे (अत तौब-४०)।* किसी ने पूछा कि सानीए महेदी किस तरह कहते हैं दूसरा महेदी कयोंकर होगा तो बन्दगी मियाँ शाह दिलावब रज़ी० ने फ़र्माया कि सानीए महेदी से मुराद सानी इसनैन है। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० की उम्र उस वक़्त बारह साल थी वह हज़रत महेदी के ख़ैमा के पास खड़े हुवे थे, जिस वक़्त हज़रत महेदी अले० और बीबी रज़ी० की गुफ़्तगू की आवाज़ सिद्दीक़े विलायत यानि मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० के कान में पहुंची तो हक़ के जज़्बे में बेहोश होकर गिर गये। उसी वक़्त अल्लाह तआला के फ़र्मान से हज़रत महेदी अले० ने बाहर आकर देखा कि जाज़िब और मुस्तग़रक़ बहक़ होगये हैं तो अपनी गोद में लेकर ख़ैमे में लाकर फ़र्माया कि बीबी देखो भाइ सय्यद महमूद का दिल, जिसम और तमाम गोश्त पोस्ता उस्तुख़ान (हड्डीयाँ) और बाल बाल इल्लल्लाह होगया है। उसके बाद अपनी गोद से नीचे लाकर अपने घुटने का टेका देकर बीबी का हाथ पकड़ कर अपने सीने पर रखा और फिर मीराँ सय्यद महमूद के सीने पर हाथ रखकर तीन बार मुकर्रर फ़र्माया कि जो कुछ इस सीने में अल्लाह की जानिब से डाला गया है मीराँ सय्यद महमूद के सीने में डाला गया है। चुनांचे आँहज़रत सल्ला० ने फ़र्माया कि अल्लाह ने जो चीज़ मेरे सीने में डाली है वही चीज़ अबू बक्र रज़ी० के सीने में डाली है। पस मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० पहर या दो पहर के

बाद हुशयार हुवे और अर्ज़ किया कि हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में हज़रत महेदी अले० की महेदियत की तस्दीक़ करता हूँ, जब दाअवए महदियत की मुक़र्ररा मुद्दत पहुंच जायेगी तो उसका इज़्हार होजायेगा। उसी वक़्त हज़रत शाह दिलावर रज़ी० जो ख़ैमे के पीछे हाज़िर थे बीबी रज़ी० का मुआमला और मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० की पूरी कैफ़ियत सुनचुके थे। हज़रत महेदी अले० ज़ुहर की नमाज़ के लिये बाहर तश्रीफ़ लाते ही शाह दिलावर रज़ी० ने क़दम बोसी करके कहा कि मीराँजी बन्दा भी आपकी तस्दीक़ करता है और जब दाअवते महेदियत का वक़्त आयेगा हक़ ज़ाहिर होजायेगा।

हज़रत महेदी अले० ने दानापूर तश्रीफ़ लेजाने के बाद वहाँ क़ियाम फ़र्माया और अपने दो असहाब मियाँ शेख़ भीक रज़ी० और मियाँ भील रज़ी० को ख़रीदो फ़रोख़्त के लिये शहर दानापूर में रवाना फ़र्माया और उस से पहले मियाँ शेख़ भीक रज़ी० को हज़रत ईसा अले० के क़ायम मक़ाम फ़र्माया था उनका मक़सद यह था कि मक़ामे ईसा अले० से बढ़ जायें उठालिये गये। चूंकि मियाँ शेख़ भीक रज़ी० और मियाँ भील रज़ी० दोनों असहाब इमाम अले० के हुक्म से शहर जारहे थे, रास्ते में देखा कि बुहत से मर्द और औरतें जमा होकर अफ़सोस, ज़ारी और शोर कर रहे थे। मियाँ शेख़ भीक रज़ी० ने कारण पूछा तो लोगौं ने कहा कि हमारा सर्दार बुज़ूर्ग था वह मरगया है। मियाँ शेख़ भीक रज़ी० ने फ़र्माया कि मैं भी तो देखूँ जूंही देखा फ़र्माया कि यह मरा नहीं और उसका हाथ पकड़कर कहा कि उठ उसी वक़्त उठा और ज़िन्दा होगया। तमाम लोग उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुवे तो शेख़ रज़ी० लोगौं की मलामत की बला से भाग कर हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में आये और तमाम लोग उनके पीछे आने लगे। यह देखकर हज़रत महेदी अले० ने

फ़र्माया कि इन जाहिलौं को दूर करो ऐब से भरे हुए मख़लूक़ बन्दे पर ना लाइक़ निस्बत करते हैं (बन्दए मख़लूक़ को ग़ैर मख़लूक़ यानि ख़ुदा कहते हैं)। तमाम लोगौं को दूर करदिये उसके बाद इमाम अले० ने मियाँ भीक रजी० से पूछा कि क्या वाक़ेआ है तो अर्ज़ किया ख़ुंदकार पर रौशन है, हुक्म फ़र्माया कि शरीअत वह है कि तुम अपनी ज़बान से कहो उसके बाद शेख़ रज़ी० ने तमाम क़िस्सा बयान किया। हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि तुमने बिज़् ज़रुर अपनी रुस्वाई की है। पस इमाम अले० ने बुहत मुतफ़क्किर (चिंतित) होकर तीन दिन के रोज़े की निय्यत करके रात दिन इबादत में मश्ग़ूल रहकर दुआ की क़ुबूलियत की उम्मीद पर अर्ज़ किया कि ऐ बारे ख़ुदाया मेरी पैरवी करने वालौं को करामत की बला में मुब्तला मत कर। तीन दिन तीन रात के बाद हक़ तआला का फ़र्मान पहुंचा कि हम ने तेरे वास्ते से तेरे ताबईन को इस करामत की बला से रिहा किया और तुझ से पहले हम ने अम्बिया और औलिया की उम्मतौं में किसी को इस करामत की बला से रिहा नहीं किया, करामत की बला का मुक़ाम निहायत छोटा है।

दानापूर में बन्दगी मियाँ दिलावर रज़ी० हक़ के जज़्बे के ग़ल्बे और ज़ाते मुत्लक़ यानि ख़ुदाए तआला की तजल्ली के कारण क़दम ज़मीन पर नहीं रख सकते थे इस लिये उन्हें उस मस्जिद में जिसके मुतवल्ली का नाम दुर्राज या छोड़कर ख़ुद इमाम अले० हक़ तआला के फ़र्मान से रवाना हुवे और शहर चंदेरी में रौनक़ अफ़रोज़ हुवे। वहाँ बुहत शुहरत होगई कि ऐसा वलीए कामिल व मुकम्मल व मुतवक्किल और हक़ीक़त और शरीअत का बयान करने वाला ख़ातिमुन् नबी सल्ला० के बाद कोई नहीं आया। चुनांचे हर रोज़ पाँच छ हज़ार अश्ख़ास इमाम अले० की दाअवत सुन्ने और फ़ैज़ हासिल करने के लिये आते थे और अकसर लोग क़ुरआन के बयान को सुन्ने, दाअत के फ़ैज़, नेक नसीहतौं

और आँहज़रत अले० के पसख़ुरदे की तासीर से हक़ के जज़्बे में मुस्तग़रक़ और मस्त होजाते थे। यह देखकर शहर चंदेरी के मशायख़ीन जो अठारा थे अपने दबदबे और मर्तबे के घटने से दिली अदावत और हसद से हज़रत महेदी अले० को शहर से निकालदेने के लिये अपने लोगौं को रवाना किये। हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि बन्दे को भी अल्लाह तआला का फ़र्मान हुआ है कि ऐ सय्यद मुहम्मद आगे जा। उन लोगौं ने उसी तरह दुबारा हज़रत अले० से तकरार की और मशायख़ौं ने बुहत से लोगौं को भेजकर शोरो शर के साथ कहलाया कि कब रवाना होंगे वर्ना शरारत होगी। उसके बाद हज़रत महेदी अले० ने अल्लाह के हुक्म से खड़े होकर फ़र्माया कि इन्शा अल्लाह तआला देखो कि शरारत किस के साथ होगी। हज़रत महेदी अले० वहाँ से निकल कर रात में शहर से एक मील के फ़ासले पर क़ियाम फ़र्माया। हज़रत अले० के सहाबा में से दो असहाब अपने कपड़े धोबी को डालने की वज्ह से शहर में ठहर गये थे सुब्ह को हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुवे। हज़रत अले० ने पूछा कि रात में आग की रौशनी और बल्वा क्या था? अर्ज़ किये कि हज़रत अले० की आज़ुर्दगी (अप्रसन्नता) के तीर का असर था। इमाम अले० ने फ़र्माया बन्दगाने ख़ुदा से किसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचती हमारे वाले साँप और बिच्छू नहोंगे और यह आयत पढ़ी *और जो मुसीबत तुम पर पड़ती है सो उस गुनाह की वज्ह से जो तुम्हारे हाथौं ने किया (अश-शूरा-३०)।*

शहर चंदेरी में आग और बल्वा का क़िस्सा यह है कि शराब नोशी की मज्लिस में मशायख़ ज़ादे और उहदादार के फ़र्ज़न्द के दरमियान् गुफ़्तगू होकर लड़ाइ हुवी और मशायख़ के बेटे के हाथ से उहदादार का लड़का मारा गया, पस वहाँ के हाकिम की तरफ़ से उनकी

हलाकी और तबाही वाक़े हुवी मशायख़ौं के घरौं को आग लगाइ गयी और उनकी तमाम औरतौं को ज़िल्लत के साथ गिरफ़तार करके मैदान में लेगये।

उसके बाद हज़रत महेदी अले० वहाँ से आगे बढ़े यहाँ तक कि चापानीर पहुंचे और वहाँ अठारा महीने क़ियाम फ़र्माया और उसी मक़ाम में बीबी अलाहदती रज़ी० ३ ज़ीहज्जा को मियाँ सय्यद अज्मल रज़ी० को तीन महीने का छोड़ कर वफ़ात पाईं। बीबी बड़न रज़ी० ने हज़रत से कहा कि बीबी रज़ी० के बिस्तर में सोने का टुकड़ा पड़ा हुआ है, आप ने फ़र्माया कि लाओ ताकि गर्म करके बीबी रज़ी० की पेशानी पर दाग़ दिया जाये इस लिये कि बीबी को तवक्कुल का दाअवा था। मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० इमाम अले० का यह फ़र्मान सुनकर दौड़े हुए आये और अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम यह टुकड़ा बीबी रज़ी० की मिलकियत नहीं है बल्कि बीबी फ़ातिमा रज़ी० की मिलकियत है। हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि बन्दे को मालूम था कि बीबी ख़ुदाए तआला के सिवाय कोइ चीज़ नहीं रखते थे लेकिन रसूलुल्लाह सल्ला० की शरीअत के लिहाज़ से वहाँ (आख़िरत में) ख़ुदा की बारगाह में दाग़ न दिये जाने के लिये (यहाँ यानि दुनिया में दाग़ देने का हुक्म किया गया)। पस बीबी रज़ी० को डोंगरी नामी पहाड़ के साये के नीचे दफ़न किये और इस ज़माने में रौज़ए मुतहर्रा का निशान बाक़ी नहीं रहा इसी लिये एक मिनारा की मास्जिद के सामने खड़े होकर उस पहाड़ की जानिब मुतवज्जह होकर उम्मुल मोमिनीन रज़ी० का नामे मुबारक लेकर फ़ातिह और दुरुद पढ़ते है। चापानीर में हज़रत बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० के रोज़े से लगभग एक मील के फ़ासले पर एक मिनारा की मस्जिद वाक़े है।

बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० शहर जाइस के बादशाह शेख़ निज़ामुद्दीन की औलाद से हैं। अठारा साल की उम्र में सल्तनत और सुल्तानी को छोड़कर अल्लाह तआला की तलब में मस्जिदे हराम के तवाफ़ को जाकर काअबतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत से फ़ारिग़ होकर मुरीद होने जिस किसी बुज़ुर्गा के पास जाते वह उनकी फ़ज़ीलत पर नज़र करके इन्कार करते और कहते कि हम तुमको मुरीद करने की सकत नहीं रखते मगर यह ज़माना महेदी मौऊद के ज़ुहूर का क़रीब है वही ज़ात तुमको मुरीद कर सकती है। पस उसी तलब में कई दिन के बाद चापानीर आये और उन्हें मालूम हुआ कि हज़रत मीराँ सय्यद मुहम्मद वलीए कामिल हैं पस जल्दी से इमाम अले० की ख़िदमत में गये। जब क़रीब पहुंचे तो इमाम अले० को ख़ुदाए तआला से फ़र्मान पहुंचा कि हमारा बन्दा आता है तू उसका इस्तिक़बाल कर। इस फ़र्मान के साथ ही हज़रत महेदी अले० शाह निज़ाम रज़ी० के इस्तिक़बाल के लिये तन्हा रवाना हुवे और जब बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० इमाम अले० की नज़रे मुबारक में मन्ज़ूर हुवे तो आप ने यह बैत पढ़ी -

ज़ाहिरी ख़ूबसूरती कोइ चीज़ नहीं

ऐ भाइ सीरत की ख़ूबसूरती ला

हज़रत शाह निज़ाम रज़ी० ने जवाब में अर्ज़ किया कि।
जहाँ नज़र डालता हूँ दोस्त की सूरत नज़र आती है।
जो शख़्स आँख नहीं रखता ख़ता उसी की है

इमाम अले० एक दीवार के साये में बैठ गये और फ़र्माया कि मियाँ निज़ाम तुम ख़ुदा का ज़िक्र करते हो, अर्ज़ किया उसी इरादे से मुरीद होने को आया हूँ। हज़रत महेदी अले० ने ज़िक्रे ख़फ़ी की तल्क़ीन फ़र्माइ

उसी वक़्त बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० को हक़ का जज़्बा हुवा और आपको कुछ होश न रहा। उसके बाद आपको उठाकर हुज्रे में लेगये उस वक़्त हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि मियाँ निज़ाम अपने वुजूद में नरहे, तेल, बत्ती और चराग़ सब कुछ मौजूद था लेकिन बन्दे ने मुस्तफ़ा सल्ला० की विलायत की शमा से रौशन करदिया। तीन दिन तीन रात तक मियाँ ज़िाम बेहोश थे।

जब हज़रत महेदी अले० ने शहर माँडौ को जानेका इरादा करके बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० के नज़्दीक तश्रीफ़ लेजाकर सलाम अलैक फ़र्माया तो उसी वक़्त होश में आकर हज़रत अले० के साथ रवाना हुवे। जब इमाम अले० शहर माँडौ पहुंचे तो वहाँ बुहत शुहरत हुवी और मश्हूर होगया कि ऐसा वलीए कामिलो अकमल रसूलुल्लाह सल्ला० के बाद कोइ नहीं आया। जब यह ख़बर सुल्तान ग़ियासुद्दीन (ख़िल्जी) को जो वलीए कामिल और अमीरे आदिल या पहुंची तो उसने एक मोतबर शख़्स को हज़रत महेदी अले० के पास भेजकर निहायत आजिज़ी से उज़र चाहा कि मैं बसरो चश्म हाज़िर होता लेकिन मेरा इख़्तियार मेरे हाथ में नहीं है इस लिये कि मेरा लड़का नसीरुद्दीन मुझको क़ैद करके ख़ुद बादशाही करता है और कहता है कि जो कुछ दिल में आये ख़र्च करो मगर घर से बाहर मत जाओ। हज़रत महेदी अले० ने सुल्तान की आजिज़ी और ज़ारी की बिना पर मियाँ अबू बक्र रज़ी० और मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० को सुल्तान के पास भेजा। जब यह दोनों बुज़ुर्ग वहाँ पहुंचे तो अज़् राहे अक़ीदत दर्वाज़े से अपने तख़्त तक उनके क़दमौं के नीचे से बेहतरीन रेशमी फ़र्श करवादिया था, अपने और उनके तख़्त के दरमियान् पर्दा डलवा दिया था इस लिये कि सुल्तान के पाँव में सोने की भारी ज़ंजीर थी सहाबा रज़ी० की ताअज़ीम करने से माज़ूर (विवश)

था। जब दोनों असहाब तश्रीफ़ लाकर तख़्त पर बैठ गये तो पर्दा उठवा कर दस्तबोसी की और बुहत सा सोना और चाँदी उनका सदक़ा दिया और रेशमी फ़र्श जो बिछवाया था वह सब उन पर फिदा किया। उसके बाद हज़रत महेदी अले० के तमाम अख़लाक़ और औसाफ़ तहक़ीक़ करके कहा कि इन अख़लाक़ का साहब महेदी मौऊद के सिवाय कोइ दूसरा नहोगा। हासिले कलाम वह अख़लाक़े मुहम्मदी जो महेदी मौऊद के हक़ में साबित किये गये हैं वह सब के सब इस ज़ाते सितूदा सिफ़ात (प्रशंसनीय गुण) में ज़ाहिर होगये क़तई और यक़ीनी तौर पर जाना गया कि जब दाअवए महेदियत का वक़्त आयेगा ज़ाहिर होगा तहक़ीक़ (निश्चित रुप से) यही ज़ात महेदी मौऊद अल्लाह का ख़लीफ़ा है। उसके बाद सुल्तान ने उनको रुख़सत करते हुवे उनके साथ साठ अदद् क़िन्तार (बैल की खाल) सोने चाँदी से भरे हुए और एक मोतियौं की तस्बीह जिसकी क़िमत एक करोड़ महमूदी थी यह फ़ुतूह हज़रत महेदी अले० के हुज़ूरं में भेजकर कहला भेजा कि मुझ जैसा गदा (भिखमंगा) आँहज़रत के जैसे ख़ुदा बख़श से फ़र्माने ख़ुदा *साइल को मत झिड़क* पेश करके तीन सवाल अर्ज़ करता है, पहला सवाल मज़्लूम मौत दूसरा शहादत तीसरा आँहज़रत अले० के बहरए विलायते महेदियत का सदक़ा। हज़रत महेदी अले० ने सुनकर फ़र्माया कि तीनों बातें क़ुबूल तीनों बातें दिया इस तरह तीन बार फ़र्माया और वह तमाम क़िन्तार कि जिनके साथ शहर की मख़लूक़ आइ थी सोने के सारे सिक्के हज़रत महेदी अले० ने उन लोगौं को देदिया और फ़र्माया कि इस चीज़ के तालिब यही (बाज़ारी लोग) हैं और मर्वारीद की तस्बीह जिसके एक एक दाने की क़ीमत एक एक लाख महमूदी थी उसको अपने हाथ की लकड़ी के कोने से उठाकर दफ़ बजाने वाले को अता फ़र्माया। उस वक़्त मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने अर्ज़ किया मीरांजी यह तस्बीह लाक़ीमत

थी तो फ़र्माया हक़ तआला फ़र्माता है सारी दुनिया की पूंजी थोड़ी है और तुम इस तस्बीह को लाक़ीमत कहते हो।

लोगौं का हुजूम ख़त्म होने के बाद मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने अर्ज़ किया मीराँजी थोड़ी चीज़ रहगइ है तो फ़र्माया उसको भी न रखते तो बुहत अच्छा होता आख़िर फ़र्माया बेहतर है सवीयत करके देदो। जब उस क़िन्तार को खोले तो चाँदी से भरा हुवा था सवीयत करदिये। जब हज़रत महेदी अले० असर के वक़्त बाहर तश्रीफ़ लाये तो तमाम असहाब रज़ी० ज़रुरी सामान ख़रीदने के लिये चले गये थे और थोड़े सहाबा हाज़िर थे, देखकर फ़र्माया मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० भाइयाँ कहाँ हैं कि नमाज़ के लिये नहीं आरहे हैं। मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने अर्ज़ किया कि कुछ चीज़ सवीयत हुवी है इसी लिये यह लोग गाँव को ख़रीदी के लिये गये है। आँहज़रत अले० ने फ़र्माया यह चीज़ ऐसी चीज़ है कि हक़ की इबादत से जमाअत से और बन्दए ख़ुदा की सुहबत से बाज़ रखी, अगर वह सब सोने के क़िनार रहते तो किस क़दर बग़ावत और सरकशी हासिल होती।

उसी ज़माने में मियाँ सय्यद अज्मल रज़ी० की उम्र उठारा महीने की थी। बयान किया जाता है कि जब मियाँ सय्यद अज्मल रज़ी० बीबी अलाहदती रज़ी० के शिकम से पैदा हुवे रौशन पेशानी और ख़ूबसूरत थे। हज़रत महेदी अले० ने आपके मर्तबए क़ुर्ब और जमाल (सौंदर्य) के कमाल और आपकी हशमत और मन्सब को देखकर फ़र्माया कि जमाल के पास अज्मल आया इस लिये आपका इस्मे शरीफ़ मियाँ सय्यद अज्मल रखे उसके बाद फ़र्माते थे कि सय्यद अज्मल ऐसा क्योंकर होगा यानि हर दो एक जगह या हम या तुम। शहर माँडो में मियाँ सय्यद अज्मल रज़ी० की रेहलत का वक़्त क़रीब आगया। उसकी तफ़सील यह है कि

माहे रबीउल अव्वल की दूसरी तारीख़ को हज़रत महेदी अले० ने हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० के उर्स मुबारक का खाना गुरोह को खिलाने की तय्यारी शुरु फ़माई। जब क़ैलूला (दोपहर की झपकी) का वक़्त हुआ तो मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० को उर्स मुबारक के खाने की निगरानी के लिये मुक़र्रर करके ख़ुद क़ैलूला के लिये तश्रीफ़ लेगये। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० अपने भाइ मियाँ सय्यद अज्मल को गोद में लिये हुवे देगौं के नज़्दीक खड़े हुए थे कि मियाँ सय्यद अज्मल रज़ी० बाज़ी की हालत में (उछल कर) आतशकदा में गिर गये और अपनी जाने शरीफ़ जानाँ (माशूक़) के हवाले की। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० इस दुःखदायी घटना से बुहत ग़मगीन होकर हुज्रे का दर्वाज़ा बंद करके रोते हुए बैठे थे। हज़रत महेदी अले० यह ख़बर सुनकर मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० के हुज्रे की तरफ़ गये और अपने सामने बुलाकर फ़र्माया कि क्यों ऐसे ग़मगीन और रंजीदा हुवे, अगर सय्यद अज्मल रज़ी० ज़िन्दा रहते तो तुम्हारे मक़ाम को पहुंचते लेकिन अल्लाह तआला ने तुम्हारे मक़ाम का किसी को नहीं पैदा किया है तीन बार मुकर्रर फ़र्माया और बुहत तसल्ली दी। मियाँ सय्यद अज्मल रज़ी० को माहे रबीउल अव्वल की दूसरी तारीख़ को दफ़न किये और इमाम अले० ने अल्लाह तआला के फ़र्मान से फ़र्माया कि यहाँ के तमाम दफ़न किये हुवे लोगौं को जैसा कि फ़र्माने ख़ुदा है *अगर तुम अल्लाह की नेअमतौं का शुमार करोगे तो तुम उसका शुमार न करसकोगे (इब्राहीम-३४)* अज़ आदम ता मादामे आख़िर दुनिया सय्यद अज्मल रज़ी० के वास्ते से अल्लाह तआला ने बख़्श दिया फिर फ़र्माया कि सुब्हानल्लाह किन आसियौं (पापीयौं) को नजात दिया तीन सौ पचास अशख़ास हाफ़िज़े क़ुरआन जो अज़ाब में गिरफ़तार थे वह सब बख़शे गये।

नक़ल है इमाम अले० ने फ़र्माया कि सय्यद अज्मल रज़ी० ने मुन्किर नकीर के चार सवाल का जवाब दिया, रब्बुल आलमीन के तख़्त की तरफ़ दौड़े अर्शे आज़म के पाये को पकड़ा और कहा या अल्लाह अज़ल (सृष्टि काल) और अबद (अनंतकाल) में तेरा हुक्म यह था कि क़ियामत में सय्यद अज्मल का हश्र फ़ुक़रा की इज्माअ के साथ करूंगा मेरी इज्माअ कौन हैं। हुक्म हुआ कि तमाम मदफ़ून जो अज़ाब में मुब्तला हैं तेरी इज्माअ हैं उन सब को हम ने नजात दिया है और तेरी इज्माअ बनाये हैं

उसके बाद हज़रत महेदी अले० शहर माँडो से आगे बढ़े। वहाँ (माँडो) के बड़े वज़ीर जिनका नाम मियाँ अलाहदाद हमीद रज़ी० था उन्हों ने तारिकुद्दुनिया और तालिबे ख़ुदा होकर हज़रत महेदी अले० की सुहबत इख़्तियार की और इमाम अले० बुर्हानपूर पहुंचे और एक रात क़ियाम फ़र्माकर वहाँ से निकले और दौलताबाद पहुंचे। वहाँ एक हफ़ता क़ियाम फ़र्मा कर बाज़ औलिया अल्लाह के मरातिब ज़ाहिर फ़र्माकर सय्यदस् सादात सय्यद राजू के रौज़े से सय्यद मुहम्मद आरिफ़ के रौज़ए अश्रफ़ तक इमाम अले० पाँव के अंगूठे से चल रहे थे और ज़मीन पर पूरा क़दमे मुबारक नहीं रखते थे। मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने अर्ज़ किया मीराँजी क्यों इस तरह चल रहे हो घोड़े पर सवार नहीं होते तो फ़र्माया वहाँ से यहाँ तक तमाम औलिया अल्लाह ऐसे बड़े साहबे कमाल हैं कि औलिया के मरातिब में उनकी कमालियत अज़्हर मिनश् शम्स है और उनकी कमालियत में कोइ फ़र्क़ नहीं है हज़रत सय्यद मुहम्मद आरिफ़ को वहाँ के लोग शेख़ मोमिन कहते थे हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि यह सय्यद हैं उनको सय्यद मुहम्मद आरिफ़ कहना चाहिये और फ़ातिहा पढ़कर उनके सरे क़बर की तरफ़ एक घंटा बैटे

और फिर दिन चढ़े दुगाना अदा करके रवाना हुवे और रौज़ए आरिफ़ की बावली में थूक डाले जिस से बावली का पानी जो बुहत खारा और कड़वा था बुहत मीठा होगया।

दौलताबाद से अहमदनगर आये उस ज़माने में शहर की बुन्याद डाली जारही थी। वहाँ का बादशाह अहमद निज़ामुल मुल्क था उसको ख़बर पहुंची कि यहाँ एक ज़ात फ़ैज़ो बरकत और तासीरात से भरी हुवी आयी है तो बादशाह इमाम अले० की ख़िदमत में हज़िर हुवा और दिल में एक हाजत पोशीदा रख़ता था यानि फ़र्ज़न्द की आरज़ू थी क्योंकि उसको फ़र्ज़न्द नहीं था। हज़रत महेदी अले० ने उस बादशाह के हौसले के मुवाफ़िक़ पंदो नसीहत फ़र्माकर पान का पसख़ुर्दा भी उसको इनायत फ़र्माया। उसी ज़माने में बादशाह की औरत हामिला (गर्भवती) हुवी उसके बाद इमाम अले० वहाँ से रवाना हुवे। मलिक मज़्कूर के लिये लड़का पैदा हुवा जिसका नाम बुर्हान निज़ामुल मुल्क था।

शहर बीदर के हाकिम मलिक बरीद ने ख़्वाब देखा कि एक बड़ा शेर शहर के एक दर्वाज़े से शहर में आया और दूसरे दर्वाज़े से चला गया। इस ख़्वाब की ताअबीर (स्वप्नफल) शेख़ मोमिन तवक्कली ने जो मर्दे सालेह और परहेज़गार थे इस तरह बयान फ़र्माइ कि कोइ वलीए कामिल अली रज़ी० के जैसा थोड़ी मुद्दत में आयेगा। थोड़े ही ज़माने में हज़रत महेदी अले० शरह बीदर में तश्रीफ़ लाये वहाँ के तमाम उलमा और मशाइख़ीन आँहज़रत अले० के कमालात को देखकर आपस में कहने लगे कि शायद महेदी मौऊद यही ज़ात है। चुनांचे उस से पहले आँहज़रत अले० जहाँ कहीं तश्रीफ़ लेजाते और जो शख़्स आपकी ज़ात फ़ाइज़ुल बरकात की मुलाक़ात से मुशर्रफ़ होती यही कहता था कि यह ज़ात महेदी मौऊद है बलिक इमाम अले० के तमाम असहाब रज़ी० जब

कभी मुराक़बा करते ग़ैब की आवाज़ सुनते कि तुम्हारा मुर्शिद जो सय्यद मुहम्मद है हम ने उसको महेदी मौऊद किया है उसकी तस्दीक़ करो। तमाम हालात और मुआमलात जो सहाबा रज़ी० में मज़्कूर होते थे सहाबा रज़ी० हज़रत महेदी अले० से अर्ज़ करते की ऐसा और ऐसा मालूम होता है तो इमाम अले० जवाब में फ़र्माते कि जाओ अपने काम (ज़िक्रे ख़ुदा) मे मश्ग़ूल रहो जो कुछ ख़ुदा चाहेगा ज़ाहिर होगा। इसके बावजूद मियाँ शेख़ मोमिन तवक्कली रहे० जो मशयख़ीन में ज़हदो तक़वा के एतेबार से वहाँ बुहत मश्हूर थे और अकसर हज़रत महेदी अले० को वुज़ू कराकर आपके क़दमे मुबारक का पानी लेकर पीते थे उसकी बरकत से तवक्कली रहे० को कश्फ़ के ज़रीये यक़ीन होगया था कि यही ज़ात महेदी मौऊद है। चुनांचे आपने हज़रत से बुहत आर्ज़ू से इलतिमास (अनुरोध) किया कि हमारे सर पर क़दमरंजा फ़र्मायें। हज़रत महेदी अले० मुस्कुरा कर शेख़ रहे० के हुज्रे में तश्रीफ़ लेगये तो शेख़ रहे० ने इज्ज़ो इन्केसारी (नम्रता) से अर्ज़ किया कि गर्म पानी तय्यार है अगर ग़ुस्ल फ़र्मायें तो सरफ़राज़ी होगी, फ़र्माया बेहतर है। जब इमाम अले० ने जिस्मे मुबारक से लिबास निकाला तो शेख़ रहे० ने आपके सीधे कन्धे पर मुहरे विलायत देखी उसको बोसा दिया आँख रखकर क़दमबोसी करके अर्ज़ किया कि तकलीफ़ देने और गुस्ताख़ी करने का मक़सूद यही था जैसा कि हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० के कत्फ़े मुबारक (कन्धे) पर मुहरे नबूवत थी आप के पास भी मुहरे विलायत होना ज़रुरी है।

मियाँ यूसुफ़ सुहेत रज़ी० ने शहर नहरवाला में कामिल सच्ची तमन्ना से हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि बन्दे को यक़ीन है कि यह ज़ात महेदी मौऊद आख़रुज़ जमाँ है लेकिन एक

मुश्किल बाक़ी रही है कि मुहरे विलायत देखूं तो आँहज़रत अले० ने मियाँ यूसुफ़ के गुमान को दूर करने के लिये तन्हा अपने जिस्मे मुबारक से लिबास निकालकर मुहरे विलायत का मुआयना करवाया। मियाँ यूसुफ़ रज़ी० उसी वक़्त हक़ के जज़्बे में मुस्तग़रक़ होगये और होशियार होकर अर्ज़ किया कि हज़रत दाअवा फ़र्मायें वर्ना मैं लोगौं में ज़ाहिर करदूंगा कि यह ज़ात महेदी मौऊद है। हज़रत महेदी अले० ने अपना पसख़ुर्दा मियाँ यूसुफ़ रज़ी० के मुंह में डाला तो उनके इश्क़ का जोश कम होगया और दूसरे बार जो जोश ग़ालिब हुवा उसी हाल में अपनी जान ख़ुदाए तआला के हवाले की।

शहर बीदर में हज़रत महेदी अले० ने एक औरत से अक़्द फ़र्माया था उसका कारण यह था कि बीबी अलाहदती रज़ी० की वफ़ात के बाद हज़रत का तमाम ख़ानगी काम हज़रत की बड़ी साहबज़ादी बीबी बड़नजी रज़ी० के ज़िम्मे था जो बुहत दुश्वार होगया था लेकिन हिज्रत के वक़्त उस मन्कूहा औरत ने हज़रत के साथ चलने से इन्कार किया। हज़रत अले० ने शाह निज़ाम रज़ी० को फ़र्माकर भेजा कि अगर आयें तो बेहतर है वर्ना मुतल्लक़ा करदें। मन्कूहा औरत मुतल्लक़ा होकर अलाहिदा होगयीं। जब हज़रत महेदी अले० बीदर से कूच फ़र्माने लगे तो क़ाज़ी अलाउद्दीन जो इल्मो अमल में उस्तुवार (मज़बूत) और मर्दे सालेह थे और मौलाना ज़िया जिनको हज़रत अले० ने आशिक़ुल्लाह फ़र्माया और शेख़ बाबू और क़ाज़ी अब्दुल वाहिद जुनेरी ने हातिफ़ (ग़ैबी फ़िरिश्ता) की आवाज़ सुनी कि महेदी मौऊद अले० ज़ाहिर होगया तो उन उलमा ने अपनी क़ज़ाअत को छोड़कर शहर बीदर में हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में हाज़िर होगये और शेख़ मोमिन तवक्कली रहे० भी साथ होगये। हज़रत महेदी अले० ने शेख़ मोमिन रज़ी० को उनकी माज़ूरी के सबब् से मौज़ा उड़म में छोड़कर फ़र्माया कि तुम्हारा मक़सूद पूरा होगया

है तुम इसी जगह रहो तुम हमारे नज़्दीक हैं और हम तुम्हारे नज़्दीक हैं। शेर

अगर तू मुझसे है और यमन में है तो तू मेरे पास है
अगर मुझसे नहीं है और मेरे पास है तो तू यमन में है

यह शेर पढ़कर शेख़ को वहीं रखा और अब शेख़ रहे० का रौज़ा उसी जगह पर है। हज़रत महेदी अले० रवाना होने के बाद शेख़ रहे० ने अपने मुरीदौं से फ़र्माया कि क़ियामत के दिन अल्लाह जल्ला शानहु का इर्शाद होगा कि ऐ मोमिन हमारी दर्गाहे मुक़द्दस में क्या लाया है तो अर्ज़ करूंगा कि या अल्लाह यह दो आँख लाया हूँ जिन से मैं ने महेदी मौऊद अले० की ज़ात को आपकी मुहरे विलायत को देखा और हक़ जाना। शेख़ रहे० ने अपने मुरीदौं से फिर कहा कि जब तुम सुनो कि हज़रत महेदी अले० ने मक्का मुबारका में अपने दाअवए महेदियत को ज़ाहिर फ़र्माया है तो तुम फ़ौरन् हज़रत अले० की ख़िदमत में चले जाओ और आप की तस्दीक़ जो तमाम आलम पर फ़र्ज़ है दिल और ज़बान से अदा करो अगर तस्दीक़ नहीं करोगे तो तस्दीक़ न करने से जो नुक़सान होगा उसको बयान करने की ताक़त ज़बान में नहीं, तस्दीक़ न करने का अज़ाब भुकतोगे।

मौलाना ज़िया का क़िस्सा यह है कि जब हज़त महेदी अले० शहर बीदर से रवाना हुवे तो दो मंज़िल के बाद मौलाना के ख़ादिमौं ने हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में हाज़िर होकर बुहत आजिज़ी और ज़ारी की कि मीराँजी मौलाना के ज़रीये से बुहत से लोगौं की पर्वरिश होती है मेहरबानी फ़र्माकर उनको हमारे साथ करदीजिये। हज़रत अले० ने फ़र्माया लेजाओ। मौलाना ने हज़रत अले० से माफ़ी चाहकर अर्ज़ किया कि ख़ुंदकार के दीदार के बग़ैर हमारी ज़िन्दगी नहीं है। इमाम अले० ने

फ़र्माया कि इन लोगौं की ख़ातिर के लिये जाओ ख़ुदाए तआला तुमको हम से दूर नहीं रखेगा। उसके बाद मौलाना के ख़ादिम उनको पालकी में बिठाकर लेगये। जब मौलाना को मस्त और बेहोश देखे तो उनके हाथ और पाँव में वज़्नी बेड़ी डालकर घर में क़ैद करदिये। एक हफ़्ते के बाद मौलाना ने इश्क़ के जोश से खड़े होकर दर्वाज़े पर हाथ मारा तो दर्वाज़ा और हाथ पाँव की बेड़ी टुकड़े होकर गिर गयी उसी हालत में ख़ादिमौं से भाग कर हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में हाज़िर होगये। जब मौलाना के मुताल्लिक़ीन फिर दौड़े हुए आये तो हज़रत अले० ने फ़र्माया कि हमने पहले उनको तुम्हारी ख़ातिर से दिया था अब यह ख़ुदा के लिये आये हैं हम भी ख़ुदा के लिये उनकी मदद् करेंगे, यह सुनकर वह लोग नाकाम वापस चले गये।

जब हज़रत महेदी अले० काअबा शरीफ़ की तरफ़ रवाना हुवे तो रास्ते में हज़रत सय्यद मुहम्मद गेसूदराज़ रहे० की रुहे मुबारक हाज़िर होकर बुहत आरज़ू की कि हमारे सर पर चलें ताकि हम सरफ़राज़ हों इसलिये कि हम से सहवन् ख़ता हुवी थी कि हमने तीन पहर हज़रत अले० की महेदियत का दाअवा किया था और होशियार होने के बाद हक़ की तरफ़ रुजूअ हुआ लेकिन शरमिन्दगी बाक़ी है जबतक आप मेरे सर पर क़दमे मुबारक नहीं रखेंगे शरमिन्दगी दूर नहीं होगी। लिहाज़ा इमाम अले० उनकी बुहत कोशिश और इलतिमास की वजह से गुलबर्गा की तरफ़ रवाना हुवे। किसी ने कहा मीराँजी यह रास्ता दर्या का नीहं है बल्कि गुलबर्गा का है तो फ़र्माया मैं जानता हूँ लेकिन सय्यद मुहम्मद रहे० की कोशिश के वास्ते से जारहा हूँ। उसके बाद हज़रत महेदी अले० ने मियाँ शेख़ भीक रज़ी० से फ़र्माया कि कुछ देखते हो तो अर्ज़ किया कि महेदी अले० के सदक़े से देखता हूँ कि सय्यद

मुहम्मद गेसूदराज़ रहे० शर्बती रंग का कुर्ता और हरी टोपी पहने हुवे ख़ुंदकार के धोड़े की लगाम अपने हाथ में पकड़े हुवे जारहे हैं। उसी तरह गुम्बद के एहाते के दर्वाज़े तक पहुंचे और जूते पहने हुवे गुम्बद में जारहे थे तो वहाँ के ख़ादिमौं ने अर्ज़ किया कि यह अल्लाह के वली हैं आप जूते निकालदें। इमाम अले० ने फ़र्माया कि मैं तेरी बात सुनूं या तेरे पीर की बात सुनूं। बयान करते हैं कि उस वक़्त गुम्बद के दर्वाज़े को क़ुफ़ल लगा हुवा था जो ख़ुद बख़ुद खुल गया जब हज़रत महेदी अले० गुम्बद में दाख़िल हुवे तो फिर दर्वाज़ा बंद होगया। दोपहर तक गुम्बद में दो आदमियौं की गुफ़्तगू की तरह आवाज़ आरीह थी तमाम लोग सुनते थे दोपहर के बाद फिर दर्वाज़ा ख़ुला। इमाम अले० ने बाहर तशरीफ़ लाकर फ़र्माया कि हम औलिया अल्लाह की रिआयत जान्ते हैं लेकिन सय्यद मुहम्मद रहे० की कोशिश यह थी कि नाअलैन मुबारक की गर्द उनकी क़बर पर पहुंचे और वह बख़शे जायें।

हज़रत महेदी अले० सय्यद मुहम्मद रहे० के रौज़े से निकलकर हज़रत शेख़ सिराजुद्दीन (जुनेदी) रहे० के रौज़ए मुबारक में एक हफ़्ता क़ियाम फ़र्माया। सय्यद मुहम्मद रहे० के फ़र्ज़न्दौं ने इमाम अले० से ज़ियाफ़त की दर्ख़ास्त की तो फ़र्माया कि बन्दा मख़दूम से रुख़सत होकर आया है ज़ियाफ़त की कोई हाजत नहीं। मियाँ चाँद महाजिर रज़ी० ने अर्ज़ किया कि यह क़बर सय्यद मुहम्मद रेह० क़े फ़र्ज़न्द की है जिनका नाम शाह मकतू था मख़दूम रहे० ने नजात दिलाइ है। हज़रत अले० ने फ़र्माया कि हक़ तआला ने सय्यद मुहम्मद के दिल की तसकीन के लिये इस तरह दिखलाया है लेकिन एक दीवार की आड़ में हमेशा के अज़ाब में गिरफ़तार है हरगिज़ नजात न होगी।

वहाँ से बीजापूर आये और एक कंगूरे की मस्जिद में चंद रोज़ क़ियाम फ़र्माकर वहाँ से रवाना हुवे और उस वक़्त फ़र्माया कि यह

ज़मीन सख़्त है और इस में रहने वाले बद बख़्त हैं। फिर बीजापूर से डाबोल गये वहाँ देखा कि लोग जहाज़ में बेठ रहे हैं उस वक़्त आप ने यह बैतें (शेर) पढ़ीं।

ऐ हज् को जाने वाली क़ौम कहाँ हो कहाँ हो
माशुक़ तो यहीं है यहाँ आवो यहाँ आवो
जो लोग ख़ुदाएतआला के तालिब हैं चले आवो
जिनको ख़ुदा की तलब नहीं है मत आवो

उसके बाद इमाम अले० सत्तर अशख़ास के साथ जो अल्लाह के तालिब और अल्लाह के दीदार से मुशर्रफ़ थे जहाज़ में बैठे। चंद मांज़िल के बाद मछली का बड़ा तूफ़ान बर्पा हुवा मछली एक बड़े पहाड़ की जैसी थी अपना सर ऊपर लाई इज़रत अले० ने कश्ती के किनारे तश्रीफ़ लेजाकर देखा मछली भी तीन बार पानी से अपना सर ऊपर करके देखी और हज़रत अले० ने दस्ते मुबारक (हाथ) से मछली को चले जाने के लिये इशारा फ़र्माया। बाज़ कहते हैं कि हज़रत महेदी अले० ने अपने दहने मुबारक का लुआब (राल) दर्या में डाला मछली खाकर चलेगइ। मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने अर्ज़ किया मीराँजी यह क्या था तो फ़र्माया कि यह मछली सातवें दर्या के पीछे पैदा की गयी है उस से अल्लाह तआला का वादा था कि हम तुझको मुहम्मद सल्ला० की विलायत के ख़ातिम को दिखायेंगे पस मछली अपने वादे के मक़ाम पर आकर हमको देखती है। बयान करते हैं कि वह मछली हज़रत यूनुस अले० को अपने सीने में अमानत रखी थी इस लिये उस से ख़ुदाए तआला का वादा था कि तूने हमारे बन्दे की हिफ़ाज़त की है हम तुझको हमारे नबी सल्ला० की विलायत के ख़ातिम को दिखायेंगे। उसके बाद अदन के मक़ाम पर पहुंचे वहाँ तीन दिन क़ियाम फ़र्माकर फिर जहाज़ पर सवार हुए। जब एहराम

के मक़ाम पर पहुंचे तो एहराम बाँधकर फ़र्माया कि हम ने एहराम बाँध लिया है ख़्वाह कोइ हाजी कहे या ग़ाज़ी।

जब बैतुल्लाह शरीफ़ के तवाफ़ में शरीक हुवे तो बन्दगी मियाँ गिज़ाम रज़ी० से पूछा कि तुम पहले काअबा को जो आये क्या अलामत देखी तो कहा उस वक़्त मैं ने काअबा को साहब के बग़ैर देखा था और इस वक़्त साहब के साथ देख रहा हूँ। इमाम अले० ने फिर फ़र्माया कि कुछ देख रहे हो तो कहा कि काअबा हमारे ख़ुंदकार का तवाफ़ कर रहा है और हमारे ख़ुंदकार को दिखा कर कह रहा है कि इबादत करो इस घर के रब की। उसके बाद एकदिन जो पीर का दिन था हज़रत महेदी अले० ने अल्लाह के हुक्म से रुकन और मक़ाम और हजरे असवद के दरमियान बुलंद आवाज़ से लोगौं के मजमा में रसूलुल्लाह सल्ला० की हदीस पढ़कर महेदियत का दाअवा फ़र्माया कि ''जिस ने मेरी पैरवी की वह मोमिन है।'' बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० क़ाज़ी अलाउद्दीन रज़ी० और एक एराबी बयान करते हैं कि वह ख़ाजा ख़िज़र अले० थे और एक रिवायत से शाफ़ई के मुसल्ले के इमाम थे उन हज़रात ने खड़े होकर बुलंद आवाज़ से कहा कि हम आपकी इत्तिबाअ करते हैं। बयान करते हैं कि हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि शर्अ में क़ाज़ी कितने गवाह पर राज़ी होता है तो क़ाज़ी अलाउद्दीन रज़ी० ने जवाब दिया कि दो गवाह पर राज़ी होता है उसके बाद इमाम अले० अपने मक़ाम पर आगये। वहाँ के ख़लायक़ (लोग) आपस में कहने लगे कि इस मर्द ने नबी सल्ला० की तरह बड़ी बात कहदी अब तकरार करनी याहिये फिर आपस में कहने लगे कि कोइ शख़्स दाअवे के वक़्त सवाल नहीं कर सका तो अब भी सवाल नहीं कर सकता। उसके बाद इमाम अले० ने आदम अले० और हव्वा रज़ी० की क़ब्रौं की तरफ़ जाकर ज़ियारत फ़र्माइ। हज़रत आदम अले० की अर्वाह ने आपको

अपनी गोद में लिया और बुहत ख़ुश हुवे और कहा कि हम तुम्हारी आमद के मुन्तज़िर थे दीन बुहत कुम्हला गया था, रुसूम और बिदअत ज़ाहिर होगये ऐ दीन के सुतून और ऐ दीन के ताज अच्छा आया और सफ़ाइ और रौशनी लाया। हव्वा रज़ी० ने भी अपनी गोद मे लेकर कहा कि ऐ मेरे दिल के मेवे ऐ मेरे आँखौं की ठडंक और ऐ दीन के इमाम और बुहत तज़र्रो और ज़ारी की। जब हज़रत महेदी अले० तवाफ़ से बाहर आये तो सहाबा रज़ी० ने पूछा कि आपकी पुष्ते मुबारक किस वजह से भीग गयी है तो फ़र्माया हव्वा रज़ी० ने ज़्यादा ख़ुशी से जो ज़ारी (रेना) की यह उसकी तरी है। वहाँ से इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अले० के तवाफ़ को जाकर ज़ियारत फ़र्माइ। इब्राहीम अले० की अर्वाह भी बुहत ख़ुश हुवी और कही कि हम तेरी राह देख रहे थे इस लिये कि इस्लाम में रस्मो आदतो बिदअत और ज़लालत (गुमराही) ज़्यादा पैदा होगयी है अच्छा आया और हमारे सीने को क़ुव्वत बख़शा।

चंद रोज़ के बाद इमाम अले० के फ़ुक़रा पर कामिल फ़क़रो फ़ाक़ा पड़ा जो सब को मुज़्तर (बेचैन) करदिया। मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने इमाम अले० से अर्ज़ किया कि तमाम सहाबा रज़ी० मुज़्तर होगये हैं तो फ़र्माय क्या करोगे तो कहा अगर इजाज़त हो तो जो चीज़ इज़्तिरार (मजबूरी) के बाद मुबाह (जाइज़) है देखी जायेगी, फ़र्माया गिड़गिड़ाना नहीं चाहिये। जिस वक़्त मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० बाज़ार गये तो शरीफ़े मक्का भी बाज़ार में आया तो उस से कहा कि तेरे पास कुछ अल्लाह का हक़ है तो कहा हाँ फिर कहा कई फ़ुक़रा फ़क़रो फ़ाक़ा से मुज़्तर हैं तो उसने पाँच सौ इब्राहीमी दिये। मियाँ सलामुल्लाह रज़ी० ने इमाम अले० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि ख़ुदाए तआला एक चीज़ दिया है तो इमाम अले० ने फ़र्माया कि यह अल्लाह का दिया हुवा नहीं है बल्कि तुम अल्लाह से चाहे। पस गंजी

बनाकर सहाबा रज़ी० को पिलाये क्योंकि फ़ाक़े से उनके हलक़ बंद होगये थे और सब पर सात आठ रोज़ मुतवातिर फ़ाक़े में गुज़रे थे। उसके बावजूद जब हज़रत महेदी अले० से अर्ज़ किये कि हज़रत अले० पर बुहत रोज़ फ़ाक़े में गुज़रे ख़ुंदकार के लिये भी कोइ चीज़ लाते हैं तो फ़र्माया कि बन्दा मुतवक्किल है बन्दा नहीं खायेगा तुमको इज़्तिरार पहुंचा है और मुझको नहीं पहुंचा है फिर फ़र्माया जान रखो कि बन्दे को बशर की एहतियाज (आवश्यकता) नहीं है लेकिन शरीअते रसूल सल्ला० का अदब करने के लिये सर्फ़ किया जायेगा। उसी तरह सात या नौ माह और बाज़ कहते हैं कि इमाम अले० ने काअबा शरीफ़ में तीन महीने क़ियाम फ़र्माया। उसके बाद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० की ज़ियारत का इरादा फ़र्माया और ऊंट वालौं को किराया भी देदिये थे लेकिन हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० की रुहे मुक़द्दस से मालूम हुआ कि ऐ सय्यद मुहम्मद तुम गुज्रात के शहरौं की तरफ़ जावो तुम्हारी महेदियत की दाअवत गुज्रात में ज़ाहिर होगी। पस ऊंट वालौं से किराये की रक़म वापस लेकर कश्ती वालौं को दिये और बहरी (समुद्रि) सफ़र करने वालौं के साथ रवाना हुवे।

कश्ती में भी हज़रत महेदी अले० के सहाबा रज़ी० पर इज़्तिरार (व्याकुलता) हुआ, मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने अर्ज़ किया कि इस जहाज़ में लोगौं के लिये गंजी और पानी मुक़र्रर है अगर इजाज़त हो तो लेता हूँ, फ़र्माया अगर तुम मुज़्तर होगये हो तो मुबाह है फिर अर्ज़ किया कि हज़रत अले० के क़ालिबे मुबारक (शरीर) मे खाने की क़िसम की कोइ चीज़ बुहत मुद्दत से नहीं पहुंची अगर इजाज़त होतो हज़रत के लिये कोइ चीज़ लाऊंगा, फ़र्माया बन्दा मुज़्तर नहीं हुवा है जब बुहत कोशिश किये तो फ़र्माया बन्दा मुतवक्किल है। जब मंज़िल को पहुंचने के लिये दर्या का रास्ता तीन रोज़ बाक़ी था तेज़ हवा चलने लगी उस कारण से कश्ती

के मुसाफ़िर बुहत परेशान होगये। उस वक़्त हज़रत महेदी अले० बतरीक़े ख़्वाब लेटे हुए थे उस वक़्त मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने परेशानी को बर्दाश्त न करके हज़रत अले० की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हवा का शदीद तूफ़ान पैदा होगया है फ़र्माया बन्दा क्या करे, अर्ज़ किया कि ख़ुंदकार फ़र्माते थे ग़ैब के भेदौं के मख़्ज़न (ख़ज़ाना) की कुंजियाँ मेरे हाथ में हैं, फ़र्माया साहब ख़ुदाए तआला एक है उस ने तमाम कुंजियाँ ग़ुलाम के हवाले किये हैं, साहब की रज़ा की राह देखे या ख़ुद खोले। उसके बाद इमाम अले० ने खड़े होकर चारों तरफ़ नज़र डाली तो तेज़ हवा धीमी होगयी। उसके बाद फ़र्माया कि तुम ने बन्दे का ऐसा फ़ज़ल जाना हर वह जहाज़ जिस में बन्दए ख़ुदा रहता है उस जहाज़ में बैठने वाले हरगिज़ नहीं डूबेंगे। हवा को ख़ुदा तआला का हुक्म था कि जहाज़ के तीन दिन तीन रात के रास्ते को पौने चार घंटे में पहुंचादे यानि मुद्दत होगयी है हमारा बन्दा पानी के सिवा जो दो बार खारी दर्या में मीठा पानी उस बन्दे के लिये लाये थे कोइ चीज़ नहीं खाया उसके बाद महेदी अले० देवबन्दर पहुंचे और वहाँ से शहर अहमदाबाद तश्रीफ़ लेगये।

अहमदाबाद में हज़रत महेदी अले० ने ताज खाँ सालार की मस्जिद में अठारा महीने क़ियाम किया वहाँ बुहत से लोग मोतक़िद होगये। नक़ल है कि एक बाग़बान (माली) का लड़का जिसके बाप का इन्तेक़ाल होगया था बुहत जाज़िब था। उसके जज़्बे का कारण यह था कि एक मुश्रिक ज़ुन्नारदार मरगया और उसकी औरत उसके साथ जलगयी। उस वक़्त यकायक एक दूसरा मर्द मुश्रिकौं के लिबास में ज़ाहिर हुवा वह मर्द हज़रत ख़ाजा ख़िज़र अले० थे आपने बुलंद आवाज़ से आह मारी और रोते हुवे निहायत आजिज़ी से कहा कि या अल्लाह तेरे इश्क़ की आग में जलने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा ताकि मैं तेरी मुहब्बत में जानो तन निसार करूँ और तेरे दीदार की कोशिश करूँ और तेरे इश्क़ का प्याला नोश

करूँ और तेरी अता के दामन का लिबास पहनूं यह औरत अपनी जान जानबूझकर उस मुर्दे पर फ़िदा करदी और उसकी मुहब्बत में जो इश्क़े मजाज़ी (अवास्तविक प्रेम) की मुहब्बत है अपने जिसम को जलाकर राख करडाली। उसी तरह ख़ुदाए तआला के लिये जो हर चीज़ का पैदा करने वाला और हर ज़िन्दा को रिज़्क़ देने वाला और हमेशा से है उसका मुल्क वह एक है उसका कोइ शरीक नहीं उसी की ज़ात है जो शख़्स अपनी जान और तन को फ़िदा करे तो किस क़दर लज़्ज़त और मर्तबा पाये, अजब ग़फ़लत है कि लोग उस सोख़ता (जली हुवी) औरत से भी कम हिम्मत होगये हैं उनपर अफ़सोस बल्कि हज़ार अफ़सोस है। ऐसी नसीहत करके हज़रत ख़ाजा ख़िज़र अले० बाग़बान के लड़के की नज़र से ग़ायब होगये। लड़का ख़ाज़ा ख़िज़र अले० की इन बातौं को सुनकर हमेशा के जज़्बे में बेहोश रहा। उसके आबा व अज्दाद (बाप दादे) मुश्रिक और बाग़बान थे झाड़ौं को पानी देने के लिये उस से कहते थे और यह झाड़ों के नीचे हक़ के जज़्बे में मुस्तग़रिक़ होकर बेहोश रहथा था। उसके चचा और भाई आकर देखते कि इस दुनिया से बेहोश है तो मुक्खा मार कर हुश्यार करके कहते कि सारा पानी ज़ाये करदिया किसी दरख़्त को नहीं पहुंचाया अगर फिर पानी ज़ाये करेगा और दरख़्तौं को नहीं पहुंचायेग तो हम बुहत मारेंगे। जब वह लोग इस तरह कहकर चले जाते तो यह लड़का फिर पहले के जैसा बेहोश होजाता यहाँ तक कि उसका चचा उस से नाउमीद होकर चलादिया। पस उसको भी यही मज़ूंर था कि उनकी क़ैद से बेक़ौद होजाये और अल्लाह तआला के दीदार के लिये पूरी कोशिश करे।

हासिले कलाम इस से पहले उस ने सुना था कि अल्लाह तआला का एक घर है उस घर में अल्लाह को पासकते हैं उस घर के सिवाय

दूसरे घर में अल्लाह का दीदार मुहाल है इस लिये उसने मक्का मुबारका को जाने की निय्यत की और मक्का के रास्ते पर क़दम रखा। चंद मंज़िल तै होने के बाद एक मर्द फ़ैज़ और बर्कत से भरा हुवा पहले के जैसा मुश्रिकौं की सूरत में उसके सामने आकर कहा कि मैं तुझको परेशानहाल देखता हूँ तेरी हाज़त क्या है और तेरा मत्लूब कौन है तो उसने कहा हमारा मक़सूद हमारा ख़ालिक़ है जबतक मैं अपने ख़ालिक़ को नहीं देखूंगा मेरे दिल को सुकून नहीं मिलेगा। ख़ाजा ख़िज़र अले० ने फ़र्माया मैं तुझको तेरे ख़ालिक़ को दिखाता हूँ फिर उसका हाथ पकड़कर पानी के किनारे लेगये और कहा जिस तरह मैं ग़ुस्ल करता हूँ तू भी कर और ख़ुद बुज़ू किये और उसको बुज़ू कराये उसके बाद कहा जैसा मैं सज्दा करता हूँ तू भी कर दोनों ने दुगाना अदा किया। फिर ख़ाजा ख़िज़र अले० ने कहा बोल अल्लाह के सिवाय कोइ माअबूद नहीं है मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। उसने जवाब दिया कि यह कैसे होगा हमारे बाप दादा ने हरगिज़ ऐसा नहीं कहा। ख़िज़र अले० ने कहा अगर तू पर्वरदिगार का दीदार चाहता है तो ऐसा बोल वर्ना तू ख़ुदा को हरगिज़ नहीं देखेगा चूंकि वह अल्लाह का सच्चा तालिब था *ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह कहा।* उसके बाद उस मर्द ने कहा तू हमेशा यही कहता रह बेशक तू अल्लाह को देखेगा। उस लड़के ने हज़रत ख़िज़र का दामन मज़बूत पकड़कर कहा कि अब जो कुछ मेरे दिल में आये तेरे साथ करूंगा वर्ना तूने जैसा कि कहा था ख़ुदा को दिखा। ख़िज़र अले० ने जवाब दिया कि अगर तू सच्चा तालिब है तो यहाँ से अहमदाबाद जा क्योंकि वहाँ ताज खाँ सालार की मस्जिद में हज़रत मीराँ सय्यद मुहम्मद अले० चंद रोज़ से मुक़ीम हैं अगर तू ख़ूदा को देखना ही चाहता है तो वही ज़ात तुझे ख़ुदा को दिखायेगी वर्ना तू हरगिज़ नहीं देखेगा यह कहकर ख़ाजा ग़ायब होगये।

उसके बाद वह आशिक़ सरमस्त फूलौं के दो हार हमायल और सहरा लिया हुआ अहमदाबाद आया और हज़रत महेदी अले० को अल्लाह तआला का फ़र्मान पहुंचा कि हमारे दीदार के लिये हमारा बन्दा आता है उसका इस्तिक़बाल कर। हज़रत अले० चंद क़दम उनके सामने गये और आपकी नज़रे मुबारक जूंही उनपर पड़ी उसी वक़्त गिरते पड़ते आकर हज़रत अले० के क़दमे मुबारक पर सर रखदिया। आपने उनका सर उठाकर अपनी गोद में लिया और हाथ पकड़कर मस्जिद में लाकर ज़िक्रे ख़फ़ी की तल्क़ीन फ़र्माइ। जब आपकी ज़बाने शरीफ़ से ला इलाह इल्लल्लाह का कलिमा निकला तो वह उसी वक़्त दीदारे ज़ुलजलाल से बेपर्दा मुशर्रफ़ हुवे और बेहोश होकर गिरे। हज़रत ने हार हमायल और सहरा अपने दस्ते मुबारक से उनके सर और गले में बाँधकर मियाँ हाजी नाम रखा, तीन रोज़ जिन्दा रहे उसके बाद जान हक़ के हवाले की। उनकी ज़ियारत के लिये जो फूल क़बर पर डाले गये चालीस दिन और चालीस रात ताज़े थे। उन फूलौं की ताज़गी की ख़बर हज़रत महेदी अले० को पहुंची तो फ़र्माया कि उनकी क़बर को मेटदो वर्ना मख़लूक़ परस्तिश करेगी यकायक पानी आकर क़बर को मेटदिया।

जब हज़रत महेदी अले० की विलायत का ज़ुहूर (की शुहरत) उस शहर में बुहत हुवा तो उमरा, तिजारत पेशा, पर्दा नशीन औरतें, बादशाहान, उलमा और मशायख़ीन जो पीरी मुरीदी करने वाले थे हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुरीद हुवे तारिके दुनिया और तालिबे दीदारे ख़ुदा होकर हज़रत की सुहबत में रहने लगे इस लिये ज़ाहिर प्रस्त मशायख़ीन और बेअक़्ल उलमा और ग़फ़लत की शराब पिये हुए बड़े लोग बुग़्ज़ो हसद से हज़रत अले० से सवाल किये जैसा कि मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी रहे० ने *क़ुतूहाते मक्कीया* में फर्माया

''जब इमाम महेदी अले० निकलेंगे तो उनके खुले दुश्मन ख़ुसूसन् उलमा होंगे।'' सवाल यह है कि अगर किसी की औरत शौहर की ज़िन्दगी में शौहर के हुक्म के बग़ैर जाकर दूसरे से अक़्द करले तो क्या शर्आ मुहम्मदी में जाइज़ है तो इमाम अले० ने जवाब दिया कि अगर शौहर नामर्द है तो जाइज़ है, तअज्जुब है कि जान कर भी अपनी लड़की को नामर्द से क्यों अक़्द करते हैं। उस औरत के अज़ीज़ शर्अ के हुक्म से जुदा करते हैं या नहीं, दियानतदार उलमा और मशायख़ीन रवा रखते हैं या नहीं। अगर बाज़ार में कोइ चीज़ अच्छी होने के गुमान से ख़रीदते हैं और उसमें शरई ऐब ज़ाहिर होजाये तो वापस देते हैं या नहीं। कमीनी दुनिया के मुआमले में यह तमाम गर्दिश रवा रखते हैं, अगर कोइ ख़ुदा का तालिब है और एक जगह उसकी हाजत पूरी नहो तो वह दूसरी जगह अपने मक़सूद को पहुंचे तो जाइज़ नहीं रखते क्या अच्छी है ख़ुदा की तलब कि दुनिया की तलब से कम दर्जा हुइ अगर एक जगह हासिल नहो तो दूसरी जगह हासिल करने को रवा नहीं रखते।

जब अलमा और मशायख़ीन हज़रत महेदी अले० की तक़रीर में आजिज़ हुवे तो सुल्तान महमूद बादशाहे गुजरात के पास जाकर शिकायत की और बाज़ ने अर्ज़ियाँ (प्रार्थना पत्र) लिखकर बादशाह के पास रवाना किये कि यह सय्यद जिनका नाम सय्यद मुहम्मद है बड़ा दाअवा करता है और अकसर लोगौं पर्दानशीन औरतौं और लश्करीयौं को मुरीद करके तर्के दुनिया का हुक्म करता है और बुहत से लोग तर्के दुनिया करके मख़्लूक़ से अलाहेदगी इख़तियार करके सय्यद मुहम्मद की सुहबत में रहते हैं, यह सब उस सलातीन पनाह के लश्कर की शिकस्त है और सय्यद मुहम्मद ने तमाम लोगौं को फ़रेफ़ता करलिया है, हक़ायक़ का बयान करता है हर वह शहर जिस में हक़ायक़ का बयान

होता है उस शहर के हाकिम के लिये बुराइ दरषेश (सामने) है। सुल्तान ने पूछा क्या करना याहिये तो उलमा ने कहा सय्यद मुहम्मद को शहर से बल्कि अपनी हुकूमत के मुक़ामात से निकालदेना चाहिये इस लिये कि इख़राज की सूरत यह है कि इख़राज क़त्ल से ज़्यादा सख़्त है। सुल्तान ने उलमा के कहने पर मोतसिब (सामप्रदायिक) होकर एतेमाद खाँ को जो बड़े अमीरौं से था हज़रत महेदी अले० के इख़राज के लिये चापानीर से अहमदाबाद रवाना किया। जब एतेमाद खाँ हज़रत अले० की ख़िदमत में आया तो सुल्तान का फ़र्मान पेश करके अर्ज़ किया कि सुल्तान का हुक्म है कि हज़रत अहमदाबाद से निकलकर किसी दूसरी जगह सुकूनत फ़र्मायें। इमाम अले० ने जवाबन फ़र्माया कि तेरे बादशाह का फ़र्मान तेरे लिये है जिस वक़्त मेरे बादशाह का फ़र्मान होगा चले जाऊंगा। फिर फ़र्माया यह नादान लोग क्या जानें कि शरीअत का बयान क्या है और हक़ीक़त का बयान क्या है, बन्दा मुस्तफ़ा सल्ला० की शरीअत की पैरवी करने वाला है शरीअत का बयान करता है, रसूलुल्लाह सल्ला० ने जिस जगह क़दम रखा बन्दा भी वहीं क़दम रखता है, हक़ायक़ ऐसी चीज़ है अगर बन्दा हक़ायक़ बयान करे तो अकसर लोग नहीं जानते हैं जल जायेंगे।

उसके बाद हज़रत महेदी अले० नहरवाला की तरफ़ रवाना हुवे और मौज़ा (गाँव) साँतेज मे ठहर गये। बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० जो क़ौम बन्यानी से बड़े अमीरज़ादे थे बुहत चालाक सितमगार और ख़ूंख़ार थे अकसर लोग उनके ज़ुल्म से न्याय चाहते थे। एक रोज़ आपने हबशी के लड़के को क़त्ल करदिया उसका बाप बादशाह से फ़र्याद किया। बादशाह ने अपने लोगौं को सिपाहीयौं के गुरोह के साथ जो जंग आज़माये हुए सात सौ थे आपकी गिरफ़तारी के लिये रवाना किया। जब यह ख़बर उनको मिली तो पच्चीस साथियौं के साथ भाग कर मौज़ा साँतेज की

तरफ़ रवाना हुवे। बादशाह की फ़ौज उनके पीछे आरही थी जब आप अपने साथियौं के साथ साँतेज के क़रीब पहुंचे तो अज़ाँ की आवाज़ उनके कान में पहुंची तो अपने दोस्तौं से कहा कि ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त होगया है मुअज़्ज़िन की आवाज़ का असर दिल में बुहत ग़ल्बा किया है लिहाज़ा हम ठहर कर नमाज़ पढ़ते हैं। दोस्तौं ने बिग़ड़कर कहा कि यह क्या नमाज़ का वक़्त है दुश्मन पीछे आरहा है अगर नमाज़ में मश्ग़ूल होंगे तो गिरफ़तार होजायेंगे। जब आपने देखा कि अहबाब घोड़ौं से नीचे नहीं उतरते तो ख़ुद घोड़े से उतर कर नमाज़ में मश्ग़ूल होगये। उसी वक़्त बादशाह का लश्कर क़रीब पहुंचा और उनको पहचान्ने की बुहत कोशिश की मगर नहीं पहचान सके क्योंकि उनका और उनके घोड़े का रंग बदल गया था फिर सेना ने उन सवारौं का पीछा किया जो फ़रार होगये थे। आप नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मौज़ा साँतेज पहुंचे और किसी से पूछा कि यहाँ किस ने अजाँ दी उसने जवाब दिया कि एक जमाअत है उनका सर्दार सय्यद है जिसने मक्का मुअज़्ज़मा में दाअवए महेदियत किया है अब एतेमाद खाँ ने उनको बादशाह के हुक्म से शहर अमदाबाद से निकाल दिया है अज़ाँ उसी जमाअत में हुइ।

हज़रत बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० उसी वक़्त हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में पहुंचे, इमाम अले० के एक सहाबी रज़ी० दर्वाज़े पर खड़े थे उनसे पूछा कि मैं हज़रत अले० के क़दमौं को देखने का इरादा रखता हूँ तो उस सहाबी ने हज़रत से अर्ज़ किया हुक्म हुआ कि आने दो। जब ख़िदमत में गये और उस ज़ातेहमीदा सिफ़ात पर नज़र पड़ी तो हज़रत अले० ने फ़र्माया कि आवो मियाँ नेअमत पुर नेअमत, उसी वक़्त गिरते पड़ते जाकर हज़रत के क़दमे मुबारक पर सर रखदिया। हज़रत महेदी अले० ने उनका सर उठाकर अपनी गोद में

लेलिया, शाह नेअमत रज़ी० उसी वक़्त तारिके दुनिया तालिबे ख़ुदा होकर तायब होगये और अपनी तमाम ख़ताओं को ज़ाहिर किया और कहा कि मुझ से बढ़कर गुनाहगार कोइ नही, मैं अपने गुनाहों को किस तरह मआफ़ करासकता हूँ। हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि ख़ुदाए तआला ग़फ़ूरुर रहीम है ख़ुदा के गुनाह जो किये हो ख़ुदा से मआफ़ कराव और मख़लूक़ के गुनाहों को मख़लूक़ से मआफ़ कराव। इस नसीहत को सुनकर हज़रत अले० से रुख़सत होकर ख़ून का बदला लेने वालों के पास तश्रीफ़ लेगये और उस हबशी के घर को (जिसके लड़के को क़त्ल किये थे) पहुंचकर कहला भेजा कि तेरे लड़के का ख़ूनी ख़ून का बदला अदा करने के लिये आया है। जब हबशी बाहर आया तो उनकी हालत कुछ और ही देखी और कहा तू वह नेअमत नहीं है (जो पहले था) बल्कि ऐ नेअमत तू नेअमत से भरा हुआ आया है लेकिन एक शर्त है कि जहाँ तूने यह नेअमत पाइ है मुझको भी वहाँ लेजा ताकि मैं अपने लड़के के ख़ून को मआफ़ करूँ उसके बाद हबशी आपके साथ होगया। इस तरह आप हर दावेदार के घर पर जाते और कहते कि तुम अपना बदला मुझ से लो। जब उन लोगों ने आपकी हालत बदली हुइ देखी तो अपने दाउवों से बाज़ आये उसके बाद आप ने अपने घर तश्रीफ़ लेजाकर घर वालों से कहा कि ख़ुदा की पनाह रहे और मैं शाहे ज़माँ यानि इमाम अले० की मुलाज़मत में जाता हूँ और अपनी औरत का इख़तियार उसके हाथ में देकर और अपने दूसरे तक़ाज़ों से फ़ारिग़ होकर इमाम अले० की ख़िदमत में रवाना हुवे।

हज़रत महेदी अले० शहर नहरवाला में तश्रीफ़ लाये और शहर में दाख़िल होने से पहले फ़र्माया कि नहरवाला से इश्क़ की बू आती है और जब शहर में दाख़िल हुवे तो फ़र्माया कि नहरवाला मोमिनों का

माअदिन (खान) है। बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० शहर नहरवाला में हज़रत अले० की ख़िदमत में पहुंचे। वहाँ हज़रत अले० ने बीबी मलकान रज़ी० से अक़्द फ़र्माया वह भी बन्यानी क़ौम से थीं और उनके वालिद जो सज्जादा थे वफ़ात पाचुके थे। एक रोज़ मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने हज़रत महेदी अले० से अर्ज़ किया कि कोइ शख़्स बच्पन से अल्लाह का तालिब है और दूसरा तारिके दुनिया होकर तालिबे ख़ुदा हुवा है उन दोनों के मरातिब में क्या फ़र्क़ है तो इमाम अले० ने फ़र्माया ज़मीनो आसमान की तरह बुहत फ़र्क़ है दस दुनिया में छोड़ेगा तो सत्तर आख़िरत में पायेगा जिस क़दर छोड़ेगा उसी क़दर पायेगा। उसके बाद मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० कमर बाँधकर मुसल्लह (हथ्यार बंद) होकर इजाज़त के बाद सवार होने के लिये हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में हाज़िर हुए उस वक़्त आप नमाज़े ज़ुहर के लिये वुज़ू फ़र्मारहे थे। रुख़सत का मारुज़ा पेश करने से पहले फ़र्माया कि ख़ुदा की पनाह रहे जिस जगह में रहो यादे ख़ुदा में रहो ख़ुदा के लिये आसान है कि फिर मुलाक़ात करादे। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० हज़रत अले० की क़दम बोसी करके चापानीर की तरफ़ रवाना हुवे जब शहर के क़रीब पहुंचे तो मियाँ सय्यद उसमान जो बड़े अमीरौं से थे और हज़रत महेदी अले० से तरबियत भी हुए थे उनको ख़बर मिली कि मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० तश्रीफ़ लाये हैं तो दौड़े हुवे आकर तमाम ज़रुरी सामान मुहय्या करदिये और कामिल वकालत करके सुल्तान महमूद से कहा कि मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० आये हैं। बादशाह ने एतेमादुल मुल्क और अज़्मतुल मुल्क को भेजकर बुल्वाया और मुलाक़ात के बाद बुहत ख़ुश होकर चालीस हज़ार अश्रफ़ी का मन्सब और बाज़ की रिवायत से साठ हज़ार अश्रफ़ी का मन्सब दिया।

मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० दो साल वहाँ थे और अपना अक़्द सय्यद उसमान की लड़की से किया। उसका क़िस्सा यह है कि हज़रत महेदी अले० ने मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० को ख़िदमत के लिये एक ख़िदमतगार दिया था जिसका नाम ख़ूब कलाँ था वह ऐसी आशिक़ थी कि जबतक मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० उसकी नज़र के सामने रहते चैन से रहती और जब नज़र से दूर होतो बेचैन होजाती। एक रोज़ हज़रत महेदी अले० ने तमाम मुहाजिरीन को मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० के साथ अहमदाबाद में मौलाना अब्दुल वाहित ज़ैद के मकान को रवाना फ़र्माया था क्योंकि मौलाना हज़रत से हमेशा इलतिमास (अनुरोध) करते थे कि हज़रत मुझको सरफ़राज़ करें इस लिये उनकी बुहत कोशिश की वज्ह से रवाना फ़र्माया था। उस वक़्त ख़ूबकलाँ ने पूछा कि आक़ा किस वक़्त वापस होंगे तो मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने फ़र्माया कि इनशाअल्लाह तआला इशा की नमाज़ के बाद आऊंगा। अब्दुल वाहिद ने उस रात में सब को रोक लिया जब ख़ूबकलाँ रज़ी० ने देखा कि आप वक़्त पर नहीं आये तो जुदाइ से उनका इश्क़ बढ़ गया और अपनी जान हक़ के हवाले की और हज़रत महेदी अले० ने उनको ईमान की बशारत अता फ़र्माई। जब दूसरे रोज़ मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने आकर देखा कि जान हक़ के हवाले की तो बुहत रंजीदा हुवे और एक मुद्दत के बाद जब चापानीर आये तो अक़्द करना चाहा। मियाँ सय्यद उसमान ने बुहत कोशिश करके अपनी लड़की बीबी कद बानो से अक़्द करदिया और बीबी कद बानो रज़ी० से कहा कि हम दोनों मर्द और औरत हज़रत महेदी अले० के ग़ुलाम और कनीज़ है और तुझको मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० को वुज़ू कराने के लिये दिये हैं, जब हज़रत तुझ से मुंह फेरलें तो तू उसी वक़्त उठ और ख़िदमत के लिये सामने खड़ी होजा वर्ना हम तेरा मुंह नहीं देखेंगे। जब जल्वा हुआ और हज़रत ने दुलहन का मुंह देखा तो सुन्दर

नहीं थी ग़मगीन होकर मुंह पलटा लिये। बीबी रज़ी० माँ बाप की वसीयत के मुवाफ़िक़ उसी वक़्त ख़िदमत के लिये खड़ी होगयी। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने पूछा कि यह क्या है तो कहा कि वालिदैन ने मुझको ख़िदमत के लिये मुक़र्रर किया है हमको ख़िदमत करने से काम है। उसी दौरान अल्लाह तआला की तरफ़ से आवाज़ आई कि यह औरत नेक है नज़्दीक ले नज़्दीक ले फिर ज़न् व शौहर के दरमियान बुहत मुहब्बत बढ़ गइ आपस में आशिक़ और माशूक़ के मानिंद होगये। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० हज़रत महेदी अले० से जुदा होकर ढाइ साल होगये थे।

हज़रत महेदी अले० ने शहर नहरवाला (पटन) में पंद्रह महीने इक़ामत फ़र्माइ (ठहरे) जब आपके फ़ज़्लो कमालात की शुहरत बुहत फैल गइ कि आपके जैसा वलीए कामिल नबी सल्ला० के बाद कोइ नहीं आया तो बुहत से मशायख़ाने तरीक़त और उलमाए शरीअत ने आपकी इताअत क़ुबूल करली और मोतक़िद होगये मसलन् मियाँ यूसुफ़ सुहेत रज़ी० जो आलिम बिल्लाह उस्तादे शरीअत पीरे तरीक़त और शरीअत की रिआयत के बावजूद सरमस्ते हक़ीक़त थे और तमाम गुजरात में मश्हूर थे कि उनके जैसा इल्मोअमल में कोइ नहीं। उन्हों ने इमाम अले० से अर्ज़ किया मीराँजी मुझे ग़ैब से बतरीक़े इताब आवाज़ आती है कि हमने सय्यद मुहम्मद को महेदी मौऊद किया है उसकी तस्दीक़ कर। हज़रत अले० ने फ़र्माया ऐसा ही है लेकिन उसका तअल्लुक़ वक़्त पहुंचने से है। मियाँ यूसुफ़ रज़ी० ने कहा खुंदकार दाअवा करें इन्शाअल्लाह तआला मैं हज़रत की महेदियत की हुज्जत दूंगा। इमाम अले० ने फ़र्माया कहाँ से हुज्जत दोगे, मियाँ यूसुफ़ रज़ी० ने कहा ख़ुदाए तआला ने मेरा दिल ऐसा खोल दिया है कि तमाम किताबों (तौरेत, ज़बूर, इन्जील और फ़ुरक़ान) और तमाम ख़बरों (हदीसों) बल्कि तमाम औराक़ (बुज़ुरगों

की किताबों के तमाम पन्नों) से महेदी अले० की महेदियत साबित करदूंगा। इमाम अले० ने फ़र्माया ठीक है मगर कोइ शख़्स हुज्जत नहीं देसकता मगर महेदी के दाअवे पर ख़ुदाए तआला क़ादिर है वही हुज्जत देगा। मियाँ यूसुफ़ रज़ी० ने अर्ज़ किया कि बन्दे ने हज़रत अले० के सीधे कन्धे पर मुहरे विलायत देखी है बर्दाश्त नहीं कर सकता लोगौं के मजमे से कहना शुरु करूंगा कि मीराँ सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद हैं। इमाम अले० ने फ़र्माया की ख़ुदाए तआला तुम्हारी ज़बान बंद करदेगा, उसी वक़्त उनकी ज़बान बंद होगयी और इश्क़ का हाल ऐसा ग़ालिब हुआ कि थोड़ी मुद्दत में विसाल होगया। उन्होंने ने इमाम अले० की मुहरे विलायत जो देखी उसका सबब यह है कि एक रोज़ उन्हों ने इमाम अले० से अर्ज़ किया कि बन्दे को ग़ैब से इताब (कोप) के साथ आवाज़ आती है कि सय्यद मुहम्मद को हमने महेदी मौऊद किया है उसकी तस्दीक़ कर लिहाज़ा आप गवाह रहें कि बन्दा ख़ुंदकार की महेदियत की तस्दीक़ करता है, हज़रत की महेदियत मैं कुछ शको शुब्ह नहीं रहा मगर एक आरज़ू है कि मुहरे विलायत देखूँ चुनाचे अल्लाह तआला ने इब्राहीम अले० से फ़र्माया कि *हम मुर्दे को जो ज़िन्दा करते हैं क्या तू ईमान नहीं लाया तो अर्ज़ किया कि हाँ लेकिन मैं अपने दिल का इतमेनान चाहता हूँ (अल बक़रह २६०)* जब हज़रत अले० ने अपना लिबासे मुबारक निकालकर मुहरे विलायत दिखाइ, देखते ही उनपर हाल ग़ालिब हुवा जोशे इश्क़ से उन्होंने वह बातें शुरु की जो ऊपर बयान की गयी हैं और अपनी जान ख़ुदा के हवाले की।

जब हज़रत महेदी अले० शहर नहर्वाल तश्रीफ़ लेगये तो शाह रुकनुद्दी जो कामिल मज्ज़ूब थे कहा कि शरीअत का हिसार आरहा है कपड़े लावो। लोग मुतअज्जिब (आश्चरित) हुए कि कभी कपड़े नहीं

पहनते थे आज किस लिये कपड़े तलब कर रहे हैं। लोग इसी तअज्जुब में थे कि शाह मज़्कूर ने किसी के ज़िस्म से चादर खींचकर ख़ुद बाँधली और हज़रत इमाम अले० के सामने चंद क़दम इस्तिक़बाल के लिये गये। जब शाहे दौराँ (महेदी अले०) की नज़र में मन्ज़ूर हुए तो कल्ला ज़मीन पर रखकर कहा ऐ हज़रत मालूम हो कि बन्दा आपके गुरोह से है लेकिन इमाम अले० उनकी तरफ़ तवज्जह न करके आगे बढ़ गये। किसी ने कहा यह घर मुल्ला मुईनुद्दीन का है जो शहर का उस्ताद है। इमाम अले० ने खड़े होकर इत्तिलाअ करवाया और मुल्ला दीवार पर सवार होकर कह लाया कि मुल्ला इस वक़्त सवार होगया है घर में नहीं है। इमाम अले० ने फ़र्माया कि ऐसे मर्कब (सवारी) पर सवार हुआ है कि हरगिज़ मन्ज़िल को नहीं पहुंचेगा। यह फ़र्माकर आगे बढ़े और एक ख़ाली मस्जिद में क़ियाम फ़र्माया। उसके बाद मुल्ला ने अपने लड़के के ज़रीए खाना भेजा और उज़र चाहा कि ख़ुद घर में नहीं था लिहाज़ा उसको क़ुबूल फ़र्मायें इमाम अले० ने उसका जवाब कुछ नहीं दिया और खाना क़ुबूल नहीं किया। उसके बाद शाह रुकनुद्दीन रहे० ने नान और मौज़ हज़रत अले० के पास रवाना फ़र्माये, मियां बाबन महाजिर रज़ी० ने गिनकर तक़सीम करना चाहा तो इमाम अले० ने फ़र्माया शाह रुकनुद्दीन ने गिनकर भेजा है, दो मौज़ और एक नान हर एक को दो इसी तरह दिये सब को बराबर पहुंचे।

उसके बाद वहाँ के उलमा ने हसद, कीना (कपट) और दुश्मनी से सुल्तान महमूद के पास चापानीर में दर्ख़ास्त रवाना की कि जिस सय्यद को अहमदाबाद से निकालदिये थे वह पटन आकर लोगों को पीरी मुरीदी से फिराकर अपने मुरीद बनाता है लिहाज़ा हुक्म सादिर फ़र्मायें कि यहाँ से दूसरी जगह चले जाये। उनकी दर्ख़ास्त की बिना पर अल्लाह उनको

ज़लील करे। मुबारिज़ुल मुल्क को भी हज़रत अले० के इख़राज के लिये सुल्तान का फ़र्मान आया तो उस ने फ़र्मान आस्तीन में रखकर लाया, इमाम अले० ने फ़र्माया अच्छे जी अच्छे। उसने अर्ज़ किया कि बादशाह का फ़र्मान है, इमाम अले० ने फ़र्माया तेरे बादशाह का फ़र्मान तेरे लिये और हमारे बादशाह का फ़र्मान हमारे लिये फिर अपने असहाब से फ़र्माया कि अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ राहे सफ़र की तय्यारी करो क्योंकि ख़ुदाए तआला का फ़र्मान होता है कि क़रीब में हम तुझको आगे चलायेंगे। फिर फ़र्माया कि बन्दे का सफ़र और इक़ामत ख़ुदा के फ़र्मान से है लेकिन इख़राज करने वालौं और हाकिमौं का मुहं काला होगा, यह बात मुबारिज़ुल मुल्क हज़रत अले० की ज़बान से सुनते ही उठा और चले गया।

उसके बाद बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुदंमीर रज़ी० आशिक़े सादिक़, माशूक़ ज़ाते मुत्लक़, शहीद रुयते हक़ जिनकी सना ला निहायत (अत्यधिक प्रशंसा) है जो न ज़बान से तक़रीर में आसकती है और न क़लम से तहरीर में समा सकती है चूंकि बन्दगी मियाँ रज़ी० विलायत की अमानत का बार उठाने वाले थे। पहले ही मलिक बख़्खन उर्फ़ मलिक बरख़ुरदार ने मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० को कहलाया था कि तुम जैसी ज़ात चाहते हो वैसी ही ज़ात बा बरकात आइ है यह सुनकर बुहत ख़ुशी से हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में हाज़िर हुवे, जूँही हज़रत महेदी अले० पर नज़र पड़ी बेहोश होगय। हज़रत महेदी अले० ने बन्दगी मियाँ रज़ी० के नज़्दीक जाकर आयत *अल्लाहु नूरुस् समावाति वल अर्ज़ ..... नूरुन् अला नूर (अन् नूर - ३५)* तक पढ़कर अपना रुख़ेमुबारक (मुंह) उनके रुख़ के पास लेजाकर ज़िक्रे ख़फ़ी का दम दिया जब बन्दगी मियाँ रज़ी० होश में आये तो कहा मैं ने महेदी अले० को नहीं देखा बल्कि अपने ख़ुदा

को देखा उसके बाद मलिक बरख़ुरदार ने भी हज़रत महेदी अले० की सुहबत इख़तियार की।

हज़रत महेदी अले० नहरवाला (पटन) से रवाना हुवे और बड़ली में आकर क़ियाम फ़र्माया। अलक़िस्सा उस से पहले बारा साल से हर रोज़ बल्कि हर साअत इमाम अले० को हक़ तआला का फ़र्मान होता था कि हमने तुझको महेदी मौऊद किया है लेकिन हज़रत अले० बिल्कुल नफ़ी करते थे और कहते थे कि ऐ बारे खुदाया अगर नफ़सानी वस्वसा या मासिवल्लाह का वुजूद है तो हमारे जद् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० और अली मुर्तुज़ा रज़ी० के सदक़े और तेरे फ़ज़ल से मुझको बचा और उनके मकर से बाज़ रख। उसके बाद इताब से फ़र्मान हुवा कि तू ऐन हक़ की नफ़ी करता है और नहीं जानता है। उसके बाद इलतिमास किया कि ऐ बारे ख़ुदाया मैं मुहम्मद सल्ला० की विलायत को ख़त्म करने के लायक़ नहीं हूँ। बरसों आबिद और माअबूद के दरमियान यही तक्रार रही उसके बाद ख़ुदा का फ़र्मान पहुंचा कि हम ज़ियादा जान्ने वाले हैं और हमने तुझको लायक़ जानकर मुहम्मद सल्ला० की विलायत का ख़ातिम बनाया है। इमाम अले० ने दूसरी इबारत में अर्ज़ किया कि ऐ बारे ख़ुदाया अगर तू मुझको आज़माता है तो सर से पैर तक पोस्त खिचवा और ज़िन्दा सूली दे और पारा पारा ज़र्रों की मिक़दार करदे अगर मैं लरज़ूँ या लग़ज़िश खाँव तो तेरा बन्दा नहूंगा लेकिन इस दाअवए मुअक्कद के ज़ाहिर करने में तेरा मक़सूद क्या है क्योंकि इस दाअवए मुअक्कद से पहले जो शख़्स शरीअते मुस्तफ़ा सल्ला० पर मरता है वह दोज़ख़ की आग से नजात पाता है और इस दाअवए मुअक्कद के ज़ाहिर होने के बाद क़ुबूल करने वाल मोमिन और इन्कार करने वाला काफ़िर होगा। उसके बाद इताब से ख़ुदा का फ़र्मान हुवा कि आगाह हो तहक़ीक़ कि

(निश्चित रुपसे) हुक्मे क़ज़ा जारी होचुका है अगर तू सबर करेगा तो माजूर होगा और अगर बेसबरी करेगा तो शरमिन्दा होगा, अगर कहलाता है तो कहला नहीं तो ज़ालिमौं में करूंगा। उसके बाद इमाम अले० ने फ़र्माया अब बन्दा क्या करे, नमाज़े ज़ुहर के बाद इज्माअ में फ़र्माया अब बन्दा क्या करे, मैं महेदी मौऊद अल्लाह का ख़लीफ़ा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० की पैरवी करने वाला हूँ जिसने मेरी पैरवी की वह मोमिन है और जिसने मेरी ज़ात का इन्कार किया पस तहक़ीक़ कि वह काफ़िर है। दाअवए मुअक्कद के इज़्हार के वक़्त इमाम अले० का रुये मुबारक (मुख) ज़र्द और ग़म से भरा हुआ था, आपने अपनी महेदियत का दाअवा अल्लाह के हुक्म से ज़ाहिर किया बाज़ लोगौं ने ईमान लाया और कहा जैसा कि कहा क़सम है ख़ुदा की यह झूटे की सूरत नही और बाज़ लोगौं ने इन्कार किया और कहा कि बेशक यह मज्नून् है।

हज़रत महेदी अले० उस से पहले सफ़र का इरादा रख़ते थे इसी लिये नमाज़े क़सर अदा करते थे।उस वक़्त बादशाह का पाये तख़्त (राजधानी) चापानीर था। हज़रत महेदी अले० ने (सुल्तान को) मकतूब (पत्र) लिखा कि वाज़ेह हो कि मैं पूरी तरह होश में हूँ बेहोशी नहीं है, बन्दा सेहतमंद (स्वस्त) है ज़हमत नहीं है, बन्दे की अक़्ल कामिल है कुछ फ़ौत नहीं है और ख़ुदाए तआला रोज़ी पहुंचाता है तमाम फ़क्र भी नहीं, बन्दा औरत बच्चे रखता है अकेला नहीं है, इसके बावजूद हमने ख़ुदाए तआला के फ़र्मान से महेदियत का दाअवा ज़ाहिर किया है और उस दाअवे पर गवाह कलामुल्लाह और इत्तिबाए रसूलुल्लाह लाये हैं तुम को चाहिये कि तहक़ीक़ करो वर्ना दोनो जहाँ में हाकिमौं का मुंह काला होगा इस लिये कि बन्दा हक पर है तो इताअत करो अगर हक़ पर नहीं है तो तफ़हीम करो अगर मैं हक़ बात न समझूँ तो क़त्ल करो। मालूम हो

कि मैं जिस जगह जाउंशा अपनी हक़ीक़त पर दाअवत करूंगा और लोगों को रास्ता दिखाउंगा और उलमाए ज़ाहिरी के मुद्दआ के लिहाज़ से गुमराह करूंगा। वहाँ के हुक्काम और उलमा ने उस मकतूब का कोइ जवाब नहीं दिया और कहा कि मीराँ सय्यद मुहम्मद वलीए कामिल हैं अपनी दाअव और अपने मुद्दआ (उद्देश्य) पर कलामुल्लाह और इत्तिबाए रसूलुल्लाह सल्ला० से हुज्जत करते हैं हम उनसे मुक़ाबला नहीं कर सकते । हज़रत महेदी अले० ने साड़े चार महीने तक अपने मकतूब के जवाब का इन्तेज़ार किया। आपकी महेदियत की दाअवत की ख़बर ज़्यादा मश्हूर और ज़्यादा ज़ाहिर होगयी तो शहर नहरवाला, अहमदाबाद और हर तरफ़ से उलमा दाअवत के अहवाल की तहक़ीक़ के लिये हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में आये और सवालात किये कि :

१) आप ख़ुद को महेदी मौऊद कहलाते हो?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि बन्दा नहीं कहता है बल्कि अल्लाह तआला का फ़र्मान होता है कि तू महेदी मौऊद है और हमने तुझको इमाम आख़रुज़् ज़माँ बनाया है।

२) फिर पूछा कि महेदी का नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह होगा और आपका नाम मुहम्मद बिन सय्यद ख़ाँ है?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि ख़ुदा से कहो कि सय्यद ख़ाँ के फ़र्ज़न्द को किस लिये महेदी बनाया, ख़ुदाए तआला क़ादिर है जो कुछ चाहता है करता है। फिर फ़र्माया कि हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० के पिता मुश्रिक (बुत प्रस्त) थे अल्लाह के बन्दे कैसे हो सकते हैं (जहाँ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखा हुआ है) वह सहवे किताबत है दरअसल इबारत मुहम्मद अब्दुल्लाह और महेदी भी अब्दुल्लाह है।

३) फिर पूछा कि महेदी पर तमाम मख़लूक़ ईमान लायेगी और कोइ शख़्स मुन्किर न होगा ?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि मोमिनान ईमान लायेंगे या काफ़िरॉं? उलमा ने जवाब दिया कि मोमिनान ईमान लायेंगे। इमाम अले० ने फ़र्माया कि मोमिनॉं ईमान लाये हैं।

४) फिर उलमा ने बतरीक़े इमतिहान सवाल किया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है *वमा तशाऊन इल्ला अंय यशाअल्लाहु* ''यानि बन्दा कुछ नहीं चाहता है मगर वही जो ख़ुदाए तआला चाहता है'' पस चाहिये कि जो कुछ बन्दा चाहता है होवे लेकिन बुहतसी चीज़ें हैं कि बन्दा चाहता है लेकिन नहीं होती?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि शरीअत के इल्म में थोड़ी वाक़फ़ियत रखने वाला भी ऐसा सवाल नहीं करेगा। आयत के माने यह हैं कि बन्दौं के अक़वाल और अफ़आल अल्लाह तआला की मशीयत (ईश्वरेच्छा) के बग़ैर नहीं होते ऐसा ही उनकी मशीयत भी बग़ैर हक़ तआला की मशीयत के नहीं है।

५) उलमा के फिर पूछा कि आप विलायत को नबूवत पर फ़ज़्ल देते हो?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि बन्दा देता है या रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़ज़्ल दिया है चुनांचे फ़र्माया कि विलायत अफ़ज़ल है नबूवत से।

उलमा ने कहा हदीस के माने यह हैं कि नबी की विलायत अफ़ज़ल है नबी की नबूवत से।

इमाम अले० ने फ़र्माया मैं ने कब कहा है कि मेरी विलायत अफ़ज़ल है नबी की नबूवत से या मैं अफ़ज़ल हूँ नबी से या नबी पर वली को फ़ज़्ल है। तुम कुछ जानते भी हो कि नबूवत के माने क्या हैं और विलायत क्या है।

६) फिर उलमा ने पूछा कि आप कहते हैं कि ईमान बढ़ता और घटता है और इमाम आज़म रहे० ने फ़र्माया कि ईमन बढ़ता और घटता नहीं?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है *और जब उनपर पढ़ी जाती हैं क़ुरआन की आयतें तो ज़्यादा करदेती हैं उनके ईमान को और वह अल्लाह पर भरोसा करते हैं (अल अनफ़ाल-२)।* जो कुछ इमामे आज़म रहे० ने कहा है उपने ईमान की ख़बर दी है क्योंकि इमामे आज़म रहे० का ईमान कामिल होचुका था और कमाल (पूर्णता) के बाद बढ़ता घटता नहीं।

७) फिर उलमा ने पूछा कि आप कसब को हराम रखते हो?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि मोमिन के लिये कसब हलाल है मोमिन होना चाहिये और क़ुरआन में ग़ौर करना चाहिये कि मोमिन किसको कहते हैं।

८) फिर पूछा कि आप कहते हो कि दारे दुनिया में जो दारे फ़ना है चश्मे सर से ख़ुदाए तआला को देखना चाहिये?

इमाम अले० ने फ़र्माया अल्लाह तआला फ़र्माता है *जो शख़्स यहाँ (इम दुनिया में) अन्धा हो वह आख़िरत में भी अन्धा होगा और मार्ग से बुहत ज़्यादा भटका हुआ होगा (बनी इसराईल - ७२)।*

उलमा ने फिर पूछा कि सुन्नत व जमाअत के उलमा का इत्तिफ़ाक़ इस बात पर है कि इस आयते शरीफ़ा से मुराद आख़िरत में ख़ुदा को देखना है।

इमाम अले० के फ़र्माया कि ख़ुदा का वाअदा मुत्लक़ है हम भी मुत्लक़ कहते हैं और सुन्नत व जमाअत ने भी दारे दुनिया में दीदारे ख़ुदा को नाजाइज़ और नामुम्किन नहीं कहा है उनके कलाम को अच्छी तरह समझना चाहिये कि उन्होंने क्या कहा है।

९) फिर उलमा ने कहा कि आप उम्मीद और रहमत की आयतें बुहत कम बयान करते हैं और ख़ौफ़ और क़ब्र की आयतें बुहत बयान करते हैं जिस से बन्दा नाउम्मीद होता है?

इमाम अले० ने फ़र्माया आँहज़रत सल्ला० ने फ़र्माया है कि भाई तेरा वह है जो ख़ुदा और रसूल से डराये वह तेरा भाई नहीं जो धोके में रखे।

१०) फिर उलमा ने पूछा कि आप इल्म पढ़ने से मना करते हो?

इमाम अले० ने फ़र्माया बन्दा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० की पैरवी करने वाला है जो कुछ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० ने मना नहीं किया है बन्दा क्योंकर मना करेगा, बन्दा अल्लाह के हुक्म और अल्लाह की किताब के हुक्म से अल्लाह के ज़िक्रे दवाम को फ़र्ज़ कहता है और जो चीज़ अल्लाह के ज़िक्र को मना करने वाली है वह मम्नूअ है क्या इल्म पढ़ना, क्या कसब करना, क्या मख़लूक़ से दोस्ती करना, क्या खाना, क्या सोना ग़फ़लत हराम है और जो चीज़ ग़फ़लत का कारण है वह भी हराम है।

११) फिर उलमा ने पूछा कि आपके लोग बेअदबी करते हैं, उस्तादों और पीरौं से फिरगये हैं बल्कि उनसे बेज़ार होगये हैं और उनपर ऐब लगाते हैं ?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि शायद तुम शरई मसअला भूल गये। शर्अ में है अगर कोइ शख़्स अपनी लड़की को अनीन (नामर्द) से अक़्द करदिया उसके बाद नामर्द होने का हाल चंद रोज़ पोशीदा रहा उसके बाद तहक़ीक़ हुई कि वह नामर्द (नपुंसक) है तो शर्अ में जुदाइ करते हैं या नहीं और जो सामान बेऐब होने के गुमान से ख़रीदते हैं अगर शरई ऐब ज़ाहिर होजाये तो वापस लौटाते हैं या नहीं ? दीन का मक़सूद (उद्देश्य) दुनिया के मक़सूद से बुहत कम होगया हासिल हो या नहो तअल्लुक़ नहीं तोड़ना चाहिये और बेज़ार नहीं होना चाहिये और दीन का मक़सूद दूसरी जगह से तलब नहीं करना चाहिये। क्या अच्छी है दीन की तलब क्या अच्छी है ख़ुदा के दीदार की तलब, क्या अच्छी है आख़िरत की तलब कि दुन्यावी मक़सूद की तलब में अलाहेदगी बेज़ारी और जुदाइ को रवा रखते हैं और दीन के मक़सूद के हासिल होने में (अलाहेदगी बेज़ारी और जुदाई) रवा नहीं रखते। अल्लाह रहम करे उस पर जिसने इन्साफ़ किया और फ़िटकार दे अल्लाह उसको जिसने नाइन्साफ़ी की।

१२) फिर उलमा ने पूछा कि आप से बहस कैसे कर सकते हैं क्योंकि आप मुक़य्यद मज़्हब नहीं रखते आप जो कुछ कहते हो मुत्लक़ क़ुरआन से कहते हो और हम क़ुरआन नहीं समझ सकते और हम इमामे आज़म रहे० का मुक़य्यद मज़्हब रखते हैं?

इमाम अले० ने फ़र्माया मैं किसी मज़्हब का मुक़य्यद नहीं हूँ हमारा मज़्हब अल्लाह की किताब और रसूल सल्ला० की पैरवी करना है। तुम मुक़य्यद मज़्हब पर ही क़ायम रहो और कहो कि जो शख़्स इमाम आज़म

रहे० के मज़्हब से बाहर होजाये और मज़्हब के ख़िलाफ़ अमल करे तो उसका क्या हुकम है। नादान क्या जानते हैं मज़्हब के माने इमामे आज़म रहे० का अमल है न कि उनका क़ौल और पैग़म्बर की सुन्नत पैग़म्बर सल्ला० का अमल है नकि पैग़म्बर सल्ला० की गुफ़्तार, तमाम शरई मुआमलात जो फ़िक़्ह की किताबों में लिखे गये हैं वह पैग़म्बर सल्ला० की गुफ़्तार (वार्तालाप) है नकि पैग़म्बर सल्ला० का अमल। इमामे आज़म रहे० का मज़्हब इमाम रहे० का अमल है जो मश्हूर है।

१३) फिर उलमा ने पुछा आप मुसलमान को काफ़िर कहते हो और मोमिन बन्ने का हुक्म करते हो?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि हमने अल्लाह की किताब को पेश किया है जिस किसी को अल्लाह की किताब काफ़िर कहती है हम भी उसको काफ़िर कहते हैं, ख़ुद से कोइ बात नहीं कहते, हम अल्लाह की किताब की पैरवी करने वाले हैं और मख़लूक़ को अल्लाह को एक जान्ने और अल्लाह की बन्दगी की दाअवत करते हैं और हम अल्लाह तआला की तरफ़ से इसी काम पर मामूर (आदिष्ट) हैं और उलमा हमारी मुख़ालफ़त जो करते हैं मालूम नही होता कि उनकी मुख़ालफ़त का कारण क्या है। अगर बन्दे से सहव या ग़लती हुवी होगी तो उनपर फ़र्ज़ है कि हमको आगाह (सूचित) करें और इत्तिफ़ाक़ करें ताकि अल्लाह की किताब पर अमल किया जाये और अल्लाह की किताब पर दाअवत की जाये चुनांचे अल्लाह तआला फ़र्माता है *अगर तुम झगड़ पड़ो किसी अम्रे दीन में तो रुजूअ करो अल्लाह की तरफ़ (अन् गिसा-५९)* यानि रुजूअ करो अल्लाह की किताब की तरफ़, जो शख़्स अल्लाह की किताब से क़दम बाहर रखा तौबा करे और अगर तौबा नहीं करता है तो वाजिबुल क़त्ल है।

१४) फिर उलमा ने पूछा कि महेदी अले० की अलामात से यह है कि महेदी पर शमशीर काम नहीं करेगी?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि शमशीर का काम काटने का है लेकिन शमशीर (तलवार) महेदी मौऊद अले० पर क़ादिर नहोगी और क़ादिर नहीं होसकती और यह आयत पढ़ी *क्या तुमको ख़ुदा के बारे में शक है (इब्राहीम-९)।* अगरचे बन्दे की महेदियत में शक करते हो तो अल्लाह तआला के एक होने में तो शक नहीं है, हर मर्द और औरत पर अल्लाह की तलब फ़र्ज़े ऐन है आवो अल्लाह की बन्दगी में मश्ग़ूल होजायेंगे अल्लाह तआला इस बन्दे की महेदियत को तुम पर ज़ाहिर करदेगा। बुहत लोग ईमान लाये और बुहत लोग हसद और दुश्मनी से ईमान लाने से बाज़ रहे।

एक रोज़ बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० के हाथ में किताब थी इमाम अले० ने पूछा क्या किताब है तो अर्ज़ किया *नुज़्हतुल् अर्वाह* और *अनीसुल ग़ुरबा* है। इमाम अले० शाह निज़ाम रज़ी० के हाथ से किताबें लेकर बीबी मलकान रज़ी० के घर चले गये। चंद रोज़ के बाद वही किताबें बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० के हाथ में देकर फ़र्माया कि अब अपने अहवाल को इस किताब के मुवाफ़िक़ करो, कहा मीराँजी ख़ुंदकार के सदक़े से बन्दे का हाल इस से बढ़कर है अब अपने अहवाल को इस किताब के मुवाफ़िक़ करने की ज़रूरत नहीं। उसके बाद इमाम अले० ने अपना क़ुरआन शरीफ़ खोलकर बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० के हाथ में देकर फ़र्माया कि पढ़ो तो शाह निज़ाम रज़ी० ने कहा बन्दा क़ुरआन से कुछ नहीं पढ़ा है। इमाम अले० ने फ़र्माया कि पहले हम पढ़ते हैं हमारे बाद तुम पढ़ो। पहले हज़रत अले० पढ़ते थे उसके बाद मियाँ निज़ाम रज़ी० पढ़ते थे, उस वक़्त महाजिरे महेदी अले० जिनका नाम मियाँ अलाहदादया था

अपने मुआमले को अर्ज़ करने के लिये आये तो इमाम अले० की नज़र पड़ते ही धमकी देकर फ़र्माया कि वहीं ठहरो तो वह सर झुकाकर वापस होगये। ज़ुहर की नमाज़ के वक़्त क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म होगया और वही क़ुरआन शाह निज़ाम रज़ी० ने इमाम अले० को देदिया। ज़ुहर की नमाज़ अदा करने के बाद इमाम अले० ने फ़र्माया मियाँ अलाहदादया तुम जिस वक़्त आरहे थे उस वक़्त अल्लाह तआला अपने बन्दे को अपने कलाम की तालीम देरहा था, अगर उस वक़्त तुम क़दम आगे बढ़ाते तो जल जाते।

चूंकि इमाम अले० ने साढ़े चार महीने सुल्तान महमूद की जानिब से अपने मकतूब का जवाब आने की राह देखी उसके बाद अल्लाह तआला का फ़र्मान पहुंचा कि ऐ सय्यद मुहम्मद आगे बढ़ो क्योंकि हिन्द में इल्म का नुक़सान है और ख़ुरासान में इल्म तमाम है हम वहाँ तेरी दाअवत की राहे रास्त दिखायेंगे। उसके बाद इमाम अले० आगे बढ़े यहाँतक कि जालोर पहुंचे, वहाँ मियाँ शेख़ मुहम्मद कबीर, मियाँ यूसुफ़, मियाँ अब्दुल्लाह, मियाँ जमाल, मियाँ कमाल और मियाँ अश्रफ़ तारिके दुनिया तालिबे ख़ुदा होकर हज़रत महेदी अले० के हमराह होगये। जब जालोर से आगे बढ़े तो रास्ते में बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० क़ज़ाए हाजत के लिये थोड़ी देर पीछे रहगये थे। उस वक़्त हज़रत महेदी अले० पीछे नज़र न डालकर आगे बढ़गये, उस से पहले और उसके बाद जिस जगह इमाम अले० तश्रीफ़ लेजाते पीछे आने वालौं का ग़म नहीं रखते थे इस लिये कि हज़रत महेदी अले० जहाँ कहीं जाते और जो कुछ काम करते बेपर्दा रुबरू फ़र्माने ख़ुदा से जाते और काम करते थे इसी कारण किसी की तरफ़ तवज्जह नहीं करते थे। किसी ने कहा मीराँजी यह रास्ता पुराना होगया है बल्कि वीरान होने की वज्ह से रास्ता मिट गया है कोइ शख़्स इस रास्ते से नहीं जाता इस लिये कि इस रास्ते में

साँपों और शेरों के अलावा दूसरे बुहत बलाएँ हैं। इमाम अले० ने फ़र्माया कि बन्दा क़दीम रास्ते पर चलने के लिये अल्लाह तआला की तरफ़ से मामूर है और तमाम साँपों और शेरों ने हम से अहद किया है कि उनसे ज़हमत नहीं होगी। बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० जो पीछे रहगये थे रास्ते में मुतफ़क्किर (चिंतित) हुवे कि रास्ता नहीं पाते थे। यकायक एक मर्द ने एक मोटा बक्रा पीठ पर उठाया हुआ लाकर कहा खाइये, उन्हों ने दो तीन दिन से कुछ भी नहीं खाया था उसी जगह एक सुलगा हुआ झाड़ और एक बर्तन नमक से भरा हुआ पाया और तीन असहाब जो हज़रत रज़ी० के साथ थे उस बक्रे को तमाम खालिये और बक्रा लाने वाला शख़्स कहकर गया कि यह तुम्हारे क़ाफ़िले का रास्ता है। उसी रास्ते पर रवाना हुवे लेकिन घास बढ़जाने के कारण रास्ता भूल गये, पस वहाँ से आवाज़ शुरू हुवी कि यह महेदी मौऊद रहमान का ख़लीफ़ा है, उस आवाज़ पर हज़रत महेदी अले० के पास पहुंचे।

उसी तरह एक रोज़ बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० अपनी लड़की बीबी नूरुल्लाह को जो शीर ख्वार थी एक झाड़ की डाली से झोली लटका कर हक़ की महवियत में वहीं छोड़कर हज़रत अले० के साथ सवार होगये और तीन चार कोस चले गये। हज़रत महेदी अले० ने शाह निज़ाम रज़ी० को याद दिलाया कि तुम्हारा रफ़ीक़ कहाँ है कहा कि शायद उसी जगह पर हो। इमाम अले० ने फ़र्माया कि ख़ुदाए तआला ने हिफ़ाज़त की है जाकर लाओ, जब वहाँ पहुंचे तो देखा कि एक बड़ा शेर उस झाड़ के नीचे बैठा हुआ है आपको देखकर सर झुकाया हुआ चले गया और आप बीबी नूरुल्लाह को लेकर रवाना हुए और रास्ता भूल गये, उसी तरह आवाज़ (यह महेदी मौऊद रहमान का ख़लीफ़ा है) सुनकर हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में पहुंचे।

नक़ल है कि एक रोज़ बन्दकी मियाँ दिलावर रज़ी० हज़रत महेदी अले० को वुज़ू कराते थे, अर्ज़ किया मीराँजी आपकी रीशे मुबार (डाढ़ी) के तमाम क़त्रे कहते हैं कि यह महेदी मौऊद रहमान का ख़लीफ़ा है। हज़रत अले० ने फ़र्माया कि बन्दा जिस जगह फिरता है तमाम मख़लूक़ात और काइनात के तमाम ज़र्रे और ज़र्रात यही कहते हैं लेकिन समझ के कान चाहिये जैसे कि तुम्हारे कान हैं।

उसके बाद इमाम अले० शहर नागोर पहुंचे, आम तौर पर शोहरत और बलवा होगया कि महेदी मौऊद आया। मियाँ मलिक जियो जो मुग़ल की क़ौम से थे और वहाँ के हाकिम थे उस शहर के तमाम उलमा के साथ महेदियत के सुबूत और दर्याफ़्त के लिये इमाम अले० की ख़िदमत में आये और आपकी नज़रे मुबारक पड़ते ही घोड़े से नीचे उतर कर गिरते पड़ते दौड़ते आकर इमाम अले० के क़दमे मुबारक पर पड़गये। हज़रत अले० ने मियाँ मलिक जियो का हाथ पकड़कर खड़े करके फ़र्माया कि आवो शहज़ादए लाहूत उसके बाद अपने नज़दीक बिठाये। मलिक जियो तमाम बहसो तक्रार जो दिल में रखते थे भूलकर अर्ज़ किया ख़ुंदकार मुझको तलक़ीन फ़र्मायें। हज़रत महेदी अले० ने उन्हें ज़िक्रे ख़फ़ी की तलक़ीन फ़र्माइ मियाँ मलिक जियो तारिके दुनिया तालिबे ख़ुदा होकर हज़रत महेदी अले० की सुहबत में हाज़िर रहे।

नक़ल है एक रोज़ इमाम अले० ने असर और मग़रिब के दरमियान बयाने क़ुरआन के मौक़े पर अजमी ज़बान में फ़र्माया कि *हाजरु* (हिज्रत किये) हुआ, *व उख़्रिजू मिन दियारिहिम* (और घरौं से निकाले गये) हुआ, *व ऊज़ू फ़ी सबीली* (और ख़ुदा की राह में सताये गये) हुआ, *वक़ातलू व क़ुतिलू* (और क़त्ल किये और क़त्ल किये गये) बाक़ी है माशाअल्लाह पूरा होगा लेकिन बन्दा उस पर मामूर नहीं है हमारे लोगौं

से उसका ज़ुहूर होगा। मग़रिब की नमाज़ के बाद बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० ने बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० के ज़रीये अर्ज़ कराया कि अगर उस शख़्स को वाज़ेह करके फ़र्मायें तो उसका अदब और ख़िदमत की जाये। हज़रत महेदी अले० ने सुनकर फ़र्माया कि वह शख़्स साइल (सवाल करने वाला) है। बन्दगी मियाँ नेमतत रज़ी० ने ख़याल फ़र्माया कि बन्दा साइल था हज़रत ने क़ातलू व क़ुतिलू को बन्दे पर मुक़र्रर फ़र्माया है उसके बाद बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० ने अर्ज़ किया कि बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० ने ख़ुद पर ख़याल किया है क्योंकि हज़रत अले० ने उन्ही को फ़र्माया है। इमाम अले० ने सुनकर फ़र्माया कि साइल से मुराद तुम्हारी ज़ात थी बन्दा तुम्हारे लिये कहा है ख़ुदाए तआला क़ाबिल को छोड़ता नहीं और ग़ौर क़ाबिल को देता नहीं। अल्लाह तआला ने तुम्हारी इस गर्दन पर क़ातलू व क़ुतिलू का बार रखा है अपनी हड्डियौं को मज़्बूत रखना और क़ुव्वत से उस बार को उठाना चाहिये।

नक़ल है कि जब हज़रत महेदी अले० शहर नागोर से रवाना होकर साँबर नदी से पार हुए और साँपौं के मक़ाम पर पहुंचे तो एक बड़ा साँप दायरे के अत्राफ़ हिसार किया हुआ पड़ा था। सुब्ह के वक़्त सहाबा रज़ी० वुज़ू के लिये पानी लाने दायरे के बाहर जाना चाहते थे लेकिन रास्ता नहीं पाये हज़रत अले० से यह वाक़ेआ अर्ज़ किये तो फ़र्माया कि उस साँप से अल्लाह तआला का वादा था कि हम तुझको अपने रसूल सल्ला० के फ़र्ज़न्द महेदी मौऊद अले० को दिखलायेंगे उस वादे पर बन्दे को देखने के लिये आया है उसके सामने मत जाओ वर्ना डसलेगा जिस तरह से अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० को डसा था। उसके बाद इमाम अले० ने उस साँप के नज़्दीक तश्रीफ़ लेजाकर उसके सामने लुआबे दहने मुबारक डाला तो वह लुआबे मुबारक खाकर कल्ला ज़मीन

पर रखकर चला गया हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि साँप मुसलमान होकर गया।

इमाम अले० जिस जगह क़ियाम फ़र्माते वहाँ दायरे के अत्राफ़ तांबे का हिसार होजाता और लोगौं पर ज़ाहिर न होता। एक रोज़ मियाँ हैदर महाजिर रज़ी० का घोड़ा अपनी जगह से खुलकर चलेगया था तो उन्हों ने घोड़े को तलाश करने के लिये दायरे के बाहर जाने की बुहत कोशिश की लेकिन दीवार सामने देखकर वापस होगये और हज़रत अले० से अर्ज़ किया कि हर तरफ़ दीवार नज़र आती है। इमाम अले० ने फ़र्माया ख़ुदा को याद करो तुम्हारा घोड़ा हरगिज़ नहीं जायेगा, जिस जगह बन्दा क़ियाम करता है हमारे दायरे के अत्राफ़ तांबे की दीवार का हिसार होजाता है। इसके अलावा जिस मक़ाम में पानी नहीं होता तो इमाम अले० उस मक़ाम पर जाने से पहले बारिश होती और आने के बाद पानी फ़राग़त से ख़र्च करते।

जब काहा (सिंध) पहुंचे और पहुंचकर एक घंटा भी नहीं हुवा था कि उनके साथ जो घोड़े थे खेत की तरफ़ रुख़ किये। किसानौं ने हाकिम से फ़र्याद की तो हाकिम इमाम अले० के हुज़ूर में आकर कहा कि महेदी अले० के ज़माने की तारीफ़ सुनी गयी है कि बक्रे और लाँडगे एक जगह चरेंगे और बच्चे साँप बिच्छू से खेलेंगे किसी से किसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचेगी उसके बरख़िलाफ़ ख़ुदावन्द के घोड़े खेत चर रहे हैं। इमाम अले० ने फ़र्माया अगर चर रहे हैं तो अपना मआवज़ा लेलो। हाकिम ने अपने लोगौं को भेजकर दिखाया तो मालूम हुवा कि घोड़े ख़ामूश खड़े हैं कोई चीज़ नहीं खाते, लोग वापस आकर वाक़ेआ ज़ाहिर किये तो हाकिम ने जिसका नाम अश्रफ़ ख़ाँ पानीपती था तअज्जुब करके ख़ुद जाकर

देखा कि घोड़े आँख बंद किये हुवे खड़े हैं तो उसने वापस आकर इमाम अले० की तस्दीक़ की और तरबियत होकर हज़रत की सुहबत इख़्तियार की।

उसके बाद इमाम अले० मुल्क सिंघ की राजधानी नगर ठट्ठा को पहुंचे। शहर में पहुंचने से पहले रास्ते में साथियौं में से किसी का चौपाया गिरकर हाथ पाँव मारने लगा तो हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि ज़ब्ह करो। मुश्रिकौं की सल्तनत होने की वज्ह से सहाबा रज़ी० एक दूसरे को देखने लगे, दूसरी बार हुक्म दिया कि ज़ब्ह करो, मियाँ अब्दुल मजीद रज़ी० ने ऊंट से फ़ौरन उतर कर ज़ब्ह करदिया। सहाबा सज़ी० गोश्त लेकर शहर में दाख़िल हुवे और एक जगह ख़ैमा लगाकर क़ियाम फ़र्माया। इत्तिफ़ाक़न वहाँ एक चर्वाहा खड़ा हुवा था गाय का गोश्त देखकर बादशाह के सामने जिसका नाम जाम नन्दा था उसने अपनी दस्तार डालकर फ़र्याद की कि एक बड़ी जमाअत शहर के क़रीब गाय को ज़ब्ह करके उसका गोश्त शहर में लाकर क़ियाम की है। जाम नंदा सख़्त काफ़िर था लूटने का हुक्म दिया, जब दर्या ख़ाँ को मालूम हुआ तो मानेअ हुआ और कहा कि यह काम दो क़ौम से हुआ होगा यातो जाहिलौं की क़ौम से या उस क़ौम से जो मुसलमानौं में ग़लबा रखती है और मुसलमानौं की मदद करती है और उनमें एक इन्सान है गोया कि वह मुहम्मद सल्ला० की ज़ात है। हाकिमे मज़्कूर अपने तमाम लश्कर को तय्यार करके कामिल ग़ल्बे के साथ इमामुज़् ज़माँ ख़लीफ़तुर् रहमान अले० के सामने आया और कहा कि यह नादान क्या करते हैं। हज़रत महेदी अले० अल्लाह तआला के फ़र्मान से घोड़े पर सवार होकर हाथ में तलवार लिये हुवे उसके सामने चंद क़दम आगे तश्रीफ़ लेगये। यकायक दर्या ख़ाँ की नज़र आप पर पड़ी तो घोड़े से नीचे गिरकर नीम बिस्मिल (आधा घायल) मुर्ग़ की तरह लौट रहा था। हज़रत महेदी अले०

ने भी घोड़े से उतर कर तसल्ली देकर मुरीद किया और वह ईमान के शर्फ़ से मुशर्रफ़ होकर इजाज़त लेकर जाम नंदा के पास गया और कहा कि तूने हम सब को हलाक करदिया था, क्या तू जानता है कि वह कौनसी ज़ात है बित्तहक़ीक़ वह ज़ात महेदी मौऊद साहबुज़् ज़माँ अले० है, अगर तेरा एतिक़ाद महेदी अले० की महेदियत पर नहीं है तो वह नबी सल्ला० के फ़र्ज़न्द और वलीए कामिल तो है तू किस तरह ईज़ा पहुंचाना चाहता है। दर्या ख़ाँ ने अपने घर जाकर ज़ियाफ़त का बुहत खाना हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में भेजा तीन रोज़ तक इमाम अले० ने क़ुबूल फ़र्माया, तीन रोज़ के बाद भी क़ुबूल करने की बुहत कोशिश की लेकिन ज़ियाफ़त क़ुबूल नहीं हुवी और फ़र्माया कि रसूलुल्लाह सल्ला० की सुन्नत के ख़िलाफ़ होता है क्योंकि आँहज़रत सल्ला० ने तीन रोज़ के बाद किसी की ज़ियाफ़त क़ुबूल नहीं फ़र्माइ बन्दा किस तरह क़ुबूल कर सकता है। आख़िरकार जाम नंदा ने हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में क़ाज़ी को भेजकर कहलाया कि हज़रत यहाँ से चले जायें। इमाम अले० ने फ़र्माया कि तेरे बादशाह का हुक्म तेरे लिये है जिस वक़्त मेरे बादशाह ख़ुदाए बर्तर बुज़ुर्ग है जलाल उसका और बेनज़ीर है उसकी ज़ात, का हुक्म मुझको होगा मैं चले जाउंगा। बन्दे का सफ़र और हज़र (जाना और रहना) ख़ुदा के हुक्म से है। क़ाज़ी ने कहा ऊलुल अम्र की इताअत लाज़िम है, इमाम अले० ने फ़र्माया कि तू उसको ऊलुलअम्र किस तरह कहता है, तू क़ाज़ी है और जानता है कि ऊलुल अम्र की शराइत क्या हैं, अगर तू ऊलुल अम्र की शराइत उसमें साबित करता है तो बन्दा चले जाता है। क़ाज़ी ने कहा ख़ुंदकार फ़र्मायें, फ़र्माया जामनंदा ज़ालिम है या आदिल उसने कहा ज़ालिम, फ़र्माया शरीअते मुस्तफ़ा सल्ला० की पैरवी करने वाला है या ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी करने वाला है तो कहा ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाला है बल्कि काफ़िरौं को कुफ़्र करने के

लिये क़ुव्वत देता है, फ़र्माया तू उसको क्योंकर ऊलुलअम्र कहता है। क़ाज़ी अली ने कहा अगर कोइ शख़्स अपनी ज़मीन पर रहने नदे तो उसके साथ कोइ हुज्जत और हुक्म काम नहीं देता है। इमाम अले० ने फ़र्माया सिंध के लिये सिंध का बादशाह है और गुजरात के लिये गुजरात का बादशाह है इसी तरह हरएक ज़मीन के लिये एक बादशाह है पस तुम थोड़ी ज़मीन ऐसी बताओ कि वह ज़मीन ख़ुदा की है ताकि उस ज़मीन पर ख़ुदा के बन्दे ख़ुदा की बन्दगी में मश्ग़ुल रहें। उसके बाद क़ाज़ी ने कहा आप किसी की दस्तार लेना चाहते हो तो हज़रत महेदी अले० ने क़ाज़ी की दस्तार लेकर अपने घटुने पर रखकर फ़र्माया ऐ क़ाज़ी दस्तार लेना इसको कहते हैं इस तरह हमने किसकी दस्तार ली और यह भी फ़र्माया कि तेरे बादशाह को कहदे कि अपने तमाम लश्कर और शौकत के साथ आये इन्शाअल्लाहु तआला बन्दा एक ख़ुदा की मदद से तुझ पर ग़ालिब है और अल्लाह तआला ने यह शहर मुझको दिया है। जाम नंदा ने शहर में हुक्म दिया कि उन लोगौं को अनाज और ज़रुरी चीज़ें नदें। सहाबा रज़ी० ने हुकूमत की मुख़ालफ़त को हज़रत के हुज़ूर में अर्ज़ किया कि कोई शख़्स हमको सौदा नहीं देता है। इमाम अले० ने हुक्म फ़र्माया कि एक दुकान को तोड़ो और उस दुकान का सामान लाव। सहाबा रज़ी० ने ऐसा ही किया उसके बाद इमाम अले० ने मियाँ तय्यब और मियाँ मिस्कीन को बादशाह जाम नंदा के पास भेजकर कहलाया कि हम शर्अ मुहम्मदी से बाहर नहीं है, हमने तमाम अश्या का वज़न करके ख़र्च किया है उनकी क़ीमत उस दुकान का बक़्क़ाल नहीं लेता है तुम हाकिम हो लेलो, हाकिम के सामने उन अश्या की क़ीमत रखकर वापस हुए और इमाम अले० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। जाम नंदा ने अपने ग़ुलाम अय्यार या दिलशाद को हज़रत के पास भेजकर कहलाया कि फ़लाँ बाग़ बुहत कुशादा है और उसमें बड़ा हौज़ है वहाँ तशरीफ़

लेजायें ताकि बन्दा आप से मुलाक़ात करे। इमाम अले० ने फ़र्माया बेहतर है पस उस बाग़ में तश्रीफ़ लेगये और कश्ती में सवार हुवे। जाम नंदा ने दर पर्दा मल्लाहौं को हुक्म दिया था कि इमाम अले० को डुबोदें, डुबाने की बुहत कोशिश की लेकिन डुबा नसके। जब नदी के पार होगये तो महल में जाकर बेठ गये और इमाम अले० ने हुक्म दिया कि उस बाग़ को तोड़ो चुनांचे चंद बड़े झाड़ौं को काट दिये और फिर अपने मक़ाम में जाकर ठहर गये और इमाम अले० ने फ़र्माया कि ख़न्दक़ खोदो और ख़ारदार बाड़ नसब करो।

उसी ज़माने में मलिक गौहर कि सुल्ताने बंगाला का तोशकख़ाना उनके हवाले था जिस वक़्त वह हज की निय्यत से मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हुवे तो ढाइ सेर अकसीर आज़म अपने साथ रखे थे जब उनको रास्ते में हज़रत महेदी अले० की तश्रीफ़ आवरी की ख़बर मिली तो हज़रत की ख़िदमत में जाकर तरबियत हुवे और आपकी कीमिया ख़ासियत सुहबत में रहे। उस वक़्त मलिक गौहर रज़० ने अर्ज़ किया कि अगर ख़ुंदकार की इजाज़त हो तो मैं छे महीने के अर्से में बारा हज़ार सवार सामान और हथ्यार के साथ तय्यार करदूंगा। इमाम अले० ने फ़र्माया कहाँ से तय्यार करोगे, कहा बन्दे के पास अकसीर है, आप ने फ़र्माया कैसी अकसीर है लाओ, जब इमाम अले० ने अकसीर देखी तो फ़र्माया कि इस शख़्स को मारो और दायरे की हद से बाहर करदो क्योंकि बुत लिया हुवा बन्दे के पास रहता है लिहाज़ा मलिक गौहर रज़ी० को दायरे के बाहर करदिये। दायरे के बाहर मलिक तीन रात दिन आहो ज़ारी करते हुवे जंगल में पड़े रहे। मियाँ अबू मुहम्मद रज़ी० ने उनके इस हाल में कहा नमाज़ का वक़्त है अदा करना चाहिये। मलिक गौहर रज़ी० ने कहा ख़ुदावंदे नमाज़ की दर्गाह से मर्दूद होगया हूँ किसकी नमाज़ पढ़ू। मियाँ अबू मुहम्मद रज़ी० ने इमाम अले० के हुज़ूर में यह

माज़्रा अर्ज़ किया तो फ़र्माया अगर आना चाहता है तो अकसीर को बावली में डालकर आये। उसी वक़्त मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने अकसीर को बावली में डालदिया मगर जौ के दाने के बराबर अकसीर बावली के पत्थर पर गिरी थी उसको मियाँ सलामुल्लाह रज़ी० ने उठाकर हज़रत की इत्तिला के बग़ैर हज़रत का पानी का लोटा गरम करके उसपर डाला तो ताँबे का लोटा ज़रे सुर्ख़ होगया उसको हज़रत अले० के हुज़ूर मे लेजाकर अर्ज़ किया मीराँजी अकसीर ऐसी थी। इमाम अले० ने फ़र्माया मुझे मालूम था कि अकसीर ख़ालिस है लेकिन मलिक गौहर की ख़ुदा तलबी के इम्तेहान के लिये बावली में डाली गयी उसके बाद लोटे को बेचकर सवीयत कर दिये और सहाबा रज़ी० सौदा ख़रीदने के लिये बाज़ार चले गये। जब इमाम अले० असर की नमाज़ के लिये बाहर तश्रीफ़ लाये तो देखा कि थोड़े असहाब मौजूद हैं तो फ़र्माया ऐ मियाँ सय्यद सलामुल्लाह थोड़ी अकसरी थी उसकी वज्ह से सहाबा बन्दए ख़ुदा की नज़र, सुहबत, नमाज़ और बयाने क़ुरआन से बाज़ रहे अगर वह सब अकसीर रहती तो उनका अहवाल क्या होता।

उसके बाद शेख़ सदरुद्दीन इमाम अले० की मुलाक़ात के लिये आये। वाक़ेआ यह है कि एक रोज़ उस्तादे शरीअत शेख़ सदरुद्दीन मद्रसए उलूम में बैठे हुवे थे कि एक मर्द शेख़ के सामने आकर कहा कि महेदी मौऊद आया है कुछ तु ख़बर रखता है जा तस्दीक़ कर वर्ना काफ़िर रहेगा शेख़ का हाथ पकड़ कर रवाना हुआ और यकायक वह मर्द ग़ायब होगया। शेख़ ने अपने दिल में ख़याल किया ऐसा न हो कि नफ़सानी वस्वसा दिल में पैदा हुवा हो या शैतानी फ़िक्र पहुंची हो। यकायक दरख़तौं और हर तरफ़ से आवाज़ आने लगी कि यह महेदी मौऊद है यह रहमान का ख़लीफ़ा है पस उस आवाज़ पर हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में जाकर तरबियत हुवे और ताहयात हज़रत की

सुहबत में रहे। उसके बाद एक मुतअल्लिम अपने लड़के को लिया हुवा हज़रत अले० के हुज़ूर में आकर अर्ज़ किया कि हमारे लड़के के हक़ में दुआ कीजिये। इमाम अले० ने फ़र्माया शेख़ सदरुद्दीन देखो तालीम पाया हुआ क्या कहता है। अगर अल्लाह तआला का हुक्म हो तो हम इनसे जज़या लें और अपनी शमशीर ऊपर उठाकर फ़र्माया कि अब (कलिमा गोयौं के साथ) यह बाक़ी रह गया है लेकिन बन्दा उस पर (जहादे असग़र पर) मामूर नहीं है (जहादे अकबर पर मामूर है)।

शहर ठट्टा में चौरयासी (८४) तन अल्लाह का दीदार रखने वाले हक़ से जामिले (वफ़ात पाये) उन सब को हज़रत अले० ने अल्लाह तआला की रज़ा से मूसा अले० और ईसा अले० के मक़ाम की बशारत फ़र्माइ और फिर फ़र्माया कि जब बन्दा उनको क़ब्र में रखता है तो उनकी पीठ को कुछ मिट्टी लगने पाती है या नहीं क़ब्ज़ए क़ुदरत से उठा लिये जाते हैं। फिर फ़र्माया जो हमारे हैं वह मिट्टी (क़ब्र) में पड़े रहने के लिये नहीं आये है बल्कि जो हमारे हैं वह आख़िरत के तालिब नहोंने (ख़ुदा के तालिब होंगे)।

उसके बाद हज़रत महेदी अले० ने बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुदंमीर रज़ी०, बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी०, मियाँ अब्दुला मजीद रज़ी०, मियाँ शेख़ मुहम्मद कबीर रज़ी० और मियाँ यूसुफ़ रज़ी० को अपने अपने घर वालौं को लाने के लिये गुजरात रवाना फ़र्माया। मियाँ लाड़ शह रज़ी० ने अर्ज़ किया कि मियाँ नेअमत रज़ी० का क़बीला बुहत है वापस आने नहीं देंगे, फ़र्माया कि मियाँ नेअमत रज़ी० मर्दे रब्बानी हैं हरगीज़ नहीं रहेंगे। बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० ने अर्ज़ किया कि बन्दा अपनी औरत का इख़यिार उसके हाथ में देकर आया है बन्दे को अपनी ख़िदमत से दूर नकरें, फ़र्माया जाव आने वालौं को लाओ। बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर

रज़ी० ने अर्ज़ किया मीराँजी बन्दे के लिये औरत बच्चे नहीं हैं किस लिये भेजते हैं फ़र्माया जाओ इसमें कुछ ख़ुदाए तआला का मक़सूद है। मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० को ख़त लिखकर शाह ख़ुंदमीर रज़ी० के हाथ में दिया था, हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया क्या लिखे हो पढ़ो, जब पढ़ने लगे कि वहाँ क्या बैठे हो बेगाने आकर बहरए बिलायत लेजारहे हैं तुम्हारे लिये इस ज़ात और मुहम्मद सल्ला० की विलायत के बहरा (फ़ैज़) से दूर रहना जाइज़ नहीं है। शहर ठट्टा में चौरयासी अशख़ास वफ़ात पाये उन सब के हक में इमाम अले० ने ऊलुलअज़्म पैग़म्बरौं के मक़ाम की बशारत दी है और यह भी फ़र्माया कि अल्लाह तआला आम दस्तर ख़्वान खोल दिया है और अपनी रहमत की नज़र से देख रहा है जो शख़्स मरता है मरने वाले की क्या ही नेक बख़ती है। उस ख़त को सुनकर इमाम अले० ने फ़र्माया कि इस ख़त को फाड़दो और दूसरा ख़त ऐसा लिखो कि सय्यद मुहम्मद चापानीर में है और मीराँ सय्यद महमूद ठट्टा में हैं तीन बार फ़र्माया। मियाँ सलामुल्लाह रज़ी० ने अर्ज़ किया मीराँजी हमारे ख़ुंदकार मीराँ हैं, फ़र्माया बन्दा मीराँ है तो मीराँ सय्यद महमूद अव्वल मीराँ हैं।

जब सहाबा रज़ी० गुजरात पहुंचे चंद रोज़ का अर्सा होचुका उनके जाने के बाद इमाम अले० ने जुमा के रोज़ पाक दामन ख़ातूनाने जन्नत औरतौं के मज्मे में वाज़ फ़र्माया कि जो कोइ अल्लाह की दी हुइ चीज़ से नहीं लेता है अगरचे वह तलब करता है नहीं पाता। इमाम अले० ने जब यह बात फ़र्माइ तो यकायक बीबी बोनजी रज़ी० ने खड़ी होकर अर्ज़ किया कि मैं अपनी ज़ात को ख़ुंदकार के हुज़ूर में ख़ुदा के लिये पेश करती हूँ। यह बी बी बन्यानी क़ौम से थीं और उनके पहले शौहर मलिक बख़्खन रज़ी० वफ़ात पाचुके थे। इमाम अले० ने फ़र्माया बेहतर है, फिर बीबी ने अर्ज़ किया

कि हज़रत महेदी अले० से अपने नान व नफ़क़ा का हक़ तलब नहीं करूंगी उसकी कोइ हाजत नहीं मगर इस बात की तमन्ना रखती हूँ कि महशर के दिन ख़ुंदकार की ज़ौजियत में उठाइ जाऊँ। हज़रत महेदी अले० ने मियाँ लाड़ रज़ी० और क़ाज़ी इबीबुल्लाह रज़ी० को तलब करके फ़र्माया तुम गवाह रहो कि बीबी बोन रज़ी० अपनी ज़ात को ख़ुदा के लिये बन्दे के हवाले की हैं। बीबी रज़ी० ने भी गवाहों के सामने इस बात का इक़रार किया और दोनों असहाब गवाह होकर वापस हुवे।

जब वह असहाब एक अरसे के बाद गुजरात से रवाना होने लेगे तो उस वक़्त सुल्तान महमूद बेग़ढ़ा की दोनों बहनें राजे सूँ और राजे मुरादी जो हज़रत महेदी अले० से तरबियत होचुकी थी और सुल्तान महमूद उनको क़ैद करने की वज्ह से हज़रत अले० के साथ न जासकीं, उनमें से राजे सूँ ने बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० के ज़रीए और राजे मुरादी ने बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० के ज़रीए ज़रे नक़्द, लिबास, हथियार, घोड़े और ऊंट हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में रवाना की थीं। रास्ते में मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने भी शाह ख़ुंदमीर रज़ी० और शाह नेअमत रज़ी० से मुलाक़ात की। आपकी मुलाक़ात का कारण यह था कि रात में मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० और बीबी कद बानो रज़ी० दोनों आराम फ़र्मा रहे थे कि हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० और हज़रत महेदी अले० दोनों ख़ातिमैन अले० ने मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० का हाथ पकड़ कर फ़र्माया कि उठो यह तुम्हारी जगह नहीं है, जब बेदार हुवे तो ख़ुद को घर के दरवाज़े पर खड़े हुवे पाया और रत्नी बाइ दाइ को कहा कि हमारी शमशीर और क़ुरआन लादो उनको लेकर दरवाज़े की देहलीज़ पर बैठ गये और बीबी को कहला भेजा कि तुम अपने बाप के घर जाव बन्दा हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में जाता

है तो बीबी रज़ी० ने अर्ज़ किया कि यह आजिज़ा भी हज़रत महेदी अले० के दीदार की तालिब है अपने साथ लेचलो। आप ने फ़र्माया कि मेरे पास सवारी का ख़र्च नहीं है, बीबी रज़ी० ने कहा मैं पाँव को चिंदियाँ बाँधकर चलूंगी। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने घोड़ौं, ऊंटौं वग़ैरा सामान को बेचकर क़र्ज़ और नौकरौं को तन्ख़ाह (वेतन) अदा कर दिया और बीबी रज़ी० की सवारी के लिये एक डोली लेकर रवाना हुवे और पाँच या छे मंज़िल पर हज़रत महेदी अले० के सहाबा रज़ी० से मिले।

बयान करते हैं कि पहले बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० आये फिर मिराँ सय्यद महमूद रज़ी० आये और फिर मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० आये। किसी ने शाह ख़ुंदमीर रज़ी० से कहा कि मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने फ़लाँ जगह क़ियाम फ़र्माया है तो उसी जगह पर गये। बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० के आने से पहले मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० को कहला भेजा था कि ख़ुदाए तआला ने हज़रत महेदी अले० के लिये तुम्हारे हाथ से कोइ चीज़ भेजा है उसमें से रास्ते के ख़र्चे के लिये बन्दे को रवाना करो क्योंकि आप उस रक़म में से अपने साथियौं को खिलाते हो। बयान किया जाता है कि बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० के हमराह चालीस अश्ख़ास थे और बाज़ कहते हैं कि साठ अश्ख़ास तारिके दुनिया तालिबे ख़ुदा होकर आप के हमराह होगयो थे। जवाब दिया कि बन्दे से अमानत में ख़ियानत नहोगी। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० बुहत रन्जीदा थे उसके बाद बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० आये और कहलाया कि बन्दा दर्वाज़े पर खड़ा है ख़िदमत में पहुंचावो। जवाब में फ़र्माया कि बन्दे को माफ़ करो जिस मक़ाम पर मियाँ नेअमत रज़ी० ठहरे हैं वहीं ठहरो। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० के आदमियौं से शाह ख़ुंदमीर रज़ी० को मालूम हुआ कि मीराँ रज़ी० बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० से रन्जीदा हुए हैं। उसके बाद शाह ख़ुंदमीर रज़ी०

ने बुलंद आवाज़ से कहा कि कोइ चीज़ ख़ुदाए तआला भेजा है और असर की नमाज़ का वक़्त भी क़रीब है सरफ़राज़ फ़र्मायें। यह सुनकर मीराँ रज़ी० बाहर आये और एक दूसरे से बग़लगीर होकर मुलाक़ात किये और जो सामान जानवरौं पर था उतारे और शाम की नमाज़ के बाद शाह ख़ुंदमीर रज़ी० ने सामान मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० के सामने रखा और कहा क्या ही अल्लाह तआला का फ़ज़ल इस क़ासिर (असमर्थ) पर हुआ कि मैं यह सामान गुजरात से फ़राह को कब लेजाता, इस मालो मताअ और इन तालिबाने ख़ुदा का वारिस इसी जगह पाया। उसके बाद मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने फ़र्माया कि इस सामान को उठाने के लिये हुक्म दो और जिस तरह ख़र्च करते आये हो उसी तरह ख़र्च करते हुवे चलो। शाह ख़ंदमीर रज़ी० ने कहा कि ख़ुंदकार इस सामान को ख़र्च करके शाहे ज़माँ (हज़रत महेदी अले०) की ख़िदमत में पहुंचें और अगर यह सामान ख़त्म होजाये तो बन्दा हाज़िर है बन्दे को फ़रोख़्त करके हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में जायें। इस तरह निहायत उम्दगी से ख़िदमत की हद अदा करके हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में पहुंचे। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने फ़राह पहुंचने से पहले मियाँ शेख़ मुहम्मद कबीर रज़ी० को ख़ुशख़बरी सुनाने के लिये हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में रवाना किया। जब मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० के आने की ख़बर हज़रत महेदी अले० को पहुंची तो वह दिन बीबी बोनजी रज़ी० की बारी का था, हज़रत महेदी अले० को बुहत मसरूर (प्रसन्न) देखकर बीबी रज़ी० ने पूछा कि मीराँ को फ़र्ज़न्द के आने से ख़ुशी होती है, इमाम अले० ने फ़र्माया हाँ बेटा बेटा होकर आता है क्यों ख़ुशी न हो। मुलाक़ात के बाद हज़रत महेदी अले० ने यह बैत पढ़ी।

दोस्त की ख़ातिर तमाम आलम से मुनक़ताअ होजाना चाहिये
हाँ दोस्त की ख़ातिर दो आलम से मुनक़ताअ होसकते हैं।

उसके बाद मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने अर्ज़ किया मीराँजी अगर मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० रास्ते में मुलाक़ात न करते और हमराह नहोते तो बन्दा रास्ते में हलाक होजाता और मियाँ नेअमत रज़ी० ने बन्दे से ऐसी बेमुख्वती की। इमाम अले० ने फ़र्माया तअज्जुब की बात क्या है तुम और मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर हक़ीक़ी भाइ हो और मियाँ नेअमत रज़ी० ने उन अश्ख़ास को जो अल्लाह की रहमत के लायक़ थे लाया है और भय्या के साथ ऐसा किये, अवाम की रस्म जो हकते हैं क्या उसके आबा की मीरास है नहीं जाने। बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० इस वज्ह से रन्जीदा होकर जंगल की मस्जिद में चले गये। हज़रत महेदी अले० तश्रीफ़ लेजाकर मियाँ नेअमत रज़ी० का हाथ पकड़ कर लाये और उस वक़्त यह बात फ़र्माइ - तू मुझे चाहे या ना चाहे मैं तुझे चाहता हूँ।

जब नगर ठट्टा से निकले उस वक़्त इमाम अले० ने फ़र्माया कि सिंधी नापसन्दी। दर्या ख़ाँ अपने लश्कर को लिया हुआ इमाम अले० के हमराह होगया तो फ़र्माया ऐ दर्या ख़ाँ वापस होजावो। कहा कि मैं क़ंधार की सरहद तक आऊंगा क्योंकि रास्ता वीरान है। नौ मील साथ आया उसके बाद इमाम अले० ने कोशिश करके वापस किया। चार मंज़िल के बाद मियाँ वली रज़ी० पीछे रह गये थे उस शहर का देसमुख उनको तलब करके पूछा कि यह बड़ा लशकर किसका है और कहाँ जाता है। मियाँ वली रज़ी० ने कहा फ़ुक़रा की जमाअत है उसका हाकिम महेदी मौऊद अले० है। कहा तू झूट कहता है क्योंकि इतने क़वी हैकल (शक्तिशाली आकार वाले) तवाना (बलवान) हाथी बे सामान फ़क़ीरौं के पास कैसे रहते। मियाँ वली रज़ी० ने देसमुख की बातें हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में अर्ज़ की। इमाम अले० ने फ़र्माया हाँ ऐसी ही है चुनांचे

हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० के लिये पाँच हज़ार मलायक निशान वाले मुलाज़िम थे उसी तरह बन्दे के पास मुलाज़िम हैं।

जब आगे बढ़े तो रास्ते में ताजिरौं की जमाअत से चंद अश्ख़ास डरे हुवे हैरान और चहरे का रंग उड़ा हुआ आगे पीछे देखते हुवे दौड़ते आरहे थे। जब उन्होंने हज़रत महेदी अले० को देखा तो उनकी चाल धीमी हुवी और फ़र्याद करने लगे कि ख़ुंदकार इस रास्ते से न जायें क्योंकि हम चालीस आदमी थे जिनमें से सात ज़िन्दा हैं और अकसर अहबाब साँपौं के कारण हलाक होगये रास्ते के दरमियान वह साँप गोया रहज़न हैं। हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि इस वाक़िए (घटना) को कितने रोज़ हुवे, कहा कि यह वाक़िआ आज ही का है और यहाँ से आधे कोस के फ़ासले पर हुवा है। इमाम अले० ने फ़र्माया तुम बन्दे के साथ चलो तो वह साथ होगये, जब साँपौं के मक़ाम पर पहुंचे तो उसी जगह हज़रत महेदी अले० ने क़ियाम फ़र्माया और जिन अश्ख़ास को साँपौं के ज़हेर का असर हुआ था उन सबको अपना पसख़ुर्दा इनायत फ़र्माया। अल्लाह तआला ने उनका ज़हेर दफ़ा (निवारण) करदिया और तमाम लोग हुश्यार होगये और चालीस अश्ख़ास ने हज़रत महेदी अले० की तस्दीक़ करके तारिके दुनिया और तालिबे दीदारे ख़ुदा होकर हज़रत महेदी अले० की सुहबत इख़्तियार की। जब रात हुइ तो इमाम अले० ने फ़र्माया कि आजकी रात नौबत (बारी बारी से अल्लाह के ज़िक्र में बैठना) माफ़ है तमाम लोग सोजावो। जब आधी रात हुइ तो साँपौं का बादशाह हाज़िर होकर हज़रत अले० से अर्ज़ किया कि अगर हुक्म हो तो रास्ता छोड़देते हैं फ़र्माया बेहतर है रास्ता चलने वालौं को तकलीफ़ न पहुंचे। साँपौं के बादशाह ने हुक्म दिया कि उन साँपौं को हाज़िर करो जिन्होंने उन लोगौं को रन्जीदा किया है, उसी वक़्त हाज़िर होगये तो

हुक्म दिया कि उनको टुकड़े टुकड़े करदो फ़ौरन टुकड़े टुकड़े कर दिये। जब सुब्ह हुइ तो सब अश्ख़ास सलामती के साथ हज़रत महेदी अले० के हमराह रवाना हुवे और क़ंधार पहुंचे।

क़ंधार का हाकिम मीर ज़ुन्नून का बेटा शह बेग (अरग़ोन) था जो बीस साल की उम्र में शराबी और लापर्वाह था। किसी ने कहा मीराँजी यह ख़ुरासानी बड़े ज़ालिम हैं और हम हिन्दी हैं, दर असल आपस में एक दूसरे से हिन्दी बात और दीनी गुफ़्तगू नहीं कर सकते। अगर मसलेहत समझी जाये तो चंद रोज़ अपना दाअवा पोशीदा रखें और जिस वक़्त आपस में एक दूसरे की गुफ़्तगू समझने लगें और वह लोग हमारी तरफ़ कुछ माइल होजायें तो आप अपना दाअवा ज़ाहिर फ़र्मायें। इमाम अले० ने फ़र्माया अगर महेदियत का दाअवा तुम्हारी क़ुव्वत के सबब् से किया गया होगा तो मसलेहत से काम लिया जायेगा और अगर अल्लाह तआला की क़ुव्वत से दाअवए महेदियत किया गया है तो इन्शा अल्लाहु तआला मालूम होजायेगा।

क़ंधार में हज़रत महेदी अले० के मुतअल्लिक़ ख़बरें बुहत फैल गयीं कि एक सय्यद हिन्द से आया है और महेदियत का दाअवा करता है और अपने दाअवे पर कलामुल्लाह को गवाह लाया है और अपनी ज़ात के इन्कार को क़ुफ़्र कहता है। उसके बाद तमाम उलमा ने जमा होकर क़ंधार की जामे मस्जिद में हज़रत महेदी अले० को तलब किया। हज़रत महेदी अले० भी नमाज़े जुमा के लिये तय्यारी कर रहे थे। उलमा के लोगौं ने आकर कहा कि आइये फ़र्माया आता हूँ दूसरे बार बुहत से लोगौं ने जमा होकर आकर कहा जल्द आइये फ़र्माया कि लोग वुज़ू कर रहे हैं आता हूँ फिर तीसरे बार भी बुहत से लोग जमा होकर आये और हज़रत अले० के कमर बंद मुबारक का दामन पकड़कर कहा कब आते हो

किस लिये जल्द नहीं आते। उसके बाद हज़रत महेदी अले० खड़े होकर चंद क़दम बरहना पैर तश्रीफ़ लेजाते थे उस वक़्त किसी ने कहा हज़रत की नाल (जूते) लावो तो फ़र्माया तअल्लुक़ नहीं है बन्दा हज़ार मील ख़ुदा के लिये बरहना पैर जायेगा। हज़रत के हमराह जो सहाबा रज़ी० थे उनको मना किया, सहाबा नहीं रुके दस्त दराज़ी शुरु की बन्दगी मियाँ दिलावर रज़ी० पर लकड़ी चलाइ उस वक़्त हज़रत अले० का रुख़े अन्वर कुछ भी नहीं बदला पस जब इमाम अले० जामे मस्जिद पहुंचे तो आपने किसी की तरफ़ तवज्जह नहीं की। उलमा गालियाँ देने लगे लेकिन आप अले० कामिल हिल्म (शील) और बेनियाज़ी (बेपरवाही) से काम लेकर पहली सफ़ में बैठ गये। थोड़ी देर के बाद शह बेग नशा की हालत में शराब के बोतल साथ लेकर आया उस वक़्त किसी ने हज़रत महेदी अले० से अर्ज़ किया कि शह बेग आता है शराब पिया हुआ लापरवाह और बुहत शरीर है। इमाम अले० ने फ़र्माया ख़ामोश रहो और आने दो दुनिया की मस्ती रखने वाले बन्दे के पास आकर हुश्यार होजाते हैं यह तो पेशाब की मस्ती है कबतक रहेगी। जब शह बेग आया तो हज़रत महेदी अले० के सामने एक जगह बैठ गया और जो लोग ज़बान दराज़ी के साथ शोर कर रहे थे उनको मना करके बल्कि झिड़की देकर कहा ख़ामोश रहो एक बार मैं भी तो सुनूं कि सय्यद क्या कहता है उसके बाद जो कुछ चाहूंगा करूंगा। जब सब लोग ख़ामोश होगये तो हज़रत महेदी अले० ने क़ुरआन का बयान शुरू फ़र्माया, तीन आयतौं का बयान फ़र्माया तो बयान सुनते ही शह बेग का हाल ऐसा होगया गोया कि नीम बिस्मिल (आधा घायल) कबूतर और रोता हुआ अर्ज़ किया ऐ सरदार मुझसे ख़ता हुइ ख़ुदा की क़सम मैं ऐसा नहीं जानता था अगर जानता तो बसरो चश्म ख़िदमत में हाज़िर होता और जो गुस्ताख़ी की गइ नकरता उसके बाद खड़े होकर अर्ज़ किया कि मैंने बुहत गुस्ताख़ी की

माफ़ फ़र्मायें उसी तरह कमो बेश एक पहर (तीन घंटे) तकरार करता रहा और हज़रत महेदी अले० ने *अफ़मन् काना अला बय्यिनतिम् मिर् रब्बिही (हूद-१७)* (पस वह शख़्स जो अपने रब् की तरफ़ से बय्यिना पर हो) के पूरे रुकूअ का बयान होने तक शह बेग की तरफ़ तवज्जह नहीं की। उसके बाद हज़रत अले० खड़े होकर रवाना हुवे शह बेग आप अले० का हाथ पकड़ कर अपने हाथ पर रखा हुआ हज़रत अले० के मकान तक आकर क़दमबोसी करके वापस हुआ और मेहमानी के लिये सोना चाँदी और ख़ुश्को तर मेवा भेचा जो इमाम अले० ने क़ुबूल फ़र्माया जब तीन रोज़ होगये तो क़ुबूल नहीं फ़र्माया। शह बेग ने ख़ुद आकर बुहत कोशिश की लेकिन आप ने फ़र्माया कि तीन रोज़ की ज़ियाफ़त क़ुबूल करना सुन्नते मुस्तफ़ा सल्ला० है मैं भी तीन रोज़ से ज़्यादा नहीं लूंगा। हज़रत महेदी अले० दो हफ़्ते क़ंधार में क़ियाम फ़र्माकर रवाना हुवे और शहबेग भी हज़रत महेदी अले० के घोड़े की फ़ित्राक (जीन का तसमा) पकड़ा हुआ तीन कोस तक हज़रत के साथ रहा, हज़रत ने फ़र्माया कि वापस होजावो तो अर्ज़ किया मुझको मुरीद कीजिये तब हज़रत अले० ने एक झाड़ के साये के नीचे आकर उसको तल्क़ीन फ़र्माइ इसके बाद शह बेग वहाँ से वापस होगया।

क़ंधार से उस काशिफ़ुल कुरुब वल असरार अले० के हमराह जो महाजिरीन रज़ी० रवाना हुए उनके नाम यह हैं: मियाँ मुहम्मद काशानी, मियाँ अश्रफ़ हाँसवी, मियाँ लालन ख़ुरासानी, मियाँ हाजी मुहम्मद अहमदाबादी, मियाँ अब्दुल्लाह, मियाँ अब्दुल हाशिम, मियाँ अब्दुल क़ादिर, मियाँ कबीर ख़ाँ, मियाँ शरीफ़ मुहम्मद, मियाँ कमाल ख़ाँ और मियाँ चालाक। जब हज़रत महेदी अले० फ़राह को पहुंचे तो आपके फ़ैज़ की ख़बर फैल गयी कि एक सय्यद औलादे हुसेन रज़ी० से आकर दाअवए महेदियत करता है कि मैं महेदी मौऊद ख़लीफ़तुर रहमान हूँ तमाम

ख़लायक़ पर मेरी तस्दीक़ फ़र्ज़ है हमारी तस्दीक़ करने वाला मोमिन है और हमारा इन्कार करने वाला काफ़िर है यह कहता है। शहर के क़ाज़ी ने कोतवाल को कहलाया कि तू लोगौं के हुजूम के साथ जा और जो सय्यद महेदियत का दाअवा करता है उसको छोटे बड़ौं सबके साथ गिरफ़तार करके ला। कोतवाल ने अपने लोगौं को भेजा उस वक़्त हज़रत अले० अपने सहाबा रज़ी० के साथ हुज्रौं के बाहर ख़ुदा के ज़िक्र में बैठे थे, असहाब और महाजिरीन रज़ी० ने जंग की इजाज़त तलब की। इमाम अले० ने फ़र्माया कि बन्दा हज़रत रब्बुल इज़्ज़त के फ़र्मान का ताबे है अपनी फ़िक्र या किसी की मसलेहत का ताबे नहीं है सब्र करो। उसके बाद कोतवाल के लोग फ़क़ीर मरदौं और औरतौं का तमाम सामान यहाँ तक की औरतौं की ओढ़नियाँ लेकर हज़रत अले० के हुज़ूर में आये और शमशीरौं को तलब किया, हज़रत अले० ने पहले अपनी शमशीर उन लोगौं के सामने रखदी और सहाबा रज़ी० ने भी आप अले० की पैरवी की (अपनी अपनी शमशीरें देदी)। सर्वर ख़ाँ सरदानी हाकिम और अमीरे क़िला था और मीर ज़ुन्नून अमीरे क़स्बा था। सर्वर ख़ाँ ने आधी रात में ख़्वाब देखा कि हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० नेज़ा टेक कर सरहाने खड़े हैं और फ़र्माते हैं कि तेरी सल्तनत में मेरे फ़र्ज़न्द पर जो मेरी बिलायत का मालिक है ऐसा ज़ुल्म हुआ है तो उसने ख़ौफ़ और हैबत से जवाब दिया कि मैं नहीं जानता सवेरे तहक़ीक़ करुंगा। उसके बाद पेट के दर्द से आजिज़ होकर हुश्यार हुआ और कोतवाल को तलब करके कहा कि तूने क्या काम किया है कि मैंने ऐसा ख़्वाब देखा और पेट के दर्द से परेशान हूँ। कोतवाल (मुख्य पुलिस अधिकारी) ने पूरी कैफ़ियत बयान की और क़ाज़ी को क़ैद करके हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में कहलाया कि आप जो कुछ हुक्म फ़र्मायें क़ाज़ी पर जारी करता हूँ इसके अलावा बाज़ मुन्सिफ़ उलमा को मआफ़ी चाहने और दाअवे की

तहक़ीक़ के लिये हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में भेजकर कहलाया कि आप तलफ़ शुदा (नष्ट किया गया) सामान की फ़ेहरिस्त दें तो मैं दोगुना सामान हाज़िर करदेता हूँ। उलमा ने हज़रत अले० की ख़िदमत में जाकर बुहत मआफ़ी चाही और तलफ़ शुदा सामान के ज़ाहिर करने के लिये अर्ज़ किया तो इमाम अले० ने फ़र्माया हमारी मिल्क (संपत्ति) से कोइ चीज़ तलफ़ नहीं हुवी हम ख़ुदा के सिवाय कोइ चीज़ नहीं रखते मेरा ख़ुदा मुझ से तलफ़ नहीं हुआ। उसके बाद उलमा ने चंद इल्मी सवालात किये जिनका हज़रत ने जवाब दिया तो उलमा महज़ूज़ (आनंदित) होकर वापस हुवे।

इमाम अले० और उलमा के दरमियान जो कुछ गुफ़्तगू हुवी उसके मुतअल्लिक़ उनमें जो बड़ा फ़ाज़िल (विव्दान) था उसने कहा कि ऐ नवाब (सर्वर ख़ाँ) मेरा इल्म सय्यद के इल्म के सामने ऐसा है जैसा कि क़त्रा दर्या के सामने पस उन उलमा ने यह ख़बर रच में ज़ुन्नून को पहुंचाकर मश्वरा किया कि क्या करना चाहिये। मीर ज़ुन्नून ने कहा एक बार तलफ़ शुदा सामान भेज देना चाहिये उसके बाद मैं दब्दबा और जंग के सामान के साथ जाता हूँ, अगर कम हिम्मती से हमारी तरफ़ तवज्जा की तो झूटे हैं और अगर हम से लापर्वाही की और हम पर हैबत असर करे तो हम मुतवज्जह होंगे कि बेशक महेदी मौऊद है। उस हाकिम को मीर ज़ुन्नून ने जैसा कहा था वैसा ही किया। जब लश्कर के बाजौं की आवाज़ फ़ुक़रा की समाअत में आइ और दब्दबा के साथ हद से ज़्यादा ज़ुल्म और दस्त दराज़ी करता हुआ आया यहाँ तक कि किसी को चाबुक रसीद किया और किसी को तकलीफ़ दिया लेकिन हज़रत अले० की नज़रे मुबारक पड़ते ही यकबयक घोड़े से उतरकर हज़रत महेदी अले० के क़रीब बैठने का इरादा किया लेकिन किसी सहाबी ने ना तो उसकी तरफ़ तवज्जह की और ना उसको जगह दी उस वक़्त हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि जहाँ जगह मिले बैठ

जाओ वह उसी वक़्त ज़मीन पर बैठ गया। हज़रत महेदी अले० ने क़ुरआन का बयान शुरु फ़र्माया तो अदब के साथ बयान सुन्ने लगा । उसके बाद इमाम अले० ने फ़र्माया कि नज़्दीक आ फिर फ़र्माया कि ज़्यादा नज़्दीक आ। बुहत नज़्दीक आकर अर्ज़ किया अगर ख़ुंदकार लग़वी (शाब्दिक) महेदी हैं तो माअक़ूल (उचित) है अगर इस्तिलाही (पारिभाषक) महेदी हैं तो दलील दिखाना चाहिये। आप अले० ने फ़र्माया कि दलील दिखाना अल्लाह तआला का काम है और बन्दे का काम तब्लीग़ है। फिर मीर ज़ुन्नून ने कहा हदीस में आया है कि महेदी अले० पर शमशीर काम नहीं करेगी, इमाम अले० ने फ़र्माया शमशीर का काम काटने का है, पानी का काम हुबाने का है और आग का काम जलाने का है लेकिन महेदी पर कोइ क़ादिर नहोगा आज़मालो कहकर अपनी शमशीर उसके सामने रखदी। मीर ज़ुन्नून शमशीर लेकर उठा और हाथ ऊंचा किया उसका हाथ सीख़ होगया फिर दूसरे हाथ में शमशीर उठाया वह हाथ भी सीख़ होगया चहरा सब्ज़ होकर बेहोश होकर गिरा। हज़रत महेदी अले० ने उसका हाथ पकड़ कर हुश्यार किया इस तरह तीन बार हमला किया फिर अदब और तवाज़ो से हज़रत अले० के सामने शमशीर रखदी। उसके बाद एक अक़्लमंद वज़ीर ने जिसका नाम मौलाना नूर कूज़ागर था बुलंद आवाज़ से कहा कि अगर महेदी अले० का आना है तो बस यही ज़ात महेदी मौऊद अले० है वगरना महेदी हरगिज़ नहीं आयेगा मैं ने तस्दीक़ की। मीर ज़न्नून ने कहा मैं ने भी तस्दीक़ की और मैं इस महेदी का मुसद्दिक हूँ महेदी अले० का नौकर और नासिर हूँ और महेदी अले० का ग़ुलाम हूँ जहाँ तलवार चलाने की ज़रुरत होगी तलवार चलाऊंगा और महेदी अले० के मुख़ालिफ़ौं को क़त्ल करूंगा। हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि अपने नफ़्स पर तलवार चला कि गुमराही में न डाले महेदी और महेदवियौं का नासिर (सहायक) ख़ुदा है।

मीर ज़ुन्नून और मुल्लाह नूर कूज़ागर तरबियत हुवे और बुहत से अश्ख़ास तारिकाने दुनिया तालिबाने ख़ुदा होकर ख़ुदा के दीदार से मुशर्रफ़ हुवे और हज़रत महेदी अले० की सुहबत इख़तियार की।

फ़राह में हज़रत महेदी अले० का क़ियाम शहर के बाहर बाग़ में था। मीर ज़ुन्नून ने बुहत कोशिश की कि शहर में आजायें लेकिन मीराँ सय्यद महमूद, बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर, बन्दगी मियाँ नेअमत, मियाँ अब्दुल मजीद, मियाँ अबू मुहम्मद, मियाँ शेख़ मुहम्मद कबीर और मियाँ यूसुफ़ रज़ी अल्लाहु अन्हुम जो गुजरात गये थे उनके वापस होने तक इमाम अले० शहर में नहीं आये उनके आने के बाद शहर में आये और क़सबा र्च् में ज़रुरत के मुवाफ़िक़ दायरा बाँधा और चंद घर जो ख़ुदाए तआला ने दिया था उनमें इक़ामत फ़र्माइ। शहर फ़राह में दाख़िल होने के बाद आप अले० की हयाते मुबारक दो साल पाँच महीने हुवी।

हज़रत महेदी अले० ने मियाँ निज़ाम ग़ालिब रजी० को नगर ठट्टा से नहरवाला रवाना फ़र्माय था। उसका कारण यह था कि तीन ज़ईफ़ औरतौं ने इमाम अले० से अर्ज़ किया मीराँजी हमारी लड़कियाँ भी ख़ुदा की तलब बुहत रखती हैं और हमको कहला भेजी हैं कि अगर तुम आये तो हम भी हज़रत महेदी अले० की सुहबत से मुशर्रफ़ होते हैं, इमाम अले० ने फ़र्माया कि जाओ। उन औरतौं ने कहा कि एक भाइ को हमारे इमराह करदीजिये, इमाम अले० ने फ़र्माया किसको तुम्हारे हमराह करूँ, उन्होंने कहा मियाँ निज़ाम ग़ालिब रज़ी० को। मियाँ निज़ाम ग़ालिब यह बात सुनकर तमाम दिन ग़ायब रहे इस ख़याल से कि ऐसा नहो कि मुझको उनके हमराह करदें और मैं हज़रत की सुहबत से दूर होजाऊँ। जब मियाँ निज़ाम असर के वक़्त आये तो बयान के मौक़े पर इमाम अले० ने फ़र्माया कि बन्दगाने ख़ुदा भाग गये थे फिर आगये हैं। शाम की नमाज़

के बाद फ़र्माया मियाँ निज़ाम तुम जाओ इसमें कुझ ख़ुदा का मक़सूद है इस लिये उन औरतौं के हमराह नहरवाला गये। जब मियाँ निज़ाम ग़ालिब रज़ी० नहरवाला से वापस हुए तो नहरवाला का क़ाज़ी और ख़तीब दोनों हज़रत महेदी अले० की तस्दीक़ और तर्के दुनिया करके अपने अपने उहदौं (पद) को छोड़कर हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर होगये। जब फ़राह में इमाम अले० से उनकी मुलाक़ात हुइ तो फ़र्माया कि ऐसे अश्ख़ास को महेदी (हिदायत याफ़त) कहना चाहिये।

हाकिमे क़िला सर्वर खाँ के पेट में जब दर्द शुरु हुआ था तो हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में अर्ज़ करवाया कि मीराँजी बन्दे का क़ुसूर मआफ़ फ़र्मायें कि बुहत तकलीफ़ होरही है कुछ पसख़ुर्दा इनायत फ़र्मायें ताकि उसकी बरकत से सिहत पाऊँ। इमाम अले० ने फ़र्माया कि हम हकीम नहीं हैं कि कुछ दवाऔं को जानें उसके बाद बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० ने अर्ज़ किया कि ख़ुंदकार रहमतन लिलआलमीन हैं कुछ सत्तारी करें और अपना पस्खुर्दा इनायत फ़र्मायें। उसके बाद हज़रत अले० ने पानी का पसख़ुर्दा दिया पीते ही दर्द कम होगया। उसी वक़्त सर्वर ख़ाँ ख़िदमत में हाज़िर होकर तरबियत होकर वापस हुवा और मेहमानी के लिये बहुत से अशया रवाना किया तीन रोज़ के बाद इमाम अले० ने क़ुबूल नहीं फ़र्माया। जितने उलमा बिल्लाह महेदी मौऊद अले० की तस्दीक़ से मुशर्रफ़ हुए थे शहर हरयो (हिरात) में सुल्तान हुसेन शाहे ख़ुरासाँ के नाम पत्र लिखा कि हम सब ने एक साल तक हज़रत मीराँ सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० के दाअवए महेदियत के मुतअल्लिक़ बहस किया आख़िर कार हमने क़ुरआन और हदीस से साबित किया है कि यह ज़ात महेदी मौऊद हक़ है हमने तस्दीक़ करली। सुल्तान हुसेन ने चार उलमा यानि शेख़ अली फ़य्याज़, मुल्ला दुरवेश मुहम्मद ख़ुरासानी, हाजी मुहम्मद ख़ुरासानी और अब्दुस समद हमदानी को तलब करके कहा कि यह दाअवा बड़ा है अच्छी

तरह तहक़ीक़ करनी चाहिये अगर सच्चा साबित हो तो इताअत क़ुबूल करनी चाहिये। उलमा ने अर्ज़ किया कि हमको भी फ़िकर करनी चाहिये और ऐसी हुज्जत चाहिये कि मुनक़ताअ नहो। उसके बाद उन्हों ने दो महीने की मुहलत तलब की और कहा कि कुतुब ख़ाना हमारे हवाले किया जाये ताकि अच्छी तरह तहक़ीक़ करें और तहक़ीक़ के बाद चार सवाल अख़ज़ करके रवाना हुवे और आपस में इत्तिफ़ाक़ किया कि जिस वक़्त महेदी अले० से सवाल करें मुल्ला अली फ़य्याज़ के सिवाय दूसरा शख़्स बात न करे। जब हज़रत महेदी अले० की ख़िदमत में पहुंचे तो आप अले० ने क़ुरआन का बयान शुरु फ़र्माया और तीन आयतौं का बयान फ़र्माया। उलमा ने सवाल किया कि :

१) आप ख़ुद को महेदी मौऊद अले० कहलाते हो?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि बन्दा नहीं कहलाता है बल्कि फ़र्माने ख़ुदा होता है कि हमने तुझको महेदी मौऊद किया है और तू महेदी मौऊद आख़रुज़् ज़माँ है।

२) आप क्या मज़्मह रखते हो?

इमाम अले० ने फ़र्माया हमारा मज़्हब किताबुल्लाह और इत्तिबाए मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० है।

३) आप किस तफ़सीर से क़ुरआन का बयान करते हो?

इमाम अले० ने फ़र्माया कि बन्दा मुरादुल्लाह तफ़सीर बयान करता है जो तफ़सीर और उसके सिवाय जो बात इस बन्दे के बयान के मुवाफ़िक़ है वह सहीह है वर्ना ग़लत है।

४) आप ख़ुदा के दीदार का दाअवा करते हो और ख़ुदा को देखने के लिये मख़लूक़ को बुलाते हो?

इमाम अले० ने जो आयतें दीदार के जवाज़ में आइ हैं उनको इल्मी क़वायद से तत्बीक़ (अनुकूलता) देकर उन उलमा की ज़बान से दुनिया में ख़ुदा के देखने को साबित करदिया। फिर इमाम अले० ने फ़र्माया कि शर्अ में क़ाज़ी कितने गवाहौं पर राज़ी होता है। उलमा ने कहा दो गवाहौं पर राज़ी होता है। इमाम अले० ने फ़र्माया यह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० और यह इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अले० खड़े हैं पूछो और एक यह बन्दा भी गवाह है।

उसी वक़्त मौलाना अली ने जाज़िब होकर तस्दीक़ करली और कहा कि ख़ुदा की क़सम हमारे लिये यही एक गवाह काफ़ी है। दूसरे तीनों उलमा ने भी आमन्ना व मद्दक़ना कहना शुरु किया और तीन उलमा ने हज़रत महेदी अले० की सुहबत इख़्तियार की और मौलाना अबदुस समद को सुल्तान के पास रवाना किया और महेदी मौऊद अले० की तस्दीक़ करने की ख़बर सुलतान को पहुंचाइ। इस कैफ़ियत को सुन्ने के बाद सुल्तान हुसेन ने भी तस्दीक़ करके हज़रत अले० की ख़िदमत में जाने के लिये रवाना हुवा और ख़त लिखकर भेजा कि हुसेन ग़ुलाम को ख़ुद्दाम अपना समझें पहली मंज़िल से ख़त लिखा हूँ अगर हयात बाक़ी है तो ख़िदमत में हाज़िर हूंगा और हर मंज़िल से क़ासिद (संदेशवाहक) को आगे दौड़ाता था।इसी तरह तीन मंज़िल तक आया बुख़ार की हरारत से परेशान होगया चूंकि रास्ता दूर था चंद मंज़िल के बाद जान जानाँ के हवाले की (वफ़ात पाइ)। सुल्तान का जनाज़ा फ़राह में दिखाया गया तो इमाम महेदी मौऊद अले० ने सहाबा रज़ी० की जमाअत के साथ सुल्तान के जनाज़े की नमाज़ अदा फ़र्माइ।

एक रोज़ मलिक गौहर रज़ी० इमाम महेदी मौऊद अले० के साथ गरम पानी का लोटा लिये हुवे जंगल में जारहे थे उस जंगल में जितने

पहाड़ थे ख़ालिस सोना होगये और नदयौं की तमाम रेत जवाहर बेबहा बन गइ। इमाम अले० ने फ़र्माया ऐ मलिक गौहर अगर तुमको कोइ चीज़ दरकार है तो लेलो तो अर्ज़ किया ख़ुदा की क़सम मुझको कोइ चीज़ नहीं चाहिये, फिर (इमाम अले० ने) फ़र्माया एक मुटठी लेकर तमाम सहाबा रज़ी० को दिखावो और कहो कि जिस शख़्स को इस चीज़ की ज़रुरत है जायज़ है तो तमाम सहाबा रज़ी० ने जवाब दिया कि हमको इन जवाहरात की कोइ ज़रुरत नहीं है। मलिक गौहर रज़ी० ने इमाम अले० से अर्ज़ किया कि किसी सहाबी ने इन जवाहरात की तरफ़ तवज्जह नहीं की तो इमाम महेदी मौऊद आख़रुज़ ज़माँ ख़लीफ़तुर रहमान ख़ातिमे विलायते मुहम्मदिया सल्ला० ने फ़र्माया कि जो शख़्स ख़ुदा को चाहता है माल को नहीं चाहता और जो शख़्स माल को चाहता है ख़ुदा को नहीं चाहता, पस महेदी ज़मीन से माल निकालकर किसको देगा नादान लोग नहीं जानते, ज़मीन से माल निकालकर लोगौं को देकर गुमराह करना दज्जाल की सिफ़त है।(२)

एक रोज़ मियाँ अब्दुल वहाब पानी पती रज़ी० ने हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में ऐनुल क़ज़ात की तारीफ़ की कि हज़रत ईसा अले० मुर्दे को उठ अल्लाह के हुक्म से कहकर ज़िन्दा करते थे और ऐनुल क़ज़ात मेरे हुक्म से उठ कहकर ज़िन्दा करते थे तो इमाम अले० ने फ़र्माया कि ईसा अले० के दरमियान ख़ुदा के सिवाय कोइ चीज़ नहीं थी और ऐनुल क़ज़ात के दरमियान कुछ हस्ती की निशानी बाक़ी थी।

(२) हज़रत नवास बिन समआन रज़ी० फ़र्माते हैं रसूले ख़ुदा सल्ला० ने दज्जाल का ज़िकर करके फ़र्माया ''फिर एक क़ौम के पास जायेगा और उन्हें (अपनी तरफ़) बुलायेगा वह लोग उसका क़ौल रद् करदेंगे तो वह उनके पास से पलट जायेगा और वह लोगा क़हत ज़दा होजायेंगे उनके हाथ मे कुछ अपना माल नहोगा। फिर दज्जाल वीराने में जायेगा तो वीराने (निर्जन स्थान) से (ख़िताब करके) कहेगा अपने (दबे हुवे) ख़ज़ाने निकाल डाले चुनांचे तमाम ख़ज़ाने (ज़मीन से) निकलेंगे उसके पीछे लोग इस तरह चलेंगे जैसे शहेद की मक्खियौं के सरदार के पीछे मक्खियाँ चलती हैं'' (मिश्कात शरीफ़ हिस्सा चहारुम, क़ियामत से पहले की निशानियौं का बयान)।

एक रोज़ मियाँ अब्दुल्लाह बग़दादी ने अर्ज़ किया कि सुहरवरदी ख़ानवादे में नफ़्स की तसल्ली के लिये कुछ ज़र कमर में बाँधना चाहिये और ख़ाजगाने चिश्त के पास जो कुछ ख़ुदा देता है ऊसी रोज़ खाते और खिलादेते हैं कुछ बाक़ी रहजाता है तो ज़मीन में दफ़न करदेते हैं। इमाम अले० ने फ़र्माया दोनों का मक़सूद अच्छा है लेकिन दोनों के कलाम में हस्ती की बू आती है, कलामुल्लाह और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० की इत्तिबाअ से कुछ अदा नहीं किये इस लिये कि बुख़्ल (कंजूसी) और इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) दोनों ना जाइज़ हैं। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि *न फ़ुज़ूलख़र्ची करें और न तंगी करें (अलफ़ुरकान-६७)* दरवेशी का कमाल यह है कि ख़ुद को इस तरह ख़ुदा के हवाले करदें कि कुछ इख़तियार न रहे। जिस ज़माने में हज़रत महेदी अले० ने क़सबए रच में इक़ामत फ़र्माइ उस वक़्त यह नक़ल फ़र्माइ कि महेदी और महेदवियौं के लिये कोइ जगह और जाये पनाह और घर और उलफ़त का मक़ाम नहीं इन्शाअल्लाहु तआला जो हमारे हैं मुफ़लिस मरेंगे, महेदी और मेदवियाँ क़ियामत क़ायम होने तक रहेंगे।

हज़रत महेदी अले० बग़ैर तफ़रीतो इफ़रात के नमाज़े जुमा के लिये तश्रीफ़ लेजाते थे, एक रोज़ मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० हज़रत महेदी अले० के पीछे थे यकायक हज़रत के मोंढे के मुक़ाबिल आगये, हज़रत महेदी अले० ने मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० की तरफ़ नज़र करके फ़र्माया कि भाइ आगे बढ़ो या पीछे होजावो। चुनांचे नक़ल मश्हूर है कि हज़रत महेदी अले० ने जुमा की नमाज़ अदा करने के बाद वित्र की निय्यत बुलंद आवाज़ से करके वित्र की नमाज़ भी अदा फ़र्माइ। उस वक़्त उलमा के उस मज्मे में मौलाना गुल, मौलाना महमूद और मौलाना अबदुश्, शुकूर हाज़िर थे वह आपस में कहने लगे कि यह ज़ात महेदी मौऊद अले० हक़ है आयंदा जुमा को नही आयेगी। जब नमाज़ से फ़ारिग़

होचुके तो उन उलमा ने हज़रत से अर्ज़ किया कि ख़ुंदकार का नाम क्या है और ख़ुंदकार का जन्म दिन कौनसा है और ख़ुंदकार की रेहलत किस दिन होगी? इमाम अले० ने फ़र्माया बन्दे का नाम सय्यद मुहम्मद बिन सय्यद अब्दुल्लाह है और हमारी पैदाइश, दाअवत और रेहलत का दिन दोशम्बा (सोमवार) है। पस तमाम उलमा बैअत और तस्दीक़ करके हज़रत अले० के हमराह होगये। उसी रोज़ हज़रत अले० पर ज़हमत का असर ज़ाहिर होकर बुख़ार आगया वह रोज़ बीबी मलकान रज़ी० की बारी का था दूसरे दिन बीबी बोनजी रज़ी० की बारी की अदाइ के लिये रवाना हुवे और अपना हाथ मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० के हाथ पर रखे हुए तश्रीफ़ लेगये। बीबी रज़ी० ने अर्ज़ किया कि कुछ आश बनाकर लाती हूँ हज़रत तनावल फ़र्मायें। इमाम अले० ने फ़र्माया कि ग़ैरुल्लाह की क़ुव्वत को क़ुव्वत नहीं कहते, फिर फ़र्माया कि मुफ़लिस अल्लाह की अमान में है बन्दा कुछ नहीं रखता है मगर हज़रत अले० की साठ शमशीरें जो मुहाजिरीन रज़ी० को मुस्तआर दी गयी थी उनको वख़्श देने के लिये इशारा फ़र्माया। जब बीबी मलकान रज़ी० की बारी का वक़्त आया तो फ़र्माया कि हमको बीबी मलकान रज़ी० के घर लेचलो। सहाबा रज़ी० एक दूसरे को देखने लगे कि हज़रत अले० इस वक़्त बुहत माअज़ूर हैं अगर इसी जगह रहें तो बेहतर है फिर इमाम अले० ने हुक्म किया तो सहाबा रज़ी० ने तअम्मुल (संकोच) किया चूंकि बीबी मलकान रज़ी० भी वहीं हाज़िर थी अर्ज़ की कि मेरे घर में बिस्तर ज़मीन पर है और यहाँ तख़्त है लिहाज़ा मीराँ अले० इसी जगह रहें, आप ने फ़र्माया कि तुम्हारा हक़ है बीबी ने अर्ज़ किया मैं अपना हक़ बख़्शी। इमाम अले० ने फ़र्माया अगर ख़ुदा न बख़्शे, उसके बाद झट से खड़े होगये, सहाबा रज़ी० चार पाइ पर बिठाकर बीबी मलकान रज़ी० के घर लेगये। हज़रत अले० ने आराम लेकर फ़र्माया कि हम अम्बिया की

जमाअत से हैं न हम किसी के वारिस हैं और न कोइ हमारा वारिस है। पस पीर के रोज़ पहर दिन चढ़े १९ ज़ीक़ादा ९१० हिज्री को अपने हबीब को अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि ऐ मेरे बन्दे मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जह हूँ और तुझ पर दुरुद भेजता हूँ मेरे पास जल्दी आ ताकि मैं अपनी कुदरत के हाथ से तुझे शर्बत पिलाऊं और छोड़दे अपनी जान को मेरे ज़िक्र में और मेरे क़ुर्ब के आला मक़ाम पर आ पस झुकाया अपना सर अल्लाह तआला के हुक्म के सामने और जब मलकल् मौत ने रुहे मुतहहर क़ब्ज़ की तो अर्श, कुरसी, ज़मीन और आसमान और जो कुछ उनके दरमियान है लरज़ने लगे।

अहले फ़राह और रच के दरमियान इख़तिलाफ़ पैदा हुवा। अहले फ़राह ने कहा हमारा क़िला बड़ा है हम फ़राह को लेजायेंगे और अहले रच् ने कहा हमारी ज़मीन पर वासिले हक़ हुए हैं हम इसी जगह रखेंगे। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० को भेझकर कहलाया कि तुम लोग आपस में इगड़ा मत करो यह हमारी नेअमत है जहाँ हमको मन्ज़ूर हो हम वहाँ सोपेंगें तब वह लोग ख़ामूश होगये। जब हज़रत महेदी अले० को तय्यार करके पलंग पर रखे और उठाकर रवाना हुवे तो फ़राह और रच के दरमियान झाड़ौं और नहरौं वाली कुशादा ज़मीन थी जहाँ जनाज़ए मुबारक इस क़दर भारी होगया कि सहाबा रज़ी० उठा नसके। उसके बाद उसी जगह नीचे उतारकर वह ज़मीन जिसके क़ब्ज़े में थी उसको तलब करके कहा कि यह ज़मीन कितनी क़ीमत में देता है कि हम इसमें हज़रत अले० को सोंपते हैं। ज़मीन के मालकि ने वावैला करके कहा ख़ुदा की क़सम मैंने हज़रत महेदी अले० की तस्दक़ की है और यह ज़मीन अल्लाह दिया है क्या ही सआदत है इस ज़मीन की कि इस पर शाहे दोजहाँ को दफ़न करते हैं लिहाज़ा आप अले० को वहाँ दफ़न किया गया।

हज़रत महेदी अले० की वफ़ात के बाद मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने कामिल दस साल ख़िलाफ़त करके जान जानाँ के हवाले की। मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० की वफ़ात के बाद बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० ने दस साल हयात पाइ उसके बाद क़ातलू व क़ुतेलू का ज़ुहूर हुवा। बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० की वफ़ात के बाद हर दो ख़ुलफ़ाए राशिदीन यानि बन्दगी मियाँ नेअमत रज़ी० और बन्दगी मियाँ निज़ाम रज़ी० की हयात पाँच साल हुइ और इन दोनों ख़ुलफ़ा की रेहलत के बाद नौ साल बन्दगी मियाँ दिलावर रज़ी० की हयात हुइ। इन पाँचों ख़ुलफ़ाए राशिदीन के दौरे ख़िलाफ़त में हज़ारों तालिबाने हक़ और वासिलाने ज़ाते मुत्लक़ हुवे और उनमें का हर फ़र्द हिदायत करने वाल ख़ुदा को देखने वाला और मुर्शिदे अहले हक़ हुआ।

या अल्लाह मुझको इस जमाअते महेदविया में जिला और इस जमाअते महेदविया में मार और क़ियामत के दिन मेरा इश्र इस जमाअते महेदविया में कर कलिमए तय्यबा मुहम्मद सल्ला० और तस्दीक़े सय्यद मुहम्मद इमाम महेदी मौऊद अले० की हुर्मत और तेरी रहमत से ऐ रहम करने वालौं में बड़े रहम करने वाले।

* * * * *

हवाशी

जोनपूर : उत्तरप्रदेश का शहर है जो बनारस के उत्तर पच्छिम में वाक़े है। १३५९ में फ़ेरोज़शाह तुग़लक़ ने इस शहर की बुनियाद डाली और मुहम्मद बिन तुग़लक़ जूनाखाँ के नाम से जोनपूर नाम रखा। १३८८ में फ़ेरोज़ शाह ने मलिक सर्वर को यहाँ का गवर्नर नियुक्त किया। १३९३ में मलिक सर्वर ने ख़ुद मुख़तारी का एलान किया, वह और उसके मुतबन्ना (लेपालक) फ़र्ज़न्द मुबारक शाह ने शरक़ी सलतनत की बुनियाद डाली। शरक़ी दौर में जोनपूर राज्य एक बड़ी फ़ौजी ताक़त थी यहाँ तक कि सलतनते देहली को धमकाया जारहा था। हुसेन शाह शरक़ी के दौरे हुकूमत में देहली को फ़त्ह करने की कोशिश की गई लेकिन बहलूल लोधी ने तीन बार उसको शिकस्त दी। आख़र कार १४९३ में सिकन्दर लोधी ने शरक़ी हुकूमत का ख़ातिमा करदिया। शरक़ी दौर में जोनपूर शीराज़े हिदं कहलाता था। हज़रत महेदी अले० ने ८८७/१४८२ में जोनपूर से हिज्रत फ़र्माई।

सुल्तान हुसेन शरक़ी : सुल्तान महमूद शाह की वफ़ात के बाद उसकी पत्नी बीबी राजी ने १४५८ में अपने बेटे हुसेन शाह को तख़्त पर बिठाया। हुसेन शाह की पत्नी मलिका जहाँ सय्यद ख़ानदान के आख़री बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन आलम शाह की बेटी थी और उसी के उकसाने पर हुसेन शाह ने देहली को फ़त्ह करने की कोशिश की लेकिन बहलूत लोधी ने शिकस्त दी इस लिये हुसेन शाह जोनपूर से निकलकर दक्षिण बिहार और तिर्हट पर हुकूमत करता रहा। १४९४ में सिकन्दर लोधी ने शिकस्त देकर शरक़ी राज्य का ख़त्मा करदिया और हुसेन शाह बेंगाल के बादशाह अलाउद्दीन हुसेन शाह के पास चला गया। हुसेन शाह एक शक्तिमान बादशाह होने के अलावा महान संगीतज्ञ भी था। उसने संगीत मे ख़याल राग ईजाद किया और कई नये राग बनाया जैसे मलहार सयामा, गौड़ सयामा, भोपाल सयामा, हुसेनी या जोनपूरी असावन और जोनपूरी वसंत वग़ैरह। उसने गधंरवा का लक़ब इख़तियार किया।

दानापूर : दानापूरा बिहार में पटना के क़रीब है जो सोन नदी के किनारे वाक़े है और जोनपूर से १७० मील के फ़ासले पर है। उसको दीनापूर भी कहते हैं।

कालपी : उत्तरप्रदेश मे जालौन ज़िले का शहर है जा यमुना नदी के दायें किनारे पर है। ११९६ में क़ुतुबुद्दीन ऐबक ने क़ब्ज़ा किया। झाँसी से कानपूर रेलवे लाइन पर कालपी स्टेशन है इब्राहीम शाह शरक़ी ने कालपी पर क़ब्ज़ा करना चाहा। बहलूल लोधी के हाथों शरक़ी सलतनत के ज़वाल के बाद देहली सलतनत के तहत आगया। अब यह बुंदेलखन्ड का अहम शहर है। हज़रत महेदी अले० ८८८/१४८३ मे दानापूर से कालपी तश्रीफ़ लाये।

चांदेरी : मध्यप्रदेश के ज़िले अशोकनगर का शहर है। जेन मत का केंद्र था। अलबेरुनी ने १०३० में चंदेरी का ज़िकर किया है। १४३८ में मालवा के सुलतान महमूद ख़िलजी

ने क़ब्ज़ा किया १५२० में राना सांगा ने क़ब्ज़ा करलिया और उस से बाबर ने हासिल किया। १५४० में शेर शाह सूरी ने क़ब्ज़ा किया। हज़रत महेदी उलो० ८८९/१४८४ में कालपी से चंदेरी तश्रीफ़ लायें।

माण्डू/माँडौ : मध्याप्रदेश के पच्छिम में मालवा के ज़िले धार का शहर है। १३०४ ईसवी में देहली के मुस्लिम शासकौं ने माण्डू पर क़ब्ज़ा किया। मुहम्मद खिलजी ने खिलजी सलतनत स्थापित की और ३३ साल शासन के बाद १४६९ में ग़ियासुद्दीन ख़िलजी शासक बना और ३१ साल हुकूमत की जहाज़ महल उसी ने बनवाया था। ८० साल की उम्र में उनके पुत्र नासिरुद्दीन ने ज़हर देकर मार डाला। ८९२ हिज्री/१४८७ में हज़रत सय्यद मुहम्मद जोनपूरी महेदी मौऊद अले० माण्डू तश्रीफ़ लाये। ग़ियासुद्दीन जिसको उसके बेटे ने नज़रबंद कर दिया था कुछ लोगौं को भेजकर तहक़ीक़ करवाई और तस्दीक़ की और बुहत सा मालो ज़र भेजा जो इमाम अले० ने असी वक़्त तक़सीम करदिया। माण्डू के वज़ीर मियाँ अलाहदाद हमीद इमाम अले० के मुरीद होकर फ़राह मुबारक तक साथ रहे। माण्डू में ही हज़रत मुहम्मद सल्ला० के उर्स के मौक़े पर महेदी अले० के फ़र्ज़न्द मियाँ सय्यद अजमल रज़ी० का देहांत होगया।

दौलताबाद : महाराष्ट्र में औरंगाबाद से १६ क.म. के फ़ासले पर वाक़े है। इसका क़दीम नाम देवगिरी या देवगढ़ था। १३२७ में मुहम्मद बिन तुग़लक़ ने इसको अपनी राजधानी बनाकर देहली की तमाम आबादी को यहाँ मुन्तक़िल किया और इसका नाम दौलताबाद रखा। हिन्दू राजाओं के अलावा मलिक काफ़ूर, ख़िलजी, तुग़लक़, बहमनी, अहमदनगर के निज़ामशाही और मुग़ला सलातीन ने यहाँ हुकूमत की। कुछ अरसा मराठा शासन के बाद १७२४ - १९४८ तक हैदराबाद के आसफ़जाही बादशाहौं ने हुकूमत की। हज़रत महेदी अले० ८९२ हिज्री/१४८७ में दौलताबाद तश्रीफ़ लाये और हज़रत सय्यद मोमिन आरिफ़ रहे० की ज़ियारत की और अंगूठौं के बल चलते हुवे आगे बढ़े। यहाँ हज़रत बन्दगी मियाँ अमीन मुहम्मद रज़ी० हज़रत बन्दगी मियाँ शाह याक़ूब रज़ी० और हज़रत बन्दगी मियाँ शाह दिलावर रज़ी० के ख़लीफ़ा मियाँ वज़ीरुद्दीन रहे० के दायरे वाकें हैं। सड़क के बायें जानिब पन्नी पूरा में एक मस्जिद और महेदविया आबादी है।

अहमदनगर : महारष्ट्रा में औरंगाबाद से १२० क.म. और पूना से १२० क.म. के फ़ासले पर वाक़े है। अहमद निज़ाम शाह बहरी ने १४९४ में क़दीम शहर भिंगार के मक़ाम पर अहमद नगर की बुनियाद रखी। ८९५ हिज्री/१४९० ईसवी में हज़रत मीराँ सय्यद मुहम्मद जोनपूरी महेदी मौऊद अले० अहमद नगर तश्रीफ़ लाये तो अहमद निज़ामुल मुल्क आप का मुरीद हो गया। बादशाह को औलाद की इच्छा थी, इमाम महेदी अले० ने पान का पसख़ुर्दा अता फ़र्माया, अल्लाह तआला ने बादशाह को औलाद दी और बच्चे का नाम बुरहान निज़ाम शाह रखा गया। ९१४/१५०८ में अहमद निज़ामुल मुल्क़ की वफ़ात के बाद बुरहान निज़ाम शाह तख़्त पर बैठा और वह हज़रत शाह नेमत रज़ी० से तलक़ीन हुवा था और उसने अपनी बेटी बीबी रानी फ़ातिमा को इमाम अले० के पोत्रे बन्दगी मीराँजी के अक़्दे निकाह में दिया

था। अहमदनगर में महेदवी बड़े बड़े उहदौं पर फ़ायज़ थे। हज़रत शाह शरीफ़ मज्ज़ूब रहे० का मज़ार दर्गाह दायरा अहमदनगर में है जो हज़र शाह दिलावह रज़ी० के नवासे थे। हज़रत शाह शरीफ़ रहे० ने बाबाजी भोंसले के बेटे मालोजी को पान का पसख़ुर्दा दिया था तो उसको दो बेटे शाहजी और शरीफ़ जी पैदा हुवे और शाहजी का बेटा शीवाजी है। हज़रत शाह शरीफ़ रहे० का विसाल १०२५/१६१६ में हुवा। अहमद नगर में औरंगज़ेब ने क़ाज़ी अबू सईद को महेदवियौं के अक़ायद दरयाफ़्त करने का हुक्म दिया था उसकी तफ़सील किताब ''मुबाहसए आलमगीरी'' में मिलेगी। १६३६ में शाहजहाँ ने अहमदनगर फ़त्ह किया। १७५९ में मराठा पेशवा ने निज़ामे हैदराबाद से उसका क़ब्ज़ा हासिल किया आज़ादी से पहले अंगरेज़ौं ने जवाहरलाल नेहरू को अहमनगर के क़िले में क़ैद किया था जहाँ उन्होंने मश्हूर किताब ''भारत एक खोज'' लिखी।

बीदर : करनाटक राज्य का ज़िला है जो हैदराबाद से १२० क.म है। आजादी तक हैदराबाद राज्य में था। अलाउद्दीन हसन गंगू बहमन शाह ने बहमनी सलतनत की बुनियाद डाली और राजधानी को १४२५ में गुलबरगा से बीदर मुन्तक़िल किया और उसका नाम मुहम्मदाबाद रखा। १५१८ के बाद बहमनी सलतनत कमज़ोर पड़ गइ तो बरीद शाही हाकिम ने आज़ाद सलतनत क़ायम की। हज़रत महेदी अले० जब ८९८/१४९३ में बीदर तश्रीफ़ लाये तो उस वक़्त क़ासिम बरीद यहाँ का हाकिम था जो आपका मोतक़िद होगया। बीदर में कइ बुजुर्ग और उलमा आप के मुरीद होगये। यहाँ देढ़ साल आप मुक़ीम रहे और एक ख़ातून से अक़्द किया था। बीदर में आपका हुज्रा बरीद शाही मक़बिरौं के पीधे रेलवे लाइन के पास आज भी मौजूद है और यह खुली ज़मीन बीदर के कुंज नशीन ख़ानदान की थी। कहा जाता है कि इस ख़ानदान में आप के कपड़े वग़ैरह मौजूद हैं।

गुलबरगा : कर्नाटक राज्य के उत्तरीय भाग में है और हैदराबाद से २०० क.म. है। अलाउद्दीन हसन बहमनी ने १३४७ में गुलबरगा को अपनी राजधानी बनाया और उस शहर का नाम हसनाबाद रखा। सत्रहवीं सदी में औरंग ज़ेब ने दक्कन को फ़त्ह किया तो गुलबरगा मुग़ल सलतनत में रहा। १७२४-१९४८ तक हैदराबाद की आसफ़जाही हुकूमत के तहेत रहा। यहाँ हज़रत ख़ाजा बन्दा नवाज़ रहे० की दरगाह, क़िला और उसमे मौजूद मसजिद, गेख़ साहब का रौज़ा और बुहतसी इमारतें हैं। हज़रत महेदी अले० ८९९/१४९४ में यहा तश्रीफ़ लाये।

हज़रत शेख़ सिराजुद्दीन जुनेदी रहे० : असल नाम मख़दूम मुहम्मद रुकनुद्दीन इब्ने अबुल मुज़फ़्फ़र मुहम्मद सिराजुद्दीन लेकिन अपने वालिद माजिद के नाम से ही मश्हूर हुवे। जन्म ६७० हिज्री -गुलबरगा में आमद ७७०। विसाल ७८१ हिज्री - उमर (१११) साल। साहबे कश्फ़ो करामत बुज़ुर्ग। पीरो मुरशिद हज़रत मख़दूम सय्यद ख़ुंदमीर अलाउद्दीन जौहरी (वफ़ात ७३४ हिज्री दौलताबाद)। गुलबर्गा में पच्छिम की जानिब शेख़ साहब का रोजा मश्हूर ज़ियारतगाह है। दरगाह के अहाते में दूसरा गुम्बर हज़रत मख़दूम ख़ुंदमीर जुनेदी रहे० का है जो हज़रत के पोते शेख़ अबुल फ़ज़ल जुनेदी रहे० (वफ़ात ८४०) के पोते

हैं जो ८८७ में सज्जदा नशीन बने और ९३४ हिज्री में वफ़ात पाई। हज़रत सय्यद मुहम्मद जोनपूरी महेदी मौऊद अले० ८९९/१४९४ में गुलबरगा तश्रीफ़ लाये और हज़रत सय्यद मुहम्मद गोसूदराज़ रहे० के रोज़े से निकलकर हज़रत शेख़ सिराजुद्दीन जुनेदी रहे० के रोज़े को तश्रीफ़ लाये और एक कम्रे में रमज़ान का एतिकाफ़ फ़र्माया। महेदवी ज़ायरीन आज भी उस कम्रे में दुगाना नमाज़ अदा करते हैं। हज़र महेदी अले० ने शेख़ साहब के आला मरातिब की ख़बर दी है।

हज़रत सय्यद मुहम्मद गेसूराज़ : नाम सय्यद मुहम्मद हुसेनी लेकिन ख़ाजा बन्दा नवाज़ गेसूदराज़ के नाम में मश्हूर हैं। पिता का नाम हज़रत सय्यद यूसुफ़ शाह राजू क़त्ताल हुसेनी रहे०। जन्म ७२१ हिज्री/१३२१ देहली में, वफ़ात ८२५/१४२२ गुलबरगा, उमर १०१ साल हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी के मुरीद और ख़लीफ़ा थे। १३९७ में दौलताबा आये वहा से गुलबरगा तश्रीफ़ लाये उस वक़्त ताजुद्दीन फ़ेरोज़ शाह बहमनी की बादशाहत थी। कहा जाता है कि आप ने अरबी, फ़ारसी और उर्दू भाषा में १९५ किताबें लिखी हैं उनमें मश्हूर किताबें यह हैं - तफ़सीर मुल्तक़त (अरबी) , क़सीदा अमाली, हवाशी कश्शाफ़ शर्ह मशारिक़, शर्ह फ़िकह अकबर, शर्ह आदाबुल मुरीदीन, रिसाला सिरातुन् नबी, शर्ह फ़ुसूसुल हिकम, शर्ह अवारिफ़ वग़ैरह। आपके वालिद हज़रत शाह राजू क़त्ताल हुसेनी रहे० (१३३० ईसवी)। ने अपनी किताब ''तुहफ़तुन् नसाएह'' मे लिखा है कि इमाम महेदी मौऊद अले० ९०५ हिज्री मे आयेंगे, चुनांचे हज़रत सय्यद मुहम्मद जोनपूरी महेदी मौऊद अले० ने ९०५ में बड़ली में महेदियत का दाअवए मुअक्कद फ़र्माया था।

डाभोल : डाभोल या डाबूल महारष्ट्रा के ज़िला रतनागिरी में बन्दर गाही शहर है। पंदरहवीं और सोलहवीं सदी में बहमनी और बीजापूर के आदिलशाही शासन के तहत डाभोल एक धनवान व्यापार केंद्र था और चोल और गोवा के बीच में एक अहम बन्दरगाह था। तेरहवीं से पंदरहवीं सदी तक यह बहमनी सलतनत का हिस्सा था और उसका नाम मुस्तफ़ा आबाद था। यह जुनूबी कोनकन का महत्वपूर्ण बन्दरगाह था जहाँ से बुहीरए रुम, बहरे अहमर और ख़लीजे फ़ारस की बन्दरगाहों के ज़रीए तिजारत की जाती थी। १५०८ में पुर्तगालियौं ने इसपर हमला किया। १६५९ में बीजापूर की राजकुमारी आइशा बीबी ने बन्दरगाह के क़रीब एक शानदार मस्जिद बनवाई थी जो शाही मस्जिद कहलाती है। हज़रत महेदी अले० ९०१/१४९५ में डाभोल बन्दरगाह से हज् के लिये रवाना हुवे थे।

अदन् : अदन यमन की एक क़दीम बन्दरगाह है जो लाल समूद्र में भारत और योरुप के बीच समुद्रि मार्ग पर है।

शरीफ़े मक्का : ९०१ हिज्री/१४९६ में हज़रत महेदी अले० ने हज का फ़रीज़ा अदा किया। ९०१-९०७ बरकात बिन मुहम्मद अमीरे मक्का था।

दीव बन्दर : गुजरात में काठयावाड़ के दक्षिन में एक जज़ीरा है जहाँ बन्दरगाह भी है। पहले गुजरात का ही भाग था लेकिन बाद में १५३७ में पुर्तुगालियौं ने गुजरात के सुलतान को क़त्ल करके क़ब्ज़ा कर लिया। १९६१ में भारत सरकार ने गोवा, दमन और दीव पर दुबारा क़ब्ज़ा कर लिया। ९०१ में हज के बाद हज़रत महेदी अले० वापस आकर दीव बन्दर पहुंचे फिर वहाँ से खम्बात गये।

खम्बात : गुजरत के ज़िला आनंद में वाक़े शहर और बन्दरगाह है जो पहले एक अहम व्यापर केंद्र था। इसके नाम के बारे में कहा जाता है कि यह संस्कृत में खम्बावती यानि खम्बा (स्तम्भ) का शहर है। एक आम ख़याल यह है कि खम्बात दो शब्दौं का मिश्रण है यानि खम्भ और आयात। यह आयात और तिर्यात का बड़ा केन्द्र था। ९१५ में अरब पर्यटक अल मसऊदी और १२९३ में मारको पोलो यहाँ आया था। हज़रत महेदी अले० हज से वापस आकर ९०१/१४९६ में दिव बन्दर में उत्रे और वहाँ से जहाज़ के ज़रीये खम्बात आये जहाँ बुहत से बोहरौं ने आपकी तस्दीक़ की।

अहमदाबाद : सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी ने चौदहवीं सदी में गुजरात पर क़ब्ज़ा किया और पंदरहवीं सदी के आरंभ में वहाँ के गवर्नर ज़फ़र ख़ाँ मुज़फ़्फ़र ने देहली सतलनत से अलग होकर आज़ाद हुकूमत क़ायम की और मुज़फ़्फ़र शाह अव्वल का लक़व इख़तियार किया। उसके पोते सुलतान अहमद शाह ने १४११ ईसवी में अहमदाबाद बसाया। उसके बाद सुलतान महमूद बेग़ढ़ा ने ८६४-९१८ हिज्री/१४६०-१५१३ ईसवी गुजरात पर हुकूमत की। उसके बाद सुलतान मुज़फ़्फ़र सानी ९१८-९३२ हिज्री/१५१३-१५२७ ईसवी हुकूमत की। उसी के दौर में हज़रत बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० को शहीद किया गया। अहमदाबाद से पहले अन्हिलवाड़ा पटन गुजरात की राजधानी था। अहमदाबाद साबरमती नदी के किनारे वाक़े है। हज़रत महेदी अले० हज से वापस आने के बाद खम्बात से ९०२ हिज्री/ १४९७ में अहमदाबाद तश्रीफ़ लाये और ताज ख़ाँ सालार की मसजिद में क़ियाम फ़र्माया। यह मसजिद जमालपूर मुहल्ले में अब हैबत ख़ाँ के नाम से मश्हूर है। यहाँ हज़रत महेदी अले० ने ९०३ हिज्री में महेदियत का दूसरी बार दाअवा किया। अहमदाबाद में महेदवियौं के कइ दायरे रहे हैं। हज़रत महेदी अले० के पुत्र मियाँ सय्यद अली रज़ी० को ९३२ में ज़िन्दा भदर की दीवार में चुन दिया गया। अनेक सहाबा और दूसरे बुज़ुर्ग महेदवियौं को शहीद किया गया। फ़राह से वापस आकर सहाबा रज़ी० अहमदाबाद में ही दायरे क़ायम किये थे।

साँतेज : गुजरात में अहमदाबा से १८ क.म. फ़ासले पर है। हज़रत महेदी अले० अहमदाबाद से पटन जाते हुवे साँतेज में ठहरे जहाँ शाह नेमत रज़ी० ने आपकी तस्दीक़ की थी।

इब्ने अरबी : अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली बिन मुहम्मद बिन अल अरबी अल हातिमी अत् ताई मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी के नाम से मश्हूर हैं। जन्म ५६०/११६५ मृत्यु ६३८/१२४० दमिश्क़ (शाम)। बुहत से मुहद्दिसीन, शुयूख और असातिज़ा से शिक्षा पाई। आप को शेख़ुल

अकबर कहा जाता है। अपने दौर के बुहत बड़े सूफ़ी फ़लसफ़ी, शायर और अदीब/८०० किताबे उनसे मन्सूब हैं उनमें अहम और मश्हूर यह हैं अल फ़ुतूहातुल मक्कीया, फ़ुसूसुल हिकम, रुहुले क़ुदस, मशाहिदुल असरार, मिशकातुल अन्वार, अल फ़ना फ़िल मुशाहदा, रिसालतुल अन्वार, उन्क़ा मग़रिब (इसमे विलायत का अर्थ और ईसा और महेदी अले० पर ख़त्मे विलायत है) वग़ैरह हैं। हज़रत महेदी अले० ने इब्ने अरबी को पहेलावाने दीन फ़र्माया है।

सुलतान महमूद बेगढ़ा : सुलतान अबुल फ़त्ह नासिरुद्दीन महमूद शाह अव्वल, महमूद बेगढ़ा के नाम से मश्हूर था। १४५८-१५११ तक गुजरात पर हुकूमत की। गुजरात का श्रेष्ठ और धार्मिक बादशाह। १४८४ में पावागढ़ क़िला फ़त्ह किया और चापानीर को राजधानी बनाकर उसका नाम मुहम्मदाबाद रखा। यह नया शहर बनाने के लिये २३ साल लगे, यहाँ शानदार जामा मस्जिद भी बनाया। १४७९ में एक शहर मुस्तफ़ाआबाद बसाया जिसको अब जूनागढ़ कहते हैं। ६६ साल की उम्र में १५११ मे वफ़ात वाइ।

इमाम आज़म : अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित ८०/६९९ में कूफ़ा में पैदा हुवे। १५०/७६७ में बग़दाद में वफ़ात पाइ। फ़िक्ह में इमाम आज़म, मुज्तहिद, मुहद्दिस, ज़ाहिद। तसानीफ़ में मुसनद अबू हनीफ़ा और फ़िक्ह अकबर मश्हूर हैं।

नागौर : राजस्थान का शहर है जो जोधपूर और बिकानेर के बीच में है। कहा जाता है कि चौथी सदी क़ब्ल मसीह में यह शहर बसाया गया और महाभारत में भी इसका ज़िकर मिलता है। हज़रत महेदी अले० जालोर से ९०६/१५०१ में नागौर तश्रीफ़ लाये।

जैसलमेर : जैसलमेर राजस्थान के दक्षिण पश्चिम में थार रेगिस्तान के दक्षिण में है और जैपूर से ५७५ क.म. है। ११५६ में रावल जैसल ने बसाया था। जैसलमेर का क़िला बुहत बड़ा और मश्हूर है। हज़रत महेदी अले० नागौर से सिंध जाते हुवे ९०७/१५०१ में जैसलमेर तश्रीफ़ लाये जहाँ रानी भान मती से आप ने अक़्द किया। जैसल मेर ज़िला के पश्चिम में पाकिस्तान की सीमा है।

साबरमती नदी : साबरमती नदी उत्तर गुजरात की सब से बड़ी नदी है जो पच्छिम की जानिब बहती हुवी खम्बात खाड़ी में अरब सागर से मिलजाती है। यह नदी उदयपूर राजस्थान में अरावली पहाड़ियौं से निकलती है। गुजरात में अहमदाबाद और गाँधी नगर साबरमती नदी के किनारे वाक़े हैं।

ठट्टा : ठट्टा कराजी के पूरब में ९८ क.म. के फ़ासले पर वाक़े है जो सिंध की राजधानी था। इसकी सीमा गुजरात और अरब सागर से मिलती है। हज़रत महेदी अले० यहाँ ९०८ हिज्री/१५०२ में तश्रीफ़ लाये, जाम नंदा ने मुख़ालफ़त की लेकिन सेनापती दर्या खाँ ने तस्दीक़ की थी। उसके अलावा सिंध के कई बुज़ुर्ग उलमा ने भी तस्दीक़ की। सिंध पर कलहोड़ा ख़ानदान ने हुकूमत की जो महेदवी थे। आज भी सिंध के कइ शहरौं में महेदवी आबाद हैं।

जाम नन्दा : जाम निज़ामुद्दीन सानी इब्ने संनर सदरुद्दीन, जामनन्दा के नाम से मश्हूर था। जाम नन्दा का तअल्लुक़े सम्मा सलातीन से था जिन्हों ने सिंध, बुलोचिस्तान पंजाब पर १३३५ - १५२० हुकूमत की। सम्मा सलातीन ने जाम का लक़न इख़तियार किया जिसका अर्थ बादशाह या सुलतान था। जाम निज़मुद्दीन अव्वल का दौरे हुकूमत १३८९-१३९१ था जबकि जाम निज़ामुद्दीन दुव्वम यानि जाम नन्दा का शासन काल ८६६-९१४ हिज्री/१४६१-१५०८ था और यह एक शक्तिशाली बादशाह था। १४३९ में ठट्टा में पैदा हुवा और उसका मक़बरा नगर ठट्टा के क़रीब मकली में है। १४९० के बाद शाह बेग अरग़ोन की क़ियादत में क़ंधार से आकर मुग़ल सेना ने हमला किया था जिसको जाम नन्दा के सेनापती दर्या ख़ाँ ने शिकस्त दी थी।

ख़ुरासाँ : फ़ारसी भाषा में ख़ुरासाँ का अर्थ ''तुलूए आफ़ताब की ज़मीन'' है। यह एक क़दीम तारीख़ी और बड़ा इलाक़ा है। उस में हस्बे ज़ेल इलाक़े शामिल थे (१) मश्हद, नेशापूर, सब्ज़ावार, तूस (ईरान), (२) हिरात, बल्ख़, ग़ज़नी, काबुल (अफ़ग़ानिस्तान), (३) मर्व, नसा, अबरवाद, सन्जन (तुर्कमानिस्तान), (४) समर्क़ंद बुख़ारा (उज़बेकिस्तान), (५) ख़ोजंद पन्जाकंत (ताजकिस्तान)। तारीख़े इस्लाम में ख़ुरासाँ महत्वपूर्ण श्रेत्र रहा है और अहादीस में भी उसका ज़िकर मिलता है ख़ास तौर पर इमाम महेदी मौऊद अले० के ज़ुहूर से पहले ख़ुरासाँ से काली झंडियों वाली फ़ौज के निकलने का ज़िकर है। यहाँ बड़े बड़े उलमा और साइसंदाँ पैदा हुवे मसलन् बूअली सीना, अल फ़ाराबी, अल बेरुनी, उमर ख़य्याम, अल ख़्वारज़मी, अबू माअशर बलख़ी, अबू वफ़ा, नसीरुद्दीन तूसी, शर्फ़ुद्दीन तूसी, इमाम अहमद इब्न हम्बल, अबू हनीफ़ा, इमाम बुख़ारी, इमाम मुसलिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, नसाई, अल ग़ज़ाली, अल जुवेनी, अबू मन्सूर मातुरीदी, फ़ख़रुद्दीन राज़ी, शेख़ तूसी और ज़मख़शरी वग़ैरह।

सुलतान हुसेन मिरज़ा : हिरात में जन्म १४३८, पिता का नाम ग़ियासुद्दीन मन्सूर मिरज़ा जो अमीर तैमूर की औलाद से था। हुसेन मिरज़ा ने हिरात पर १४६९-१५०६ तक हुकूमत की। उस से पहले मिरज़ा अबुल क़ासिम बाबर और अबू सईद मिरज़ा ने वहाँ हुकूमत की थी। हुसेन मिरज़ा ने मर्व के सुलतान संजर मिरज़ा की बेटी बेक़ा सुल्तान बेगम से शादी की जिसको एक बेटा बदीउज़्ज़माँ मिरज़ा पैदा हुआ। अबू सईद मिरज़ा की मौत के बाद हुसेन मिरज़ा ख़ुरासाँ में दाख़िल हुआ और हिरात को घेर लिया, इस तरह १४६९ में वहाँ का बादशाह बन गया। हुसेन ने जब अपने बेटे नदीउज़्ज़माँ का अस्तराबाद से बलख़ तबादला किया तो बेटे ने बग़ावत करदी। हुसेन मिरज़ा ने १५०६ में वफ़ात पाइ। सुल्तान हुसेन मिरज़ा बाबर का रिश्तेदार था।

क़ंधार : अफ़ग़ानिस्तान का दूसरा बड़ा शहेर है। कहा जाता है कि सिकन्दरे आज़म ने ३३० क़ब्ल मसीह इसकी बुनियाद रखी। यहाँ महाराजा अशोख का कतबा भी मिला। ग्यारहवीं सदी में सुल्तान महमूद ग़ज़नवी ने क़ब्ज़ा किया उसके बाद ग़ौरी ख़ान्दान ने हुकूमत की। पंद्रहवीं सदी में अरग़ोन ख़ान्दान की हुकूम थी। हज़रत महेदी अले० ९०९/१५०४ में क़ंधार तश्रीफ़ लाये और यहाँ के हाकिम शह बेगा अरग़ोन ने आपकी तस्दीक़ की।

इदारे की प्रकाशित पुस्तकें

१) हक़ीक़ते तरके दुन्या (उर्दु)
- हज़रत मौलाना सैयद मीरांजी आबिद ख़ुंदमीरी

२) हक़ीक़ते ज़िक्र (उर्दु)
- हज़रत मौलाना सैयद मीरांजी आबिद ख़ुंदमीरी

३) अल - कुरआन वला महेदी (उर्दु)
- मौलाना अब्दुल हकीम तदबीर रहे०

४) रिसाला हज़्दह आयात (हिन्दी)
- मियाँ अब्दुल ग़फूर सजावंदी रहे०

५) ख़ुलासतुल कलाम (हिन्दी)
- मियाँ शेख़ अलाई रहे०

६) ख़साइसे हमाम महेदी अले० (हिन्दी)
- मियाँ अब्दुल मलिक सजावंदी रहे०

७) अक़ीदा शरीफ़ा, बाज़ल आयात, अल-मेआर (हिन्दी)
- हज़रत बन्दगी मियाँ सैयद ख़ुंदमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी०

८) मक्तूबे मुल्तानी (हिन्दी)
- हज़रत बन्दगी मियाँ सैयद ख़ुंदमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी०

९) मजालिसे ख़म्सा (हिन्दी)
- मियाँ शेख़ मुस्तफ़ा गुजराती रहे०

१०) चरग़े दीने नबवी (हिन्दी)
- हज़रत सय्यद पीर मुहम्मद रहे०

११) अक़ीदा शरीफ़ा, बाज़ल आयात, मक्तूबे मुल्तानी, अल-मेआर (हिन्दी)
- हज़रत बन्दगी मियाँ सैयद ख़ुंदमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी०